छत्तीसगढ़ भारती

कक्षा–6

सत्र 2021–22

DIKSHA एप कैसे डाउनलोड करें?

विकल्प 1 : अपने मोबाइल ब्राउज़र पर diksha.gov.in/app टाइप करें।
विकल्प 2 : Google Play Store में DIKSHA NCTE ढूंढ़े एवं डाउनलोड बटन पर tap करें।

DIKSHA

मोबाइल पर QR कोड का उपयोग कर डिजिटल विषय वस्तु कैसे प्राप्त करें ?

DIKSHA App को लॉच करे → App की समस्त अनुमति को स्वीकार करें → उपयोगकर्ता Profile का चयन करें।

1. पाठ्यपुस्तक में QR Code को Scan करने के लिए मोबाइल में QR Code tap करें।
2. मोबाईल को QR Code पर केन्द्रित करें।
3. सफल Scan के पश्चात् QR Code से लिंक की गई सूची उपलब्ध होगी।

डेस्कटॉप पर QR Code का उपयोग कर डिजिटल विषय–वस्तु तक कैसे पहुँचे ?

1. QR Code के नीचे 6 अंक का Alpha Numeric Code दिया गया है।

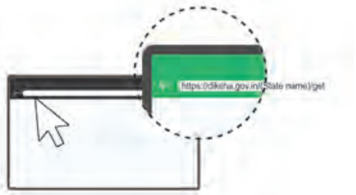

2. ब्राउज़र में diksha. gov.in/cg टाईप करें।

3. सर्च बार पर 6 डिजिट का QR CODE टाईप करें।

4. प्राप्त विषय–वस्तु की सूची से चाही गई विषय–वस्तु पर क्लिक करें।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

निःशुल्क वितरण हेतु

प्रकाशन वर्ष 2021

एस.सी.ई.आर.टी., छत्तीसगढ़, रायपुर

सहयोग — प्रो. रमाकान्त अग्निहोत्री, अजीम प्रेमजी फाउण्डेशन

4XYKQK

समन्वयक — डॉ. विद्यावती चंद्राकर

संपादक — डॉ. शिवराम शर्मा, डॉ. सी.एल. मिश्र , डॉ.विद्यावती चंद्राकर

लेखक – मंडल

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी
डॉ. शिवराम शर्मा, डॉ. सी. एल. मिश्र डॉ. भारती खुबालकर, श्रीमती उषा पवार श्री गजानंद प्रसाद देवांगन, श्रीमती अरुणा चौहान श्री विनय शरण सिंह,श्री दिनेश गौतम डॉ.रचनादत्त, कार्तिकेय शर्मा, डॉ. विद्यावती चंद्राकर	डॉ. जीवन यदु, डॉ.पीसी लाल यादव, श्री विनय शरण सिंह डॉ. मांघी लालयादव, श्री मंगत रवींद्र, श्री डुमन लाल ध्रुव, श्री पाठक परदेशी,श्री गणेश यदु,श्री कुबेर साहू, श्रीमती नम्रता सिंह, श्री निशिकांत त्रिपाठी, श्रीमती मैना अनंत

चित्रांकन — समीर श्रीवास्तव

आवरण पृष्ठ — रेखराज चौरागड़े, रायपुर

फोटोग्राफर — एस.अहमद, रायपुर

सहयोग — आसिफ, भिलाई

प्रकाशक :

छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर

मुद्रक

मुद्रित पुस्तकों की संख्या – ....

प्राक्कथन

1 नवम्बर 2000 को छत्तीसगढ़ के नए राज्य के रूप में अस्तित्व में आने से यह आवश्यक हो गया था कि राज्य की आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए विद्यालयीन पाठ्यक्रम में उचित संशोधन किया जाए। पिछले दो वर्षों तक राज्य में यत्किंचित संशोधन के उपरान्त वे ही पाठ्यपुस्तकें प्रचलित रहीं जो राजीव गांधी शिक्षा मिशन मध्यप्रदेश ने तैयार कीं और मध्यप्रदेश पाठ्यपुस्तक निगम ने प्रकाशित कीं। राज्य के विद्यार्थियों के लिए राज्य की अपेक्षाओं के अनुरूप पाठ्यचर्या और पाठ्यपुस्तकों का निर्माण करना आवश्यक था। ये पुस्तकें ऐसी हों जिनमें राष्ट्रीय लक्ष्यों और उद्देश्यों के साथ-साथ राज्य की विशिष्टताओं, उसके कलात्मक और सांस्कृतिक धरोहर का परिचय विद्यार्थियों को मिल सके। अतः शासन ने निर्णय लिया कि वर्ष 2004-05 से प्रदेश के शालेय विद्यार्थियों के लिए पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम नए रूप में तैयार किए जाएँ। यह इसलिए भी आवश्यक था कि माध्यमिक शिक्षा मण्डल छत्तीसगढ़ का गठन हो चुका था और उसने कक्षा 9 वीं से 12 वीं तक के लिए पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम का निर्माण कर लिया था। इधर विद्यालयीन शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा निर्मित की गई और उसके आधार पर पाठ्यक्रमों का निर्माण भी किया गया। इस पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रमों के विभिन्न उद्देश्यों में एक मुख्य उद्देश्य है पाठ्यसामग्री को अद्यतन बनाना और मूल्यपरक शिक्षा प्रदान करना। राज्य शासन ने छत्तीसगढ़ राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् को पाठ्यचर्या एवं पाठ्यक्रम संशोधन एवं नव निर्माण का कार्य सौंपा है। तदनुसार परिषद् ने प्रदेश की परिस्थितियों, आकांक्षाओं और आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए सत्र 2004-2005 में दक्षता आधारित पाठ्यक्रम तैयार करने का कार्य आरंभ किया।

पाठ्यचर्या एवं पाठ्यक्रम निर्माण में सहयोग देने के लिए कुछ अशासकीय संस्थाओं की सहायता भी हमें मिली और इसके लिए आर्थिक सहायता यूनिसेफ ने प्रदान की। उसके लिए हम उन अशासकीय संस्थाओं और यूनिसेफ के अधिकारियों के आभारी हैं।

शासन के निर्णय पर राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के तत्वावधान में नई पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम पर जुलाई 2003 से ही कार्य गोष्ठियाँ आयोजित होने लगीं थीं और चार कार्यगोष्ठियों में यह कार्य पूर्ण किया गया। इसके अनन्तर पाठ्यपुस्तकों का लेखन और संपादन कार्य प्रारंभ हुआ। शासन की सहमति से निर्णय यह भी लिया गया कि वर्ष 2004-05 के लिए कक्षा 1, 2 और 6 के पाठ्यक्रमानुसार पाठ्यपुस्तकें तैयार कराई जाएँ और एक वर्ष राज्य के दो सौ विद्यालयों, शिक्षकों, प्रधानाध्यापकों, निरीक्षकों एवं शिक्षा-विशेषज्ञों से प्राप्त सुझावों के आधार पर इनमें आवश्यक संशोधन करके वर्ष 2006-07 से संपूर्ण राज्य में इनका अध्यापन कराया जाए।

शिक्षा आजीवन चलने वाली सतत् और विकासशील प्रक्रिया है। ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में निरन्तर तेजी से हो रहे विस्फोट और नवीन शैक्षिक आवश्यकताओं तथा नवाचार के कारण नए पाठ्यक्रम और नई पुस्तकों का निर्माण आवश्यक हो जाता है।

भाषा की इस पुस्तक के लेखन में हमने निम्नलिखित बातों का विशेष रूप से ध्यान रखा है–

संकलन के पाठों का चयन करते समय विद्यार्थियों के बौद्धिक स्तर और भाषा का स्तर इन दो बातों पर विशेष रूप से बल दिया गया है। इस पुस्तक का उद्देश्य विद्यार्थियों को श्रेष्ठ साहित्य एवं साहित्य की विभिन्न विधाओं से परिचित कराना है। विद्यार्थियों की अभिरुचि को परिष्कृत करके उनको श्रेष्ठ साहित्य की ओर प्रेरित करना हमारा अभीष्ट रहा है।

इस पुस्तक में जिन विचारों और मानवीय मूल्यों पर अधिक बल दिया गया है उनमें से कुछ हैं– राष्ट्रीय एकता, पारस्परिक सद्भाव, सामाजिक सहयोग, श्रम का महत्व, समय–पालन, साहस, स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण, राष्ट्रीय एवं राज्यीय संस्कृति का ज्ञान, सभी धर्मों के प्रति आदर भाव आदि। इनके साथ ही प्रकृति–सौन्दर्य, राष्ट्रीय एकता, लौकिक नीति, वात्सल्य तथा कर्तव्य–भावना से परिपूर्ण कविताएँ इस संकलन में समाविष्ट हैं।

इस पुस्तक में हमने यह भी प्रयास किया है कि विद्यार्थियों से विषय–वस्तु को सही रूप में समझने के लिए अभ्यास अधिक कराए जाएँ। अभ्यास एक ऐसा प्रभावशाली साधन है जिससे पाठ को भली प्रकार समझा जा सकता है। अभ्यास के जरिए हम विद्यार्थियों की रचनात्मक शक्ति का विकास करना चाहते हैं। विषयवस्तु पर पूछे गए प्रश्न न केवल स्मरण के प्रश्न हैं बल्कि उनका उत्तर देने में विद्यार्थियों को अपनी बौद्धिक क्षमता का भी उपयोग करना पड़ेगा।

भाषा अध्ययन में व्याकरण का महत्वपूर्ण स्थान है, किंतु हमने इसे एक पृथक विषय न बनाकर पाठ पर आधारित एक आनुषंगिक विषय के रूप में पढ़ाने का प्रयास किया है। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि व्याकरण के अंगों की परिभाषाएँ, उनके भेद–उपभेद बताना तथा प्रत्येक के कुछ उदाहरण स्मरण कर लेने से ज्ञान का पर्याप्त उपयोग नहीं होता क्योंकि यह ज्ञान पाठ की सामग्री से असंबद्ध–सा रहता है। इसी कमी को दूर करने के लिए हमने इस पुस्तक में व्याकरण को पाठ्यसामग्री से संबद्ध किया है। भाषा तत्त्व में कुछ ऐसे प्रश्न भी समाविष्ट किए गए हैं जिनसे विद्यार्थियों को भाषा का प्रभावी प्रयोग करने में सहायता मिलेगी और वर्तनी, प्रयोग तथा वाक्य विन्यास संबंधी उनकी अशुद्धियाँ दूर हो सकेंगी।

पाठ्यसामग्री में विविधता और रोचकता बनाए रखने के लिए पुस्तक में साहित्य की अलग–अलग विधाओं, यथा कविता, कहानी, निबंध, प्रेरक–प्रसंग, चरित, आत्मकथा, संस्मरण, एकांकी, पत्र आदि सभी का समावेश किया गया है। अंत में योग्यता विस्तार शीर्षक से कुछ क्रियात्मक अभ्यास भी दिए गए हैं जिनसे विद्यार्थियों की सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने की योग्यताओं का विकास हो सकेगा।

इस पुस्तक में हिंदी साहित्य के जिन प्राचीन तथा वर्तमान कवियों, लेखकों की रचनाओं को समाविष्ट किया गया है, हम उनके तथा उनके उत्तराधिकारियों के कृतज्ञ हैं। हमने इस संकलन में छत्तीसगढ़ के कुछ प्रख्यात लेखकों–कवियों की रचनाएँ भी सम्मिलित की हैं। राज्य के कुछ अन्य प्रतिष्ठित साहित्यकारों की रचनाओं को कक्षा 7 और 8 की पाठ्यपुस्तकों में संकलित करने का हमारा निश्चय है। इस संबंध में हमारी सीमाएँ भी हैं जिन पर विचार करके राज्य के वे साहित्यकार हमें क्षमा करेंगे जिनकी रचनाएँ हम इस संकलन में नहीं रख पाए हैं।

संकलन के पाठों के चुनाव और अभ्यासों को तैयार करने में हमें दिल्ली विश्वविद्यालय के भाषा–विज्ञान विभाग के आचार्य प्रो. रमाकान्त अग्निहोत्री का विशेष रूप से मार्गदर्शन मिला है। हम उनके प्रति कृतज्ञ हैं। लेखक मंडल के सदस्यों ने जिस कर्मठता और लगन से इस संकलन को अंतिम रूप प्रदान किया है, इसके लिए वे बधाई के पात्र हैं।

राज्यस्तरीय पाठ्यपुस्तक स्थायी समिति के विद्वान सदस्यों ने इस पुस्तक का परीक्षण कर इसे अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए संशोधन के कुछ सुझाव भी दिए हैं। उन सुझावों के अनुसार पाठ्यपुस्तक में संशोधन कर दिया गया है। अब विश्वास है कि विषयवस्तु और प्रस्तुतीकरण की दृष्टि से भारती कक्षा 6 के इस नवीन संस्करण का विद्यार्थियों और शिक्षकों द्वारा स्वागत किया जाएगा।

शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 बच्चों को गुणवत्तायुक्त शिक्षा देने पर जोर देता है। एन.सी.ई.आर.टी.,नई दिल्ली द्वारा कक्षा 1–8 तक के बच्चों हेतु कक्षावार, विषयवार अधिगम प्रतिफलों का निर्माण कर सुझावात्मक शिक्षण प्रक्रियाओं का उल्लेख किया है। जिससे बच्चों के सर्वांगीण विकास के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकेगा। पुस्तकों में समयानुसार संशोधन तथा परिवर्धन एक निरंतर प्रक्रिया है। अतः सत्र 2018–19 हेतु पुस्तकों को समसामायिक तथा प्रासंगिक बनाया गया है। जिससे बच्चों को वांछित उपलब्धि प्राप्त करने के अधिक अवसर उपलब्ध होंगे। आशा है कि पुस्तकें शिक्षक साथियों तथा बच्चों को लक्ष्य तक पहुँचने में मददगार होंगी।

स्कूल शिक्षा विभाग एवं राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, छ.ग. द्वारा शिक्षकों एवं विद्यार्थियों में दक्षता संवर्धन हेतु अतिरिक्त पाठ्य संसाधन उपलब्ध कराने की दृष्टि से **Energized Text Books** एक अभिनव प्रयास है, जिसे ऑन लाईन एवं ऑफ लाईन (डाउनलोड करने के उपरांत) उपयोग किया जा सकता है। **ETBs** का प्रमुख उद्देश्य पाठ्यवस्तु के अतिरिक्त ऑडियो–वीडियो, एनीमेशन फॉरमेट में अधिगम सामग्री, संबंधित अभ्यास, प्रश्न एवं शिक्षकों के लिए संदर्भ सामग्री प्रदान करना है।

प्रस्तुत पुस्तक को और अधिक उपयोगी बनाने के लिए विद्यार्थियों, अध्यापकों, शिक्षाविदों द्वारा भेजे गए सुझावों का हम सदैव स्वागत करेंगे।

संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
छत्तीसगढ़, रायपुर

शिक्षकों से आग्रह

छत्तीसगढ़ राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के मार्गदर्शन में बनी कक्षा छठवीं की भाषा की पुस्तक 'भारती' का छठवाँ संस्करण आपके सामने है। पहले और दूसरे संस्करण में क्षेत्र – परीक्षण में विद्यार्थियों, शिक्षकों और राज्यस्तरीय पाठ्यपुस्तक स्थायी समिति के सदस्यों के सुझावों के अनुसार पाठ्यपुस्तक में आवश्यक संशोधन कर दिए गए हैं। बच्चा सीखने की क्षमता लेकर स्कूल आता है। 11–12 की आयु में तो यह क्षमता चरम सीमा पर रहती है। बच्चे अपने आस–पास की दुनिया, संसार, ब्रह्मांड आदि के बारे में कुछ और समझना चाहते हैं। आवश्यक यह नहीं है कि बच्चों को सभी के संबंध में जानकारी करवाई जाए। आवश्यकता इस बात की है कि उनकी समझने की शक्ति का भरपूर विकास हो। बच्चे पढ़कर स्वयं समझ सकें व सुनी व पढ़ी बात की सार्थक विवेचना कर सकें। इस प्रकार उनकी बोलने व लिखने की क्षमता का भी विकास होना चाहिए। शिक्षण के क्षेत्र में पाठ्यपुस्तकें, सहायक सामग्री तथा अन्य शैक्षिक गतिविधि कोई उतना सुफल नहीं दे सकतीं जितना एक सुयोग्य शिक्षक। यह शिक्षक ही है जो जटिल, नीरस विषय–वस्तु को सुगम और सरस बना देता है। हमें विश्वास है कि प्रस्तुत पुस्तक के शिक्षण में राज्य के सभी संबंधित शिक्षक अपनी इस प्रतिभा का सही उपयोग करेंगे।

प्रत्येक शिक्षक अपने ढंग से शिक्षण–पद्धति अपनाता है। शिक्षण की उसकी अपनी शैली होती है। फिर भी हम अपेक्षा करते हैं कि वे हमारे इन विनम्र सुझावों पर विचार करेंगे और यदि वे इन सुझावों को उपयोगी समझें तो इन्हें अपनाएँगे।

इस पुस्तक को स्तरानुकूल और रोचक बनाने में राज्य के अनेक शिक्षकों, विद्वानों, पाठकों, शिक्षाविदों और राज्यस्तरीय पाठ्यपुस्तक स्थायी समिति के सदस्यों का योगदान है। इन सभी के परामर्श से पाठ्यपुस्तक में जीवन के विविध क्षेत्रों से जुड़े बच्चों की रुचि पर आधारित पाठ संकलित किए गए हैं। इन पाठों को कविता, निबंध, चरित्र, एकांकी, पत्र, जीवनी आदि अनेक विधाओं से सँजोया गया है। इन पाठों के आधार पर कक्षा में विद्यार्थियों के बीच संवाद, समूहचर्चा, अभिनय, पूरी कक्षा के साथ विचार–विमर्श आदि क्रियाओं का आयोजन किया जा सकता है। आपको इन क्रियाओं में प्रत्येक बच्चे की भागीदारी सुनिश्चित करनी है। साथ ही विद्यार्थियों में धैर्यपूर्वक सुनने, समझने तथा स्वाभाविक ढंग से बोलकर अपनी बात कहने की दक्षताओं का विकास भी करना है।

यह भी आवश्यक है कि बच्चे ढंग से बातचीत करना सीख जाएँ– कब बोलना है और कब कहाँ, किस प्रकार के संदर्भ में किस प्रकार की भाषा लिखी या बोली जाएगी। जिस शैली का प्रयोग आप अपने दोस्त को पत्र लिखने में करते हैं, उसी शैली में आप एक निबंध नहीं लिख सकते। वाक्य–संरचना से ऊपर अनुच्छेद का अपना स्वरूप और चरित्र होता है। ऐसे कई नियम हैं जो एक अनुच्छेद में वाक्यों को एक दूसरे से बाँधते हैं। एक अनुच्छेद से 'और', 'वह', 'उस', 'या', 'क्योंकि' जैसे शब्दों को हटाकर देखा जाए तो आपकी समझ में आएगा कि अनुच्छेद को कैसे परस्पर बाँधते हैं। भाषा की इस विशेषता की तरफ भी बच्चों को जागरूक करना आवश्यक है।

अपने शिक्षण को और अधिक कारगर बनाने के लिए आप निम्नलिखित सोपानों को अपना सकते हैं–

1. पाठ की तैयारी – किसी पाठ को एकदम पढ़ाना प्रारंभ करने से पूर्व यह अधिक उचित है कि पृष्ठभूमि का निर्माण करें। इससे विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान का भी पता चल जाता है और उन्हें पाठ को समझने में सहायता भी मिल जाती है। पाठ्यवस्तु प्रारम्भ करने के पूर्व विद्यार्थियों से ऐसे प्रश्न पूछिए जिनके उत्तरों से आपको उनके पूर्व ज्ञान का पता लगे। उदाहरण के लिए– 'सहृदयता और सहनशीलता' शीर्षक पाठ पढ़ाने के पूर्व देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी के संबंध में प्रश्न पूछना चाहिए। साथ ही उन्हें क्रांतिकारियों या प्रथम राष्ट्रपति जी के संबंध में आवश्यक जानकारी भी देनी चाहिए।

कविता के पाठ पढ़ाने के संबंध में यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि इसे पढ़ाने का ढंग कहानी, निबंध, चरित आदि के पाठों से बिल्कुल भिन्न है। कविता पढ़ाने का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को सौंदर्य–बोध और रसानुभूति कराना है। विद्यार्थी कविता पढ़कर आनंदित हों; साथ ही देश, प्रकृति, पशु–पक्षियों, उपेक्षित मानवों आदि के प्रति उनके मन में अनुराग पैदा हो।

2. नवीन शब्द परिचय – प्रायः सभी पाठों में कुछ–न–कुछ नवीन शब्दों का प्रयोग होता ही है। भाषा–शिक्षण का एक उद्देश्य यह भी है कि प्रत्येक कक्षा में विद्यार्थियों को कुछ नवीन शब्द अवश्य पढ़ाए जाएँ। हम यह कब कहेंगे कि बच्चों ने कोई नया शब्द सीख लिया है। इसमें कोई शक नहीं है कि बच्चे को शब्द का सही उच्चारण आना चाहिए और उसे उस शब्द से मिलते–जुलते शब्दों के बारे में भी जागरूक रहना चाहिए, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात है कि बच्चा एक शब्द का अलग–अलग संदर्भों में सार्थक प्रयोग कर सके।

3. वाचन – विद्यार्थियों द्वारा सस्वर वाचन करने के पूर्व यह आवश्यक है कि आप एक अनुच्छेद का आदर्श वाचन करें, फिर विद्यार्थियों से उसका अनुकरण वाचन कराएँ। इससे विद्यार्थियों को शब्दों के सही उच्चारण करने, बलाघात, विराम चिह्नों के अनुसार पढ़ने में सहायता मिलेगी। कौन कितनी शीघ्रता से वाचन करता है, यह जाँच करना अच्छे वाचन का लक्षण नहीं माना जा सकता। कौन विराम चिह्नों का पालन करते हुए, बलाघात का अनुसरण करते हुए, शुद्ध उच्चारण के साथ पठन करता है, यह आदर्श वाचन का लक्षण है। वाचन कराते समय इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखें कि वाचन करने का अवसर समान रूप से सभी विद्यार्थियों को मिले। जो विद्यार्थी वाचन में पिछड़े हैं, उन्हें अन्य विद्यार्थियों के समकक्ष लाने का प्रयास करें।

4.भाषा संबंधी दक्षताओं का विकास–पाठ की विषय वस्तु को समझने के साथ–साथ यह भी अपेक्षित है कि विद्यार्थियों में भाषा संबंधी योग्यताओं का निरंतर विकास होता रहे। साधारण रूप से पढ़ना के अन्तर्गत अर्थग्रहण और शब्द–बोध संबंधी कुशलताएँ होती हैं। पाठ्यपुस्तक के प्रत्येक पाठ के अन्त में इन दक्षताओं के विकास के लिए अभ्यास दिए गए हैं। आप ऐसे ही कुछ अन्य अभ्यास देकर उनकी दक्षता को विकसित कर सकते हैं।

5.योग्यता विस्तार के क्रियाकलाप – भाषा ज्ञान एकांगी न रहे, इसके लिए आवश्यक है कि भाषायी योग्यताओं के साथ अन्य विषयों से उसका संबंध स्थापित किया जाए। ऐसा संबंध स्थापित करने के लिए अभ्यास के अंत में योग्यता विस्तार शीर्षक में विद्यार्थियों को कुछ करने के लिए क्रियाकलाप सुझाए गए हैं। आपको यह देखना है कि ये क्रियाकलाप अनिवार्य रूप से प्रत्येक विद्यार्थी करे। इन क्रियाकलापों से विद्यार्थियों का रचनात्मक और सृजनात्मक विकास होगा। उनमें कला और लेखन संबंधी जागरुकता आएगी। समय–समय पर कक्षा में वाद विवाद प्रतियोगिता, अंत्याक्षरी प्रतियोगिता, चित्र निर्माण की प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता, पत्र–पत्रिकाओं से सामग्री एकत्र करना, ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण करके उनके संबंध में लेख लिखना आदि क्रियाकलापों से विद्यार्थियों के भाषायी कौशल में अभिवृद्धि होगी।

आप सबको अध्यापन करने का लंबा अनुभव है। आपके इस लंबे अनुभव से निःसंदेह विद्यार्थी लाभान्वित होते हैं। हमारे बताए कुछ सुझावों पर आप अमल करें – हो सकता है आपकी शिक्षणकला में इससे कुछ इज़ाफा हो। यदि ऐसा हुआ तो हम अपने प्रयास को सार्थक समझेंगे।

संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
छत्तीसगढ़, रायपुर

अनुक्रमणिका

214SSU

क्र.	पाठ	विधा	रचयिता	पृष्ठ
1	अभियान गीत	कविता	डॉ. हरिवंशराय 'बच्चन'	01
2	एक टोकरी भर मिट्टी	कहानी	श्री माधवराव सप्रे	05
3	हेलन केलर	गद्यविधा	लेखक मंडल	10
4	दूँगी फूल कनेर के	कविता	श्री गंगाप्रसाद	15
5	बरखा आथे	कविता	लाला जगदलपुरी	20
6	सफेद गुड़	कहानी	सर्वेश्वर दयाल सक्सेना	24
7	समय नियोजन	निबंध	श्री समर बहादुर सिंह	28
8	मेरा नया बचपन	कविता	श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान	32
9	दू ठन नान्हे कहानी	कहानियाँ	डॉ. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी	36
10	हम पंछी उन्मुक्त गगन के	कविता	डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन'	40
11	शहीद की माँ	एकांकी	श्री योगेशचंद्र शर्मा	43
12	सर्वधर्म समभाव	एकांकी	डॉ. कृष्णगोपाल रस्तोगी	50
13	आलसीराम	कहानी	श्री नारायण लाल परमार	55
14	नाचा के पुरखा–दाऊ मंदराजी	जीवन वृत्त	लेखक मंडल	59
15	सरलता और सहृदयता	कहानी	श्री एस. के. दत्त	63
16	चचा छक्कन ने केले खरीदे	कहानी	श्री इम्तियाज़ अली	69
17	नीति के दोहे	दोहे	तुलसी/रहीम/कबीर	76
18	हमर कतका सुंदर गाँव	कविता	श्री प्यारेलाल गुप्त	80
19	हार की जीत	कहानी	श्री सुदर्शन	84
20	हाना	लोक साहित्य	लेखक मंडल	91
21	छत्तीसगढ़ का दर्शन	निबंध	लेखक मंडल	96

CMYK

सीखने के प्रतिफल

सीखने–सिखाने की प्रक्रिया	सीखने की संप्राप्ति (Learning Outcomes)
सभी शिक्षार्थियों (भिन्न रूप से सक्षम बच्चों सहित) को व्यक्तिगत, सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रोत्साहन दिया जाए ताकि उन्हें– • अपनी भाषा में बातचीत तथा चर्चा करने के अवसर हों। • प्रयोग की जाने वाली भाषा की बारीकियों पर चर्चा के अवसर हों। • सक्रिय और जागरूक बनाने वाली रचनाएँ, अखबार, पत्रिकाएँ, फिल्म और ऑडियो–वीडियो सामग्री को देखने, सुनने, पढ़ने, लिखने और चर्चा करने के अवसर उपलब्ध हों। • समूह में कार्य करने और एक–दूसरे के कार्यों पर चर्चा करने, राय लेने–देने, प्रश्न करने की स्वतंत्रता हो। • हिंदी के साथ–साथ अपनी भाषा की सामग्री पढ़ने–लिखने की सुविधा (ब्रेल/सांकेतिक रूप में भी) और उन पर बातचीत की आजादी हो। • अपने परिवेश, समय और समाज से संबंधित रचनाओं को पढ़ने और उन पर चर्चा करने के अवसर हों • अपनी भाषा गढ़ते हुए लिखने संबंधी गतिविधियाँ आयोजित हों, जैसे–शब्द खेल। • हिंदी भाषा में संदर्भ के अनुसार भाषा विश्लेषण	बच्चे – LH601. विभिन्न प्रकार की ध्वनियों (जैसे– बारिश, हवा, रेल, बस, फेरीवाला आदि) को सुनने के अनुभव, किसी वस्तु के स्वाद आदि के अनुभव को अपने ढंग से मौखिक/सांकेतिक भाषा में प्रस्तुत करते हैं। LH602. सुनी, देखी गई बातों, जैसे– स्थानीय सामाजिक घटनाओं, कार्यक्रमों और गतिविधियों पर बेझिझक बात करते हैं और प्रश्न करते हैं। LH603. देखी, सुनी रचनाओं/घटनाओं/ मुद्दों पर बातचीत को अपने ढंग से आगे बढ़ाते हैं, जैसे– किसी कहानी को आगे बढ़ाना। LH604. रेडियो, टी.वी., अखबार, इंटरनेट में देखी/सुनी गई खबरों को अपने शब्दों में कहते हैं। LH605. विभिन्न अवसरों/संदर्भों में कही जा रही दूसरों की बातों को अपने ढंग से बताते हैं, जैसे–आँखों से न देख पाने वाले साथी का यात्रा– अनुभव। LH606. अपने परिवेश में मौजूद लोककथाओं और लोकगीतों के बारे में जानते हुए चर्चा करते हैं। LH607. अपने से भिन्न भाषा, खान–पान, रहन–सहन संबंधी विविधताओं पर बातचीत करते हैं। LH608. सरसरी तौर पर किसी पाठ्यवस्तु को पढ़कर उसकी विषयवस्तु का अनुमान लगाते हैं। LH609. किसी पाठ्यवस्तु की बारीकी से जाँच करते हुए उसमें किसी विशेष बिंदु को खोजते हैं, अनुमान लगाते हैं, निष्कर्ष निकालते हैं। LH610. हिंदी भाषा में विभिन्न प्रकार की सामग्री (समाचार, पत्र–पत्रिका, कहानी, जानकारीपरक सामग्री, इंटरनेट पर प्रकाशित होने वाली सामग्री आदि) को समझकर

(व्याकरण, वाक्य संरचना, विराम चिह्न आदि) करने के अवसर हों। • कल्पनाशीलता और सृजनशीलता को विकसित करने वाली गतिविधियों, जैसे– अभिनय, रोल–प्ले, कविता, पाठ, सृजनात्मक लेखन, विभिन्न स्थितियों में संवाद आदि के आयोजन हों और उनकी तैयारी से संबंधित स्क्रिप्ट, लेखन और रिपोर्ट लेखन के अवसर हों। • साहित्य और साहित्यिक तत्वों की समझ बढ़ाने के अवसर हों। • शब्दकोश का प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहन एवं सुलभ परिवेश हो। • सांस्कृतिक महत्व के अवसरों पर अवसरानुकूल लोकगीतों का संग्रह करने, उनकी गीतमय प्रस्तुति देने के अवसर हों।	पढ़ते हैं और उसमें अपनी पसंद–नापसंद, राय, टिप्पणी देते हैं। LH611. भाषा की बारीकियों/व्यवस्था/ढंग पर ध्यान देते हुए उसकी सराहना करते हैं, जैसे–कविता में लय–तुक, वर्ण–आवृत्ति (छंद) तथा कहानी, निबंध में मुहावरे, लोकक्ति आदि। LH612. विभिन्न विधाओं में लिखी गई साहित्यिक सामग्री को उपयुक्त उतार–चढ़ाव और सही गति के साथ पढ़ते हैं। LH613. हिंदी भाषा में विविध प्रकार की रचनाओं को पढ़ते हैं। LH614. नए शब्दों के प्रति जिज्ञासा व्यक्त करते हैं और उनके अर्थ समझने के लिए शब्दकोश का प्रयोग करते हैं। LH615. विविध कलाओं; जैसे– हस्तकला, वास्तुकला, खेती–बाड़ी, नृत्यकला आदि से जुड़ी सामग्री में प्रयुक्त भाषा के प्रति जिज्ञासा व्यक्त करते हुए उनकी सराहना करते हैं। LH616. दूसरों के द्वारा अभिव्यक्त अनुभवों को जरूरत के अनुसार लिखना; जैसे सार्वजनिक स्थानों (जैसे–चौराहों नलों, बस अड्डे आदि) पर सुनी गई बातों को लिखना। LH617. हिंदी भाषा में विभिन्न प्रकार की सामग्री (समाचार, पत्र–पत्रिका, कहानी, जानकारी परक सामग्री, इंटरनेट पर प्रकाशित होने वाली सामग्री आदि) को समझकर–पढ़ते हैं और उसमें अपनी पसंद–नापसंद, टिप्पणी को लिखित या ब्रेल भाषा में व्यक्त करते हैं। LH618. विभिन्न विषयों, उद्देश्यों के लिए उपयुक्त विराम–चिह्नों का उपयोग करते हुए लिखते हैं। LH619. विभिन्न अवसरों/संदर्भों में कही जा रही दूसरों की बातों को अपने ढंग से लिखते हैं। LH620. विभिन्न संदर्भों में विभिन्न उद्देश्यों के लिए लिखते समय शब्दों, वाक्य संरचनाओं, मुहावरे आदि का उचित प्रयोग करते हैं।

विषय–सूची (Contents)

अध्याय	पाठ का नाम	LOs
1	अभिमान गीत	LH608,LH609,LH611,LH612,LH613,LH616
2	एक टोकरी भर मिट्टी	LH608,LH611,LH612,LH613,LH614,LH618,LH620
3	हेलन केलर	LH605,LH608,LH609,LH612,LH614,LH617,LH620
4	दूँगी फूल कनेर के	LH608,LH611,LH612,LH613
5	बरखा आथे	LH601,LH607,LH608,LH611,LH612,LH613
6	सफेद गुड़	LH602,LH611,LH612,LH613,LH614,LH618,LH620
7	समय नियोजन	LH608,LH611,LH613,LH614,LH618,LH619,LH620
8	मेरा नया बचपन	LH608,LH611,LH612,LH613,LH614,LH616,LH619
9	दू ठन नान्हे कहानी	LH601,LH607,LH608,LH612,LH614,LH618,LH620
10	हम पंछी उन्मुक्त गगन के	LH601,LH608,LH609,LH611,LH612,LH613,LH614
11	शहीद की माँ	LH604,LH608,LH611,LH612,LH613,LH614,LH620
12	सर्वधर्म समभाव	LH607,LH608,LH611,LH612,LH613,LH614,LH620
13	आलसीराम	LH603,LH608,LH611,LH612,LH613,LH604,LH615, LH618
14	नाचा के पुरखा–दाऊ मंदराजी	LH603,LH606,LH608,LH612,LH614,LH615,LH618, LH618,LH620
15	सरलता और सहृदयता	LH608,LH611,LH612,LH613,LH614,LH618,LH619, LH620
16	चचा छक्कन ने केले खरीदे	LH611,LH612,LH613,LH614,LH618,LH620
17	नीति के दोहे	LH608,LH611,LH612,LH613,LH614
18	हमर कतका सुंदर गाँव	LH606,LH607,LH608,LH611,LH612,LH619,LH620
19	हार की जीत	LH608,LH611,LH612,LH613,LH614,LH618,LH620
20	हाना	LH606,LH607,LH608,LH611,LH612,LH613, LH614
21	छत्तीसगढ़ का दर्शन	LH604,LH607,LH608,LH611,LH612,LH613,LH620

उदाहराणार्थ रूब्रिक्स

Chapter	Sub Topic	Level 1	Level 2	Level 3	Level 4
After the lesson, students will be able to : पाठ के बाद, विद्यार्थी कर सकेंगेः–		**remember, recall, list, locate, label, recite** याद करना, स्मरण करना, सूचीबद्ध करना, खोजना लेबल करना, वर्णन करना	**understand, explain, illustrate, summaries, match** समझना, व्याख्या करना, संक्षेप में लिखना, उदाहरण देना, मेल करना	**apply, organize, use, solve, prove, draw** प्रयोग करना, व्यवस्थित करना, उपयोग करना, हल करना, साबित करना, चित्रण करना	**evaluate, hypothesize, analyze, compare, create, categories** मूल्यांकन करना, परिकल्पना करना, विश्लेषण करना, वर्गीकरण करना
अध्याय–1 अभियान गीत	**शब्दार्थ** – पयार्यवाची, भावार्थ / व्याख्या, वाचन, योजक चिह्न, का वाक्य में प्रयोग करना, राष्ट्रीय चिह्न, पशु, पक्षी, राजकीय धरोहर के नाम पड़ोसी (निकट) देशों की जानकारी प्रश्नोत्तर	कविता कंठस्थ (याद) करना शब्दार्थ पर्यायवाची	सप्रसंग व्याख्या करना। देशप्रेम को संक्षेप में बताना अभ्यास के प्रश्नों को हल करना।	देश प्रेम और भावना देश भक्ति साबित करने के लिए पेड़ पौधो का संरक्षण, यातायात के नियमों का पालन, घर के आस पास की सफाई, गाँव, शहर देश की सफाई। किन्हीं महापुरूष राष्ट्रीय पशु–पक्षी चिह्न आदि का चित्र बनाना और उनके बारे में लिखना	• देश भक्ति से संबंधित चार लाईन की छोटी सी कविता लिखना। • यदि आप देश की सेवा करना चाहते हैं तो क्या करेंगे? (सरपंच, शिक्षक, डॉक्टर, सैनिक आदि साधारण व्यक्ति बनकर भी परिवेश से संबंधित उत्तम कार्य कर सकते हैं)

ikB 1

अभियान गीत

–डॉ. हरिवंशराय 'बच्चन'

डॉ. हरिवंश राय बच्चन अभियान गीत में नन्हें बच्चों के माध्यम से मातृ–भूमि के प्रति प्रेम, सम्मान और कर्तव्य का बोध कराते हुए देशभक्ति के प्रति लोगों का आह्वान कर रहे हैं। साथ ही देश के लिए बलिदान होने की भावना अपने में समाहित करने का संदेश दे रहे हैं।

21DNUH

भारत माता के बेटे हम चलते सीना तान के।
धर्म अलग हों, जाति अलग हों, वर्ग अलग हों, भाषाएँ,
पर्वत, सागर–तट, वन, मरुथल, मैदानों से हम आएँ।
फौजी वर्दी में हम सबसे पहले हिन्दुस्तान के,
भारत माता के बेटे हम चलते सीना तान के॥

हिन्दुस्तान की जिस मिट्टी में हम सब खेले–खाए हैं,
जिसके रजकण को हम ममता–समता से अपनाए हैं,
कर्ज़ चुकाने हैं हमको उन रजकण के एहसान के।
भारत माता के बेटे हम चलते सीना तान के।

जिसकी पूजा में सदियों से श्रम के फूल चढ़ाए हैं,
जिसकी रक्षा में पुरखों ने अगणित शीश कटाए हैं।
हम रखवाले पौरुषवाले उसके गौरव मान के
भारत माता के बेटे हम चलते सीना तान के ॥

हम गिर जाएँ किंतु न गिरने देंगे देश निशान को,
हम मिट जाएँ किंतु न मिटने देंगे हिन्दुस्तान को।
हम हैं सबसे आगे रहते अवसर पर बलिदान के
भारत माता के बेटे हम चलते सीना तान के ॥

जो वीरत्व–विवेक समर में हम सैनिक दिखलाएँगे,
उसकी गाथाएँ भारत के गाँव, नगर, घर गाएँगे।
अनगिन कंठों में गूँजेंगे बोल हमारे गान के ,
भारत माता के बेटे हम चलते सीना तान के ॥

शब्दार्थ :– **मरूथल** –मरूस्थल, **रजकण**– धूल के कण, मिट्टी, **एहसान**– भलाई, उपकार, **सदियों** –सौ वर्षों का समूह, शताब्दी,**पौरूष**–पराक्रम, पुरुषार्थ, **गौरव**–प्रतिष्ठा,आदर, महिमा,**निशान**–चिह्न, **बलिदान**–आत्मदान, **वीरत्व** –वीरता, पराक्रम, **विवेक** –बुद्धि, **समर**–युद्ध, **गाथाएँ**–कहानियाँ, **अनगिन**–अनंत, जिसको गिना न जा सके।

अभ्यास

पाठ से

1. अभियान गीत से क्या तात्पर्य है?
2. बालक भारत की मिट्‌टी की महिमा का गान क्यों कर रहा है?
3. सैनिक देश के लिए क्या प्रतिज्ञा करते हैं?
4. 'अनेकता में एकता', भारत की विशेषता है। यह भाव कविता की किन पंक्तियों में हैं उन्हें लिखिए?
5. भारत माता के बेटे सीना तानकर चलने की बात क्यों करते हैं?
6. कवि अभियान गीत के माध्यम से भारत माता का कौन सा कर्ज चुकाने की बात करते हैं?
7. मातृभूमि की रक्षा के लिए सैनिक क्या–क्या करते हैं?
8. सैनिक खुद मिटकर देश के किन निशानों को बचाना चाहते हैं?
9. कवि सैनिकों की वीरगाथा को गाँव, नगर और घर तक क्यों पहुँचाना चाहता है?
10. बालक भारत की मिट्टी की महिमा का गान किस तरह कर रहा है? अपनी भाषा में लिखिए।

11. निम्नलिखित पद्यांशों के भावार्थ लिखिए –

(क) कर्ज चुकाने हैं हमको, उन रजकण के एहसान के
भारत माता के बेटे हम, चलते सीना तान के।

(ख) हम गिर जाएँ, किन्तु न गिरने देंगे देश निशान को,
हम मिट जाएँ, किन्तु न मिटने देंगे हिन्दुस्तान को।

पाठ से आगे

1. भारत की सुरक्षा के लिए सैनिक सदैव तत्पर रहते हैं। अगर आपको देश के लिए कुछ करने का अवसर मिल जाये तो आप कौन सा काम करना चाहेंगे?
2. किसी सैनिक या फौजी को देखकर आपके मन में उनके परिवार वालों के प्रति कौन से भाव आते हैं? उन भावों को अपने शब्दों में लिखिए।
3. अपने देश के प्रति हम सभी के कर्तव्य हैं वैसे ही अपने विद्यालय के प्रति भी हमारे कर्तव्य हैं। कोई चार कर्तव्य जो आप अपने विद्यालय के प्रति निष्ठापूर्वक करना चाहते हैं। उन्हें लिखिए।
4. देश की रक्षा करने वाले फौजी वर्दी पहनते हैं। उनके वर्दी पहनने के क्या कारण हो सकते हैं? अपने विचार लिखिए।
5. राष्ट्र के प्रति नागरिकों के क्या कर्त्तव्य हैं? लिखिए।

भाषा से

1. कविता में आए निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए –
   शीश कटाना, सीना तान के चलना, कर्ज चुकाना, बलिदान देना।
2. 'क्या' शब्द का प्रयोग करके बनाए गए इन प्रश्नवाचक वाक्यों को पढ़िए –
   (क) क्या आपका नाम मीना है?
   (ख) आपने खाने में क्या खाया?
   भाषा में प्रश्नवाचक वाक्य दो प्रकार के होते हैं "हाँ/ना" उत्तर वाले प्रश्न वाचक वाक्य और सूचनाओं की अपेक्षा रखने वाले प्रश्नवाचक वाक्य। पहले वाले वाक्य का उत्तर हाँ/नहीं में होगा। इसमें क्या का प्रयोग हमेशा वाक्य में शुरू में होता है। 'हाँ–नहीं' उत्तर वाले पाँच प्रश्न वाचक वाक्य सोचकर लिखिए।
3. निम्नलिखित शब्दों के दो–दो पर्यायवाची शब्द लिखिए।
   पर्वत, सागर, वन, फूल।
4. निम्नलिखित उदाहरणों को देखकर योजक चिह्न वाले ऐसे पाँच शब्द पाठ से छाँटकर लिखिए।
   जैसे – माता–पिता, गौरव–गाथा।

5. एक वचन से बहुवचन बनाने का एक उदाहरण नीचे दिया गया है।
गाथा.........गाथाएँ,
अब इसी प्रकार से निम्नलिखित शब्दों का बहुवचन लिखिए –
कथा........विपदा.............माता.........लता..............माला..........

6. निम्नलिखित पंक्ति बहुवचन की द्योतक है। इसे एकवचन में लिखिए।
कर्ज चुकाने हैं हमकों, उस रजकण के एहसान के।

योग्यता विस्तार

226BZF

1. भारत के राष्ट्रीय चिह्न, राष्ट्रीय पशु, राष्ट्रीय पक्षी, राष्ट्र गान आदि के साथ–साथ छत्तीसगढ़ के राजकीय धरोहरों के बारे में भी जानकारी प्राप्त कीजिए।
2. देश के वीर शहीदों एवं महापुरूषों के चित्रों का संकलन कर फाईल बनाइए।
3. भारत के उस पड़ोसी देश के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए जो भारत के लिए हमेशा खतरा बना रहता है।
4. अपने देश के प्रति आपके कई कर्त्तव्य हैं। ऐसे कोई पाँच कर्त्तव्य लिखिए जिन्हें आप निष्ठापूर्वक करते हैं।
5. महापुरुषों के द्वारा दिए प्रसिद्ध नारों को चार्ट में लिखिकर कक्षा में सजाएँ।

पाठ – 2

एक टोकरी भर मिट्टी

श्री माधव राव सप्रे

इंसान का अहंकार उसे अन्याय और विद्वेष करने को प्रेरित करता है। इस हेतु वह छल झूठ और षड़यंत्र करने से भी नहीं चूकता परंतु सत्य और ईमानदारी की एक चोट उसे हकीकत की धरातल पर ला पटकती है। परिणाम स्वरूप उसका जमीर जाग जाता है। उसे सत्य की पहचान होती है। प्रस्तुत कहानी में एक जमींदार द्वारा असहाय विधवा की झोपड़ी को हथिया लेने के बाद की स्थिति का प्रभाव पूर्ण चित्रांकन हुआ है। यह कहानी मानवीय संवेदना से जुड़ी हुई है। विधवा के कथन से उसका हृदय परिवर्तन होना और विधवा की झोपड़ी को जमींदार द्वारा लौटा देना यही इस कहानी का सारतत्व है।

किसी श्रीमान् जमींदार के महल के पास एक गरीब, अनाथ विधवा की झोंपड़ी थी। जमींदार साहब ने विधवा से बहुतेरा कहा कि अपनी झोंपड़ी हटा ले, पर वह तो कई जमाने से वहीं बसी थी। उसका पति और इकलौता पुत्र भी उसी झोंपड़ी में मर गए थे। पतोहू भी एक पाँच बरस की कन्या छोड़कर चल बसी थी। अब यही उसकी पोती इस वृद्ध काल में उसका एक मात्र आधार थी। जब कभी उसे अपनी पूर्व स्थिति की याद आती तो मारे दुःख के फूट-फूटकर रोने लगती थी और जब से उसने अपने श्रीमान् पड़ोसी की इच्छा का हाल सुना तब से वह मृतप्राय हो गई थी। उस झोंपड़ी में उसका मन लग गया था। बिना मरे वह वहाँ से निकलना नहीं चाहती थी। श्रीमान् के सब प्रयत्न निष्फल हो गए तब

वे अपनी जमींदारों वाली चाल चलने लगे। बाल की खाल निकलवाने वाले वकीलों की थैली गरम कर उन्होंने अदालत में झोंपड़ी पर अपना कब्जा कर लिया। विधवा को वहाँ से निकाल दिया। बेचारी अनाथ तो थी ही, पास–पड़ोस में कहीं जाकर रहने लगी।

एक दिन श्रीमान् उस झोंपड़ी के आसपास टहल रहे थे और लोगों को काम बता रहे थे कि इतने में वह विधवा हाथ में टोकरी लेकर वहाँ पहुँची। श्रीमान् ने उसको देखते ही अपने नौकरों से कहा–"तुम उसे यहाँ से हटा दो।" पर वह गिड़गिड़ाकर बोली–"महाराज, अब तो यह झोंपड़ी तुम्हारी हो गई है, मैं उसे लेने नहीं आई हूँ। महाराज, क्षमा करें तो एक विनती है।" जमींदार साहब के सिर हिलाने पर उसने कहा, "जब से यह झोंपड़ी छूटी है तब से मेरी पोती ने खाना–पीना छोड़ दिया है। मैंने बहुत कुछ समझाया पर वह एक नहीं मानती। यही कहा करती है कि अपने घर चल, तब रोटी खाऊँगी। अब मैंने यह सोचा है कि इस झोंपड़ी से एक टोकरी मिट्टी लेकर उसी का चूल्हा बनाकर रोटी पकाऊँगी। इससे भरोसा है कि वह रोटी खाने लगेगी। महराज, कृपा करके आज्ञा दीजिए तो इस टोकरी में मिट्टी ले जाऊँ।" श्रीमान् ने आज्ञा दे दी।

विधवा झोंपड़ी के भीतर गई। वहाँ जाते ही उसे अपनी पुरानी बातों का स्मरण हुआ और उसकी आँखों से आँसू की धारा बहने लगी। अपने आंतरिक दुखों को किसी तरह सम्हाल कर उसने अपनी टोकरी मिट्टी से भर ली और हाथ में उठाकर बाहर ले आई। फिर श्रीमान् से हाथ जोड़कर विनती करने लगी, "महाराज, कृपा करके इस टोकरी को हाथ लगा दीजिए जिससे कि मैं इसे अपने सिर पर धर लूँ।" जमींदार साहब पहले तो गुस्सा हुए, फिर जब वह बार–बार हाथ जोड़ने लगी और पैरों में गिरने लगी तो उनके मन में भी कुछ दया आ गई। किसी नौकर से न कहकर आप ही स्वयं टोकरी उठाने आगे बढ़े। ज्योंही टोकरी को हाथ लगाकर ऊपर उठाने लगे, त्योंही देखा कि यह काम उनकी शक्ति के बाहर है। फिर तो उन्होंने अपनी सब ताकत लगाकर टोकरी को उठाना चाहा, पर जिस स्थान पर टोकरी रखी थी, उस स्थान से वह एक हाथ भी ऊँची न उठी। वह लज्जित होकर कहने लगे यह टोकरी हमसे नहीं उठाई जाएगी।

यह सुनकर विधवा ने कहा, "महाराज, नाराज न हों, तो ...... आपसे एक टोकरी भर मिट्टी नहीं उठाई जाती और इस झोंपड़ी में तो हजारों टोकरियाँ मिट्टी पड़ी है। उसका भार आप जनम भर कैसे उठा पाओगे? आप इस बात पर विचार कीजिए।"

जमींदार साहब धन मद से गर्वित हो अपना कर्त्तव्य भूल गए थे। पर विधवा के कहे हुए वचन सुनते ही उनकी आँखें खुल गईं। कृतकर्म का पश्चाताप कर उन्होंने विधवा से क्षमा माँगी और झोंपड़ी वापस दे दी।

'kCnkFk %& **tehnkj** – भू–स्वामी, **vukFk**–लावारिस, असहाय, **irkg**–बहू, **e`rik;**–जो मरे हुए के समान हो, **i;Ru**–कोशिश, **fu"Qy**–व्यर्थ, **vnkyr** –न्यायालय, **Lej.k**–याद करना, **i'pkrki**–पछतावा

अभ्यास

पाठ से

1. जमींदार, विधवा से झोपड़ी हटाने के लिए क्यों कह रहा था?
2. जमींदार ने झोपड़ी पर कब्जा करने के लिए कौन–सी चाल चली?
3. विधवा की झोपड़ी से कौन सी यादें जुड़ी हुई थीं? जिसके कारण वह झोपड़ी छोड़ना नहीं चाहती थी।
4. विधवा की पोती ने खाना–पीना क्यों छोड़ दिया था ?

5. बुढ़िया झोपड़ी में से एक टोकरी मिट्टी क्यों ले जाना चाहती थी?
6. विधवा द्वारा टोकरी उठाने को कहने पर 'जमींदार नौकर से न कहकर खुद टोकरी क्यों उठाने लगे?
7. जमींदार को विधवा के सामने क्यों लज्जित होना पड़ा?
8. ''आपसे एक टोकरी भर मिट्टी नहीं उठाई जाती और इस झोपड़ी में तो हजारों टोकरियाँ मिट्टी पड़ी है।'' विधवा के इस कथन के पीछे क्या भाव रहा होगा?
9. कहानी का शीर्षक 'एक टोकरी भर मिट्टी' की सार्थकता पर अपने विचार दीजिए।

पाठ के आगे

1. जमींदार के द्वारा विधवा के साथ किया जाने वाला व्यवहार उचित है अथवा अनुचित ? अपने विचार लिखिए।
2. वकीलों का कार्य न्याय दिलाना होता है, परन्तु इस पाठ में जमींदार वकीलों की मदद से गरीब विधवा की झोपड़ी पर कब्जा कर लेता है। वकीलों द्वारा जमींदार को साथ देना उचित था या अनुचित ? लिखिए।
3. जमींदार ने विधवा की जमीन को गलत तरीके से हथिया लिया था जिसे उसने बाद में वापस भी कर दिया। जमीन वापस करने के पीछे क्या कारण रहे होंगे? लिखिए।
4. अभावों में जिंदगी गुजारने वाले कई लोग हमारे आस–पास रहते हैं। उन्हें देखकर आपके मन में किस तरह के भाव उत्पन्न होते हैं? लिखिए।

भाषा से

1. पाठ में आए इस वाक्य को देखिए ''विधवा को वहाँ से निकाल दिया''।

यहाँ पर विधवा, उस गरीब स्त्री के लिए प्रयुक्त शब्द है, जिसे जमींदार ने उसकी अपनी जमीन से बेदखल कर दिया था। सामान्य रूप से 'विधवा' जातिवाचक संज्ञा शब्द है, जो ऐसी स्त्रियों के लिए प्रयुक्त होता है जिनका पति मर चुका हो। कभी–कभी भाषा में जातिवाचक संज्ञा का व्यक्ति वाचक संज्ञा के रूप में प्रयोग होता है जैसा कि ऊपर के वाक्य में विधवा शब्द को लेकर किया गया है। जातिवाचक संज्ञा का व्यक्तिवाचक के रूप में प्रयोग के कुछ अन्य उदाहरण निम्न हैं –

1. मैं **पुरी** जाने वाला हूँ?
2. **पुरोहित** ने कथा सुनाई।
3. इस **आदमी** ने चोरी की है।

अब आप साथियों की सहायता से दस ऐसे वाक्य लिखिए जिसमें जातिवाचक संज्ञा का व्यक्तिवाचक संज्ञा के रूप में प्रयोग हुआ हो।

2. संज्ञा के जिस रुप में एक से अधिक वस्तुओं का बोध हो उसे बहुवचन कहते हैं।

जैसे –

1. **सड़कों** पर लोग चल रहे हैं।

2. **विद्यार्थियों** को **पुस्तकें** दे दो।

3. **हम** लोग पाठशाला जाएँगे।

हिन्दी में कई संज्ञा ऐसी हैं जिनका प्रयोग एकवचन में भी होता है और बहुवचन में भी।

जैसे – बालक जा रहा है– बालक जा रहे हैं।

ऐसे ही दो अन्य संज्ञा शब्द ढूँढकर उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए।

3. नीचे दिए गए वाक्यों को बहुवचन में बदलिए

क. आम पका हुआ है।

ख. आदमी सुन रहा है।

ग. साधु ध्यानमग्न बैठा है।

4. पाठ में आए निम्न मुहावरों का वाक्य में प्रयोग कीजिए।

फूट–फूटकर रोना, बाल की खाल निकालना, थैली गरम करना, आँखें खुलना।

5. निम्न शब्दों के दो–दो पर्यायवाची शब्द लिखिए और उनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

घर, आँख, हाथ, पुत्र, पैर।

6. निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक–एक शब्द लिखिए –

जैसे – जो कभी नहीं मरता – अमर

क. जिसका पति मर गया हो –

ख. जिसका कोई नहीं हो –

ग. जो मरे हुए के समान हो –

घ. जिसका कोई सहारा न हो–

ङ. जिसकी तुलना न की जा सके –

7. आपने स्वर और व्यंजन पढ़े हैं। अ, आ, इ, ई, उ, ऊ,ऋ, ए, ऐ, ओ, औ ये ग्यारह स्वर हैं।

क, ख,ग ....आदि व्यंजन हैं।

8. इन शब्दों को पढ़िए –

अपना, उठा, आप, इस, ओर, एक, ऊपर, ओस।

इन शब्दों में आप देखेंगे/देखेंगी कि कहीं भी दो स्वर एक साथ नहीं आए हैं।

आए, आओ शब्द में दो स्वर वर्ण एक साथ आए हैं।

आप ऐसे चार शब्द सोचकर लिखिए जिनमें दो स्वर एक साथ आए हों।

9. इन शब्दों की रचना समझिए –

वहीं – वहाँ + ही

कहीं – कहाँ + ही

आप इसी प्रकार इन शब्दों की रचना लिखिए –

तभी, सभी, तुम्हीं, अभी, कभी।

10. निर्धन व्यक्ति के दैनिक जीवन पर दस वाक्य लिखिए।

योग्यता विस्तार–

1. जमींदारी प्रथा के बारे में अपने अध्यापक/अध्यापिका से पूछकर जानकारी प्राप्त कीजिए।

2EC8KX

2. जमींदारी प्रथा, सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक विकास में बाधक थी। हमारे आस–पास इसी तरह की कई कुप्रथायें आज भी प्रचलित हैं, जो हमारे समाज के विकास में अवरोध उत्पन्न करती हैं। ऐसी किसी एक कुप्रथा के बारे में पता करके साथियों से चर्चा कीजिए।

3. ''एक टोकरी भर मिट्टी'' जैसी ही कोई कहानी शिक्षक की मदद से ढूँढकर पढ़िए।

●●●

सड़क चिन्ह एवं सड़क संकेत

जेब्रा क्रासिंग (ZEBRA CROSSING) – चौंक-चौराहों पर पैदल यात्रियों के सुरक्षित रोड क्रासिंग हेतु बनी सफेद रंग की पट्टी होती है जिससे होकर पैदल यात्री सड़क के एक छोर से दूसरे छोर जाने के लिए उपयोग करता है। चौंक में जब सिग्नल रेड लाईट हो एवं सभी गाड़िया स्टॉप लाईन पर रूका हुआ हो तभी जेब्रा क्रासिंग का उपयोग करना चाहिए।

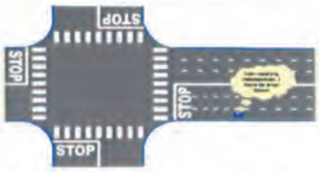

स्टॉप लाईन (STOP LINE) – स्टॉप लाईन जेब्रा क्रासिंग के पहले सफेट रंग की पट्टी/लाईन बनी होती है। चौंक पर जब रेड लाईट सिग्नल हो तब वाहन चालक को उसी स्टॉप लाईन के पहले रूकना होता है ताकि पैदल यात्री जेब्रा क्रासिंग से सुरक्षित सड़क पार कर सके।

ऐज मार्किंग (EDGE MARKING)- सड़क के किनारे पीले या सफेद रंग की पट्टी बनी होती है जिसका उद्देश्य सड़क किनारे वाहन पार्क नही करना और न ही रूकना होता है। यदि यही रेखा खंडित है तो वाहन रोक सकते है, किन्तु पार्किंग नही कर सकते।

पाठ–3
हेलन केलर

–संकलित

आम तौर पर देखा गया है कि भिन्न क्षमताओं वाले बच्चे या युवा अपने जीवन से निराश होकर अकर्मण्य हो जाते हैं किन्तु विश्व इतिहास में ऐसे भी उदाहरण मिल जाएँगें जहाँ भिन्न क्षमताओं वाले बच्चों ने सामान्य बच्चों की अपेक्षा अधिक क्षमता से न केवल सामान्य जीवन जिया वरन् महान कार्य भी किए। अमेरिका की एक अंधी–बहरी महिला, हेलन केलर ऐसी ही महान् विभूति थी। उन्होंने अपने कठोर श्रम, दृढ़ इच्छा शक्ति से वे असाधारण कार्य किए जो दो आँखें और दो कान रखने वाले करोड़ों लोग नहीं कर पाए। आइए इस पाठ में हम उस कर्मठ महिला का जीवन परिचय पढ़ें।

अमेरिका की सुप्रसिद्ध महिला, हेलन केलर का जन्म 27 जून, सन् 1880 में हुआ था। अंधी और बहरी होते हुए भी इस महिला ने उच्च शिक्षा प्राप्त की और फिर दीनदुखियों की सेवा में अपना जीवन अर्पित कर दिया। आज इस महिला को सारा संसार जानता है। हेलन जन्म से तो अंधी, गूँगी और बहरी नहीं थी, डेढ़ वर्ष की अवस्था तक वह भी दूसरे बच्चों की तरह देख–सुन सकती थी। कुछ–कुछ तुतलाकर बोलने भी लगी थी, पर वह अकस्मात् बीमार हो गई। बीमारी से तो उसकी जान बच गई, पर आँख, कान और वाणी वह सदा के लिए खो बैठी।

हेलन अन्य बच्चों की अपेक्षा अधिक बुद्धिमती थी। उसमें विलक्षण प्रतिभा थी, पर बेचारी अपने अनुभवों को प्रकट करने में बिल्कुल असमर्थ थी। उसे अपनी असमर्थता पर बड़ी झुँझलाहट होती थी। कभी–कभी वह अपने छोटे भाई–बहिनों को बुरी तरह मार बैठती थी या फिर दुखी होकर अपने आपको ही किसी–न–किसी तरह दंड दिया करती थी।

हेलन का दुख उसके माता–पिता से नहीं देखा गया। उन्होंने काफी सोच–विचार के बाद उसे अंधे–बहरों के स्कूल में भर्ती कराने का निश्चय किया। दैवयोग से बोस्टन की अंध–बधिर शाला में सलीवन नाम की एक योग्य अध्यापिका उन्हें मिल गई। सलीवन बहुत ही संवेदनशील थी'। उन्होंने खुद भी अंधेपन का दुख भोगा था और आपरेशन के बाद कुछ दिनों पहले ही दृष्टि प्राप्त की थी। इसलिए वे हेलन के दुख को समझ सकती थीं। उन्होंने उसकी देख–रेख और शिक्षा का भार सहर्ष अपने कंधों पर ले लिया और हेलन के दुखों को दूर करने का उपाय सोचने लगीं, पर हेलन को समझाने और उसके मन की बात समझने का कोई उपाय उन्हें नज़र नहीं आया। इससे सलीवन को बड़ी निराशा हुई। जिस दायित्व को उन्होंने स्वीकार किया था, उसे पूरा करने का वे सदा प्रयत्न करती रहीं।

हेलन को अपनी गुड़िया बहुत प्यारी थी। वह उससे पल भर भी जुदा नहीं होना चाहती थी। सलीवन ने एक दिन हेलन की हथेली पर उँगली से डॉल (गुड़िया) शब्द लिखा। हेलन को उँगलियों का यह खेल बड़ा पसंद आया। वह फौरन अपनी माँ के पास गई। उसने वैसा ही डॉल (गुड़िया) शब्द लिखा। यह देखकर हेलन की शिक्षिका फूली न समाई। उन्हें जिस उपाय की खोज थी वह आज अनायास ही मिल गया। अब सलीवन उसे नित नए शब्द सिखाने लगीं। हेलन ज्यों–ज्यों नए शब्द सीखती, त्यों–त्यों अधिक सीखने की उसकी जिज्ञासा बढ़ती जाती। वह अपने संपर्क में आनेवाली हर एक

चीज़ का नाम जान लेना चाहती थी। हेलन ने उन दिनों का वर्णन करते हुए अपनी आत्मकथा में लिखा है–''ज्यों-ज्यों मैं सीखती जा रही थी, दुनिया, जिसमें मैं रहती थी, मुझे अधिक सुखमय और आकर्षक नज़र आती जा रही थी।''

धीरे-धीरे सलीवन ने हेलन को अंध लिपि (ब्रेल) भी सिखा दी। अब क्या था ? हेलन ने अपना सारा समय लिखित साहित्य को पढ़ने में लगा दिया। वह खाना-पीना भूलकर रात-दिन इस लिपि में लिखे साहित्य को पढ़ा करती। दैवयोग से एक दिन उसकी वाचा भी खुल गई। एक दिन यकायक उसके मुँह से कुछ टूटे-फूटे शब्द निकल पड़े जिसका आशय था 'आज बड़ी गर्मी है।' हेलन की वाणी सुनकर अन्य लोगों को तो प्रसन्नता हुई ही, पर हेलन के जीवन का वह सबसे सुखी दिन था। हेलन ने इसका उल्लेख भी अपनी जीवनी में किया है। वह लिखती है-''उस दिन मेरे हृदय में जितना आनंद और उल्लास उमड़ा, उतना शायद ही किसी बालक के जीवन में कभी उमड़ा हो।''

इस अध्ययनशील बालिका ने घर की पढ़ाई पूरी करके अपनी शिक्षिका की सहायता से कैम्ब्रिज स्कूल में प्रवेश किया। आश्चर्य की बात है कि स्कूल की पढ़ाई करने के अलावा उसने केवल दो वर्ष में ही अँग्रेजी, जर्मन और फ्रेंच भाषाओं पर भी अच्छा काबू पा लिया। स्कूल की पढ़ाई पूरी करके हेलन ने कॉलेज में प्रवेश किया। कॉलेज में भी उसने कठिन परिश्रम किया और सन् 1904 में बी. ए. की परीक्षा पास कर ली। उल्लेखनीय बात यह है कि परीक्षा में हेलन प्रथम श्रेणी में पास हुई। पढ़ाई पूरी करके हेलन ने लिखना शुरू किया। ब्रेल लिपि में उसने 'मेरी आत्मकथा' आदि एक के बाद एक पूरी नौ पुस्तकें लिखीं। ये पुस्तकें विश्व-साहित्य की अमूल्य निधि हैं।

हेलन को प्रकृति से बड़ा प्रेम था। यद्यपि वह वसंत के खिले फूलों को और लहरों पर थिरकती चाँदनी को देख नहीं सकती थी पर उनका मन-ही-मन अनुभव अवश्य करती थी। प्रकृति उसे कैसी लगती है और उसका उसके अंतर्मन पर क्या प्रभाव पड़ता है, इसका उसने अपनी पुस्तकों में विस्तार से उल्लेख किया है। हेलन को नाव खेने, तैरने और घुड़सवारी करने का भी शौक था। वह शतरंज और ताश भी खेल लेती थी। एक बार यौवनकाल में हेलन ने विवाह करने और घर-गृहस्थी बसाने का विचार किया था, पर शीघ्र ही उसे अपनी भूल मालूम हो गई और विवाह का विचार त्यागकर उसने अपने आपको समाज-सेवा के काम में लगा दिया।

सबसे पहले उसने अनाथालय के अंधे-बहरे बच्चों की सेवा करने का काम शुरू किया। फिर 'मिल्टन अंध सोसाइटी' नामक एक संस्था कायम करके अंधे विद्यार्थियों के लिए ब्रेल लिपि में उपयोगी साहित्य प्रकाशित करने की व्यवस्था की।

इसके पश्चात् हेलन ने विश्व-यात्रा प्रारंभ की। पहले उसने यूरोप की यात्रा की, फिर वह आस्ट्रेलिया, कनाडा, मिस्र, जापान, दक्षिणी अफ्रीका, भारत इत्यादि देशों में घूमी। उसकी यात्रा का एकमात्र उद्देश्य था, विभिन्न देशों के अंधे-बहरे लोगों के जीवन में आशा और उत्साह का संचार करना। वह इस पवित्र उद्देश्य को लेकर जहाँ कहीं गई, उसका यथेष्ट आदर हुआ। उसकी

सेवाओं से आज सारा संसार उसके चरणों में श्रद्धानत है । एक अंधी–बहरी महिला इतना सब कर सकती है, यह बात आसानी से समझ में नहीं आती, पर जैसा कि किसी ने कहा है–'सत्य घटनाएँ कल्पित किस्सों से अधिक आश्चर्यजनक होती हैं ।' यह बात हेलन के जीवन पर हू–ब–हू लागू होती है ।

टीप–ब्रेल लिपि– **ब्रेल लिपि दृष्टिहीनों को शिक्षा देने के लिए बनाई गई वह विशेष लिपि है जिसमें मोटे कागज़ पर सूजे से छेदकर ध्वनिसूचक बिंदियाँ बनाई जाती हैं । पलटकर उन उभरी हुई बिंदियों को उँगलियों के स्पर्श से पढ़ा जाता है । इसका आविष्कार लुई ब्रेल ने किया था।**

शब्दार्थ – **सुप्रसिद्ध** – मशहूर, विख्यात, **अर्पित करना** – देना, **विलक्षण** –विशेष लक्षण से मुक्त, **प्रतिभा** – विलक्षण बुद्धि, **बोस्टन** – अमेरिका का अभाव, **अनायास** – बेवजह, **जिज्ञासा** – जानने की इच्छा, **फौरन** – तुरन्त, **दैवयोग** – देवताओं की कृपा से, **यकायक** – अकास्मात्, **उल्लास** –प्रसन्नता, आनन्द, **परिश्रम** – मेहनत, **यथेष्ट** – जितना चाहिए उतना, काफी।

अभ्यास

पाठ से

1. हेलन केलर कौन थी?
2. हेलन केलर ने अपनी पढ़ाई किस विद्यालय से प्रारंभ की थी एवं उन्होंने किस कक्षा तक शिक्षा प्राप्त की?
3. सलीवन हेलन के दुःख को क्यों समझ सकती थी?
4. सलीवन ने हेलन के मन की निराशा को कैसे दूर किया?
5. सलीवन की प्रेरणा से क्या सीख/शिक्षा मिलती है?
6. हेलन के जीवन का सबसे सुखी दिन कौन सा था?
7. विशिष्ट क्षमता हासिल करने के बाद अपने सुखद अनुभवों के बारे में हेलन ने अपनी जीवनी में क्या लिखा?
8. हेलन ने समाज सेवा के कौन से कार्य किए?
9. सलीवन ने हेलन को शब्द लिखना कैसे सिखाया?
10. ब्रेल लिपि क्या है?
11. पढ़ाई के अलावा हेलन के कौन–कौन से शौक थे? उसका किन–किन भाषाओं पर अधिकार था?
12. हेलन केलर ने दिव्यागों की सेवा के लिए किस सोसायटी की स्थापना की? इसकी स्थापना के उद्देश्य क्या थे?
13. हेलन का जीवन शारीरिक रूप से बाधित लोंगो को क्या प्रेरणा देता है?
14. हेलन झुंझलाहट में क्या करती थी?
15. 'ज्यों–ज्यों मैं सीखती जा रही थी, दुनिया, जिसमें मैं रहती थी, मुझे अधिक सुखमय और आकर्षक नजर आती जा रही थी'। हेलन के इस कथन का क्या आशय है?
16. 'सत्य घटनाएँ कल्पित किस्सों से अधिक आश्चर्यजनक होती हैं।' इसका क्या आशय है?

पाठ से आगे

1. यदि हेलन स्वयं पर ईश्वर का प्रकोप मानकर निष्क्रिय पड़ी रहती तो क्या होता? सोचकर लिखिए।
2. शारीरिक रूप से अक्षम लोगों के लिए क्या–क्या सुविधाएँ होनी चाहिए?
3. शारीरिक रूप से बाधित लोग सहानुभूति के पात्र होते हैं या समान अवसर पाने के? अपने विचार लिखिए।

2EUZP8

4. हेलन के सफल होने में उसकी शिक्षिका सलीवान की महत्वपूर्ण भूमिका थी? अगर सलीवान न होती तो क्या हेलन वो सब कर पाती जो उसने किया?
5. 'आत्मविश्वास और सच्ची लगन से जो कार्य प्रारंभ किया जाता है, उसमें व्यक्ति को अवश्य सफलता मिलती है।' हेलन के जीवन को दृष्टि में रखते हुए इस कथन को सिद्ध कीजिए।

भाषा से

1. दिए गए उपर्युक्त कारक चिह्नों को खाली स्थानों में भरिए –

   (पर, को, ने, के, का)

   क. हेलन ....अपनी गुड़िया बहुत प्रिय थी।

   ख. सलीवन ....हेलन की हथेली पर ऊँगली से डॉल (गुड़िया) शब्द लिखा।

   ग. हेलन ....ऊँगलियों ....यह खेल बहुत पसंद आया। वह अपनी माँ ....पास गई।

   घ. धीरे–धीरे सलीवन ....हेलन ....ब्रेल लिपि सिखा दी।

   ङ हेलन को नाव खेने, घोड़े ....सवारी करने ....भी शौक था।

2EF4VQV

2. पाठ में ज्यों का त्यों, किसी न किसी, हू–ब–हू, मन–ही–मन आदि शब्द आए है। इन शब्दों के अर्थ ज्ञात कर इनका वाक्य में प्रयोग कीजिए।
3. (i) मैंने किताब माँग कर पढ़ी ।

   (ii) उसकी माँग में सिंदूर था।

   (i) सम संख्याओं का योग हमेशा सम संख्या ही होती है।

   (ii) योग करने से शरीर स्वस्थ रहता है।

   (i) नीचे दिए गए सवालों को हल करो।

   (ii) किसान हल से खेत जोतते है।

   ऊपर दिए गए वाक्यों में रेखांकित शब्द 'मांग' 'योग' और 'हल', अलग–अलग वाक्यों में भिन्न अर्थ प्रकट कर रहे हैं। जब कोई शब्द, एक से अधिक अर्थ प्रकट करता है तो वह 'अनेकार्थक' या 'अनेकार्थी' शब्द कहलाता है। नीचे कुछ अनेकार्थी शब्द दिए गए हैं। उनका अपने शब्दों में प्रयोग कीजिए–

(1) अंक	(2) काल	(3) गति	(4) वर्ण
(5) कर	(6) धन	(7) खर	(8) कनक
(9) घट	(10) उत्तर	(11) आम	(12) गुरू

4. भाषा का शुद्ध लेखन उसके शुद्ध उच्चारण पर निर्भर करता है। इसलिए भाषा के शुद्ध उच्चारण पर ध्यान देना बहुत आवश्यक है। नीचे कुछ त्रुटियाँ और उनके शुद्ध रूप दिए जा रहे हैं–

अशुद्ध		शुद्ध
कांच	–	काँच
मुनी	–	मुनि
पुर्ण	–	पूर्ण
घन्टा	–	घण्टा

अब आप नीचे लिखे शब्दों की वर्तनी को शुद्ध करके लिखिए।

हस्ताक्षेप, बिमारी, लहु, एनक, हिरन, कँगन, विस्वास, छुद्र, ग्रहस्थ, आर्शीवाद।

5. निम्नलिखित शब्दों के पयार्यवाची लिखिए –

रात, दिन, माता, फूल, ईश्वर।

योग्यता विस्तार

1. शारीरिक रूप से बाधित कई प्रसिद्ध कवि, लेखक, कलाकार और वैज्ञानिक हुए हैं। शिक्षक की सहायता से उनकी जीवनियाँ खोज कर पढ़िए।
2. लुई ब्रेल का जीवन परिचय खोज कर पढ़िए।
3. अपनी आँखो पर पट्टी बांधकर किसी अपरिचित वस्तु को छूकर उसे पहचानने का प्रयास कीजिए एवं उसके आकार, प्रकार के विषय में लिखिए।
4. कल्पना कीजिए की एक नेत्रहीन व्यक्ति के लिए दुनिया का स्वरूप कैसा होगा? अपने विचार लिखिए।

2FDRSI

पाठ – 4

दूँगी फूल कनेर के

2FMHU6

–श्री गंगाप्रसाद

इस कविता में कवि श्री गंगाप्रसाद जी ने भारतीय ग्रामीण जनजीवन की एक मोहक झाँकी प्रस्तुत की है। बालकों के मन के भावों को एक नन्हीं बालिका के माध्यम से अत्यंत सहजता एवं सजीवता के साथ चित्रित करते हुए कवि ने मानव की उस स्वार्थी प्रवृत्ति की ओर भी ध्यान दिलाया है, जो लालच में वृक्षों को काटने से तनिक भी नहीं हिचकता। सरल, सुबोध भाषा–शैली में गाँव की नन्हीं बालिका के मन के भावों को प्रकट करती हुई यह कविता अत्यंत प्रभावी बन गई है।

आना मेरे गाँव तुम्हें मैं
दूँगी फूल कनेर के ।

(1)

कुछ कच्चे, कुछ पक्के घर हैं,
एक पुराना ताल है ।
सड़क बनेगी, सुनती हूँ,
इसका नंबर इस साल है ।
चखते आना टीले ऊपर
कई पेड़ हैं बेर के ।
आना मेरे गाँव तुम्हें मैं
दूँगी फूल कनेर के ।

(2)

बाबा ने था पेड़ लगाया,
बापू ने फल खाए हैं।
भाई कैसे उसे काटने,
को रहते ललचाए हैं ?
मेरे बचपन में ही आए,
दिन कैसे अंधेर के ?
आना मेरे गाँव तुम्हें मैं
दूँगी फूल कनेर के।

(3)

खड़िया–पाटी, कॉपी–बस्ते
लिखना–पढ़ना रोज़ है।
खेलें–कूदें कभी न तो फिर,
यह सब लगता बोझ है।
कई मुखौटे तुम देखोगे,
मिट्टीवाले शेर के।
आना मेरे गाँव तुम्हें मैं
दूँगी फूल कनेर के।

(4)

हँसना–रोना तो लगता ही,
रहता है हर खेल में।
रूठे, कुट्टी कर ली लेकिन,
खिल उठते हैं मेल में।
मगर देखना क्या होता है,
मेरी चिट्ठी फेर के ?
आना मेरे गाँव तुम्हें मैं
दूँगी फूल कनेर के ।

शब्दार्थ :– **ताल**– तलाब, **ललचाना** – लुभाना, मोहित करना **मुखौटे** – पाटी, **चाक**–स्लेट, **कुट्टी** – अलग होना (घास का चारा)

अभ्यास

पाठ से

1. प्रस्तुत कविता में कौन अपने गाँव आने के लिए आमंत्रण दे रहा है?
2. बालिका अपने गाँव में बुलाने के लिए क्या–क्या प्रलोभन देती है?
3. कविता की किन पंक्तियों से बालिका का पर्यावरण प्रेम प्रकट होता है?
4. 'हँसना रोना तो लगता ही रहता है हर खेल में' कविता की इस पंक्ति का क्या आशय है?
5. 'कई मुखौटे' तुम देखोगे मिट्टी वाले शेर के। कविता की इस पंक्ति में **मुखौटे** और **मिट्टी वाले शेर** का किन अर्थों में प्रयोग हुआ है?
6. 'मेरे बचपन में ही आए दिन कैसे अंधेरे के'। बालिका ऐसा क्यों कह रही है?

पाठ से आगे

1. बालिका बता रही है कि इस साल उसके गाँव में सड़क बनेगी। सड़क के बन जाने से गाँव और वहाँ के लोगों के जीवन में क्या–क्या परिवर्तन हो सकते हैं? सोचकर लिखिए।
2. बालिका के भाई पेड़ को क्यों काटना चाहते हैं? पेड़ काटने के क्या नुकसान हैं? अपने विचार लिखिए।
3. गाँव में कुछ घर कच्चे और कुछ घर पक्के हैं? आपको कच्चा घर अच्छा लगता है या पक्का? कारण सहित लिखिए।
4. बालिका के गाँव में एक पुराना तालाब है। तालाब को अगर पाट दिया जाए तो उससे गाँव किस तरह प्रभावित होगा? विचारकर लिखिए।
5. कुट्टी करने की स्थिति कब आती है? आपने भी अपने किसी मित्र से कुट्टी अवश्य की होगी। उसकी वजह लिखिए और यह भी लिखिए कि फिर कब और कैसे आपकी पुनः दोस्ती हो गई।

2FWIVT

भाषा से

1. अपने शहर या गाँव का रोचक वर्णन करते हुए अपने मित्र को पत्र लिखकर वहाँ आने के लिए आमंत्रित कीजिए।
2. (अ) आना मेरे गाँव तुम्हें मैं, दूँगी फूल कनेर के
   कविता की इन पंक्तियों को गद्य में इस प्रकार लिखा जा सकता है–
   मेरे–गाँव आना, मैं तुम्हें कनेर के फूल दूँगी।
   अब आप भी कविता की किन्हीं आठ लाईनों को गद्य में परिवर्तित कर लिखिए।

2G6EXG

3. नीचे लिखे वाक्यों में रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए –

(अ) (i) कुतुबमीनार इतिहास से संबंधित इमारत है।

(ii) कुतुबमीनार ऐतिहासिक इमारत है।

(ब) (i) महात्मा पत्तों से बनी कुटिया में निवास करते हैं।

(ii) महात्मा जी पर्णकुटी में निवास करते हैं।

'इतिहास से संबंधित' के लिए 'ऐतिहासिक' तथा 'पत्तों' से बनी कुटिया के लिए 'पर्णकुटी' शब्द का प्रयोग किया जा सकता हैं। इस प्रकार भाषा में अनेक शब्दों के लिए एक शब्द का प्रयोग किया जा सकता है। इससे भाषा में संक्षिप्तता आती है तथा भाषा का सौंदर्य बढ़ जाता है। आप भी नीचे लिखे अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए और उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(1) जो कभी न मरे
(2) जिसकी उपमा न हो
(3) जिसका मूल्य न आँका जा सके
(4) जिसका अंत न हो
(5) सदा जीवित रहने वाला
(6) जो सब कुछ जानता हो
(7) जो कठिनाई से मिले।
(8) जो मांस खाता है।
(9) बहुत बोलने वाला
(10) नष्ट होने वाला

4. कविता की निम्न पंक्तियों को लय में पढ़िए।

मेरे बचपन में ही आए
दिन कैसे अंधेर के?
आना मेरे गाँव तुम्हें मैं
दूँगी फूल कनेर के

पढ़ते समय आप देंखेगे कि रेखांकित शब्द **अंधेर** के तथा **कनेर** के शब्द की तुकान्तता की वजह से कविता में लयात्मकता या गेयता आ गई है। आप भी दिये गये शब्दों से मिलते–जुलते तुक वाले पाँच–पाँच सार्थक शब्द लिखिए।

खेले, खाए, टीले, फूल, घर, गाँव।

5. 'क्रिया' व्याकरण का एक प्रमुख अंग है। साधारण अर्थ में इससे तात्पर्य है, कार्यों से संबंध होना। नीचे कुछ वाक्य दिए जा रहे हैं। इनके भाव के अनुसार खाली जगह को सही क्रिया शब्द से भरिए।

उदाहरण– **बच्चे आम के बगीचे के आसपास .... रहे थे ।**

बच्चे आम के बगीचे के आसपास मँडरा रहे थे ।

क. दिन भर साइकिल पर यात्रा करके राकेश जब घर आया तो वह ....

ख. अपनी माता जी को आता हुआ देखकर शिशु .... ।

ग. डाकू की आवाज़ सुनकर सब लोग .... ।

घ. किशोर तो बहुत कमज़ोर है, शिक्षक कुछ बात ज़ोर से बताते हैं तो वह ....।

6. **क. निम्नलिखित संज्ञाओं से क्रियाएँ बनाइए ।**

उदाहरण– पढ़ाई – पढ़ना

लिखाई, सिलाई, बुनाई, भराई, सजाई ।

ख. इन शब्दों के आधार पर संज्ञा से क्रिया बनाने के संबंध में आप क्या नियम बना सकते हैं ?

योग्यता विस्तार–

1. अपने घर और आसपास के बड़े बुजुर्गों से पूछ कर पता लगाइए कि आपके गाँव या शहर में उनके बचपन से अब तक क्या–क्या परिवर्तन हुए हैं? यह भी पता कीजिए कि उन परिवर्तनों से क्या–क्या फायदे नुकसान हुए हैं?

2. मुखौटे के बारे में आप क्या जानते हैं? इसका उपयोग कहाँ–कहाँ और क्यों होता है ? समूह में चर्चाकर लिखिए।

2GFAZ4

नीचे बनी तालिका में कुछ फूलों के अधूरे नाम दिए हुए हैं। उनके सही नाम बताइए । (कोष्ठक में दिए वर्णों से पूरे कीजिए । क्रम बाएँ से होगा)

(ल, र, ह, अ, व, बे, मों, ल, ल)

	ला				
	ग	रा			
सू		ज	मु	खी	
गु		मो		र	
	म		ता	श	
गु		ब	का		ली

2GP71R

पाठ – 5

बरखा आथे

लाला जगदलपुरी

लोगन मन कहिथे बदलाव ह हमर संसार के नियम हवय ! जेकर कारण से समय के साथ हमर धरती माता के रूप ह घलो बदलत रहिथे। कभू चारों खुँट गर्मी के दिन म रूखराई मन के पत्ता ह झर जाथे अऊ ठक–ठक लो दिखथे। त कभी चारो खुँट बरसात होय ला पानी ह भर जाथै। सुक्खा भुइयां म हरियाली छा जाथे। तब लगथे हमर सपना ह सिरतोन होगे। किसान अऊ बनिहार के मन खुशी ल चमक जाथे। करिया–करिया बादर देखके अइसन लगथे जइसे दुःख–पीरा के चिट्ठी ल बादर हरकारा बनके बरखा ल बुलाके लाए हवय। अउ जेकर कारण चारों खुँट आज जम्मो लोगन मन खुशी से झुमत हवय। किसम–किसम के साग–पान फरे–फूले हवय अऊ धरती के जम्मो जीव मन के प्यास आज बुझ जाथे।

खेती ल हुसियार बनाय बर
भुइयाँ म बरखा आथे।
जिनगी ल ओसार बनाय बर
भुइयाँ म बरखा आथे।
सोन बनाय बर माटी ल
सपना ल सिरतोन बनाय बर,
आँसू ल बनिहार बनाय बर
भुइयाँ म बरखा आथे।

बाजत रहिथे झिमिर–झिमिर
रोज चिकारा अस बरखा के।
बाजत रहिथे घड़–घड़–घड़
रोज नंगारा अस बरखा के।
खुसियाली के चिट्ठी लेके
बादर दुरिहा–दुरिहा जाथे,
करिया–करिया बादर ल
समझव हलकारा अस बरखा के।

जोत जोगनी के तारा अस
जुग–जुग बरथे अँधियारी म।
आसा, मन के, बिजली बन के
चम–चम करथे अँधियारी म।
मेचका मन के आरो मिलथे
कपस–कपस जाथे लइका हर,
हवा बही कस कभू उदुप ले
कहूँ खुसरथे अँधियारी म।

कहूँ तोरइ, तूमा, रमकेलिया
झूलत होवे बखरी म।
कहूँ करेला–कुँदरु अउ रखिया
फूलत होवे बखरी म।
कहूँ जरी ह लामे होही,
बरबट्टी ह ओरमे होही।
खुस होके लइका–पिचका मन
बूलत होही बखरी म।

अतका पानी दे तैं, जतका
जिनगी के बिस्वास माँगथे।
अतका पानी दे तैं, जतका
अन लछमी ह साँस माँगथे।
मोर देस के गाँव–गाँव ल
अतका पानी दे तैं बरखा,
जतका पानी पनिहारिन ल
तरिया तीर पियास माँगथे।

छत्तीसगढ़ी शब्द मन के हिन्दी अर्थ

भुइयाँ	=	भूमि, धरती	ओसार	=	शक्तिशाली
सिरतोन	=	सच,सत्य	बनिहार	=	मजदूर
चिकारा	=	सारंगी जैसा एक प्रकार का बाजा	हलकारा	=	संदेशवाहक
			जोगनी	=	जुगनू
आरो	=	आवाज,जानकारी	कपस जाथे	=	काँप जाते हैं
जरी	=	एक प्रकार का पौधा, जिसका सब कुछ सब्जी के काम में आता है।(खेंड़हा)	ओरमे होही	=	लटका होगा
			बूलत	=	घूमना
			अन	=	अन्न
बिसाबो	=	खरीदेंगे	फरिका	=	बाँस आदि से बना किवाड़

अभ्यास

पाठ से

1. बरखा आये के का कारण हवय ?
2. बरखा आये से जिनगी म का परभाव होथे ?
3. सपना ह सिरतोन कइसे बनथे ?
4. बरखा ह कोन–कोन रूप म बाजत हवय ?

5. कवि ह बादल ल हरकारा कस काबर कहे हवय ?
6. अंधियारी म बरत जोगनी ल कवि ह का जिनिस कहे हवय ?
7. लइका मन का कारण से कपसत हवय ?
8. कवि बरखा ले कतका पानी माँगत हे ?
9. खाल्हे लिखाय कविता मन के अर्थ लिखव–

(क) जिनगी ल ओसार बनाय बर भुइयाँ म बरखा आथे।

(ख) जतका पानी पनिहारिन ल तरिया तीर पियास माँगथे।

(ग) आसा मन के बिजली बन के चम–चम करथे अँधियारी म।

पाठ से आगे

2T3FHB

1. बरखा आये के पहिली अऊ बाद में कोन–कोन से रितु होथे ? तीनों रितु म कोन–कोन से अंतर देखे बर मिलथे ? कक्षा में बात करके लिखव।
2. किसान मन बरखा आये के पहिली किसानी करे बर कोन किसम से तइयारी करथें ? ओकर ले खेती बारी मां का लाभ होथे ?
3. बरखा रितु आये से हमर घर के चारों कोती बदलाव होथे जेमा झंझटहा अऊ सुघ्घर दुनो लागथे। अपन अनुभव ल लिखव।
4. कवि ह देस के गाँव बर काबर पानी मांगत हे अऊ ओकर से गाँव म का–का परभाव होही ?

भाषा से

2TCBIY

1. ओहर नदिया के तीर बैठे रहिस।

   इहाँ तीर के मायने 'पास' हवे। तीर के उल्टा शब्द दुरिहा हवे।

   अइसने किसम से खाल्हे लिखाय सब्द मन के अर्थ समझके हिंदी में उल्टा सब्द लिखव।

   बिस्वास, खुस, ओसार, बनिहार, सिरतोन, बिसाबो आदि।
2. "चम–चम करथे अँधियारी में" कविता के पंक्ति म चम–चम सब्द ह सँघरा दू बेर आये हवय।

   जब कोनो सब्द एक संघरा दू बेर आथे त ओला पुनरूक्ति सब्द कहे जाथे। चम–चम सब्द जइसन सँघरा सब्द ल पाठ ले छाँट के लिखव।
3. पाठ में पानी सब्द आये हवय जेकर मायने 'जल' होथे अऊ 'नीर' घलो कहिथे।

   भाषा म जेन सब्द मन के मायने समान होथे वोला पर्यायवाची सब्द कहे जाथे। अइसने परकार के सब्द मन के अर्थ समान होथे।

   जैसे– पानी–जल, नीर

   अइसने परकार से खाल्हे लिखाय सब्द मन के हिन्दी म अर्थ लिखके पर्यायवाची सब्द लिखव। सोन, बरखा, बिजली, फूल, लछमी, भुइयाँ।

योग्यता विस्तार

2TL7KL

1. हमर छत्तीसगढ़ में बरखा जइसन अलग–अलग तिहार उपर घलो कविता लिखे गेहे। ओमन ला खोज के पढ़व।
2. लक्ष्मण–मस्तुरिहा के गाये गीत "मोर संग चलव रे" ला सुनव अऊ कक्षा में गावव।
3. "मोर गँवई गाँव लागय बड़ सुघ्घर–सुध्घर सबके घर दुवार दिखत हवय उज्जर–उज्जर।"

   अइसने तुक मिलाके चार पंक्ति के कविता लिखव।

इन्हें भी जानें :–

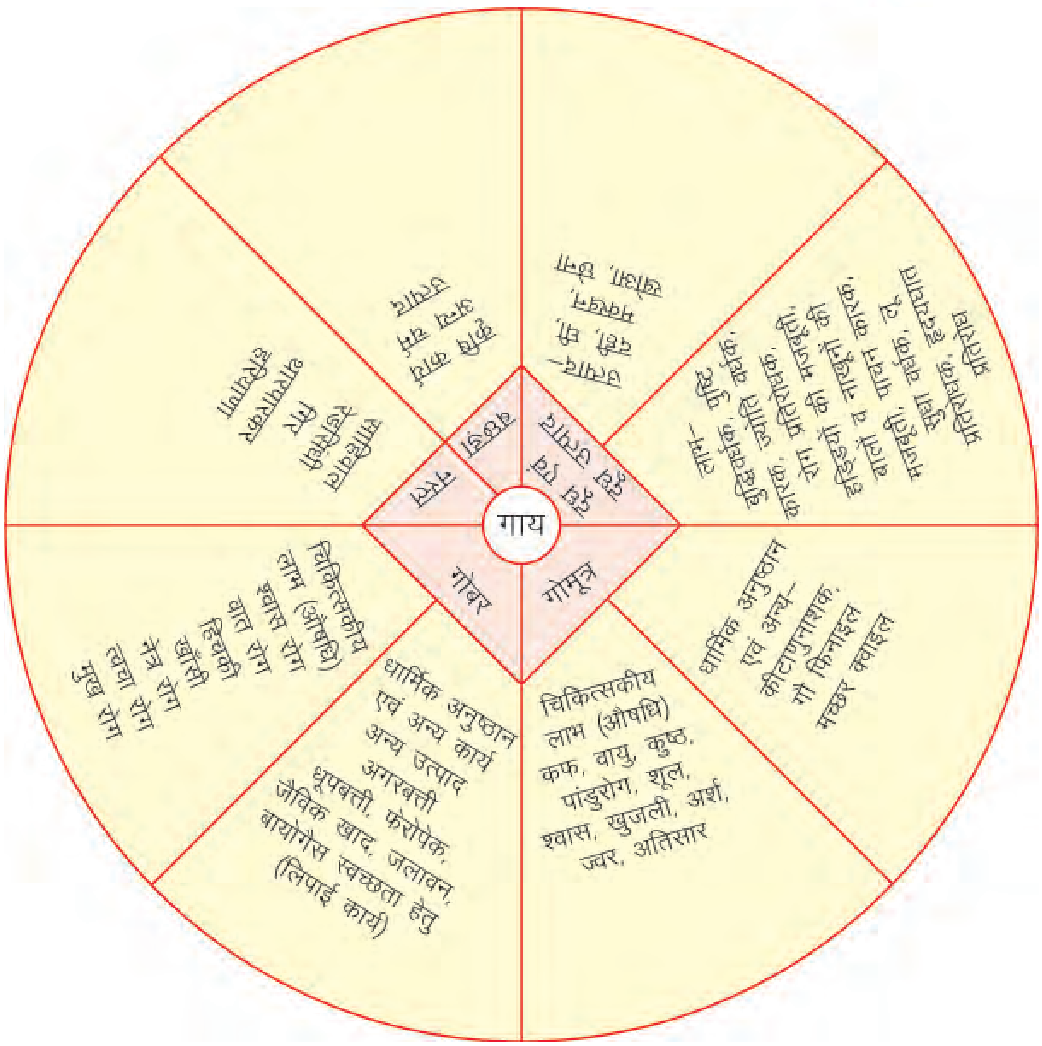

टीप– उपर्युक्त बिन्दुओं पर छात्र/छात्राओं से परिचर्चा, वाद–विवाद, लेखन आदि कराएँ।

2TV3H9

पाठ – 6

सफेद गुड़

– सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

प्रस्तुत कहानी बाल मन की उन सहज भावनाओं को व्यक्त करता है, जिसका विकास उसके घर, परिवेश और माँ के द्वारा सुनाई हुई कहानियों के जरिये हुआ हैं। माँ का यह कहना कि वे अकेले नहीं हैं, उनके साथ ईश्वर है, से आश्वस्त, विपन्नता से गुजरता हुआ वह ग्यारह वर्ष का बालक ईश्वर के एहसास के साथ जीता और ईश्वर के साथ के लिए अपनी तोतली जबान के समय से ही प्रार्थना, मंत्र पाठ में लगा रहता है। विश्वास और ईश्वर के साथ होने की यही सोच उसे सफेद गुड़ को पाने के लिए उत्साह से भर देती है, पर कहानी का अंत एक पीड़ा बोध की अनुभूति छोड़ जाता है, जब वह बालक अपनी छलछलायी आँखों से यह एहसास करता है कि "उसने ईश्वर से माँगा था, दुकानदार से नहीं। दूसरों की दया उसे नहीं चाहिए।"

दुकान पर सफेद गुड़ रखा था, दुर्लभ था। उसे देखकर बार–बार उसके मुँह में पानी आ जाता था। आते–जाते वह ललचाई नजरों से गुड़ की ओर देखता, फिर मन मसोसकर रह जाता ।

आखिरकार उसने हिम्मत की और घर जाकर माँ से कहा। माँ बैठी फटे कपड़े सिल रही थी। उसने आँख उठाकर कुछ देर दीन दृष्टि से उसकी ओर देखा, फिर ऊपर आसमान की ओर देखने लगी और बड़ी देर तक देखती रही। बोली कुछ नहीं। वह चुपचाप माँ के पास से चला गया। जब माँ के पास पैसे नहीं होते तो वह इसी तरह देखती थी। वह यह जानता था।

वह बहुत देर गुमसुम बैठा रहा, उसे अपने वे साथी याद आ रहे थे जो उसे चिढ़–चिढ़ाकर गुड़ खा रहे थे। ज्यों–ज्यों उसे उनकी याद आती, उसके भीतर गुड़ खाने की लालसा और तेज होती जाती। एकाध बार उसके मन में माँ के बटुए से पैसे चुराने का भी ख्याल आया। यह ख्याल आते ही वह अपने को धिक्कारने लगा और इस बुरे ख्याल के लिए ईश्वर से क्षमा माँगने लगा।

उसकी उम्र ग्यारह साल की थी। घर में माँ के सिवा कोई नहीं था। हालाँकि माँ कहती थी कि वे अकेले नहीं हैं, उनके साथ ईश्वर हैं। वह चूँकि माँ का कहना मानता था इसलिए उसकी यह बात भी मान लेता था। लेकिन ईश्वर के होने का उसे पता नहीं चलता था। माँ उसे तरह–तरह से ईश्वर के होने का यकीन दिलाती। जब वह बीमार होती, तकलीफ में कराहती तो ईश्वर का नाम लेती और जब अच्छी हो जाती तो ईश्वर को धन्यवाद देती। दोनों घंटों आँख बंद कर बैठते। बिना पूजा किए हुए वे खाना नहीं खाते। वह रोज सुबह–शाम अपनी छोटी–सी घंटी लेकर, पालथी मारकर संध्या करता। उसे संध्या के सारे मंत्र याद थे, उस समय से ही जब उसकी जबान तोतली थी। अब तो यह साफ बोलने लगा था।

वे एक छोटे–से कस्बे में रहते थे। माँ एक स्कूल में अध्यापिका थी। बचपन से ही वह ऐसी कहानियाँ माँ को सुनता था। जिनमें यह बताया जाता था कि ईश्वर अपने भक्तों का कितना ख्याल रखते हैं और हर बार ऐसी कहानी सुनकर वह ईश्वर का सच्चा भक्त बनने की इच्छा से भर जाता। दूसरे भी उसके पीठ ठोंकते, और कहते, 'बड़ा शरीफ लड़का है'। ईश्वर उसकी मदद करेगा। वह भी जानता कि ईश्वर उसकी मदद करेगा। लेकिन कभी इसका कोई सबूत उसे नहीं मिला था।

उस दिन जब वह सफेद गुड़ खाने के लिए बेचैन था तब उसे ईश्वर याद आया। उसने खुद को धिक्कारा, उसे माँ से पैसे माँगकर माँ को दुखी नहीं करना चाहिए था। ईश्वर किस दिन के लिए है? ईश्वर का ख्याल आते ही वह खुश हो गया। उसके अंदर एक विचित्र–सा उत्साह आ गया। क्योंकि वह जनता था कि ईश्वर सबसे अधिक ताकतवर है। वह सब जगह है और सब कुछ कर सकता है। ऐसा कुछ भी नहीं जो वह न कर सके। तो क्या वह थोड़ा–सा गुड़ नहीं दिला सकता? उसे, जो कि बचपन से ही उसकी पूजा करता आ रहा है और जिसने कभी कोई बुरा काम नहीं किया। कभी चोरी नहीं की, किसी को सताया नहीं। उसने सोचा और इस भाव से भर उठा कि ईश्वर जरूर उसे गुड़ देगा।

वह तेजी से उठा और घर के अकेले कोने में पूजा करने बैठ गया। तभी माँ ने आवाज दी, 'बेटा, पूजा से उठने के बाद बाजार से नमक ले आना।'

उसे लगा जैसे ईश्वर ने उसकी पुकार सुन ली है। वरना पूजा पर बैठते ही माँ उसे बाजार जाने को क्यों कहती। उसने ध्यान लगाकर पूजा की, फिर पैसे और झोला लेकर बाजार की ओर चल दिया।

घर से निकलते ही उसे खेत पार करने पड़ते थे, फिर गाँव की गली, जो ईंटों की बनी हुई थी, फिर बाजार की ओर चल दिया।

उस समय शाम हो गई थी। सूरज डूब रहा था। वह खेतों में चला जा रहा था, आँखें आधी बंद किए, ईश्वर पर ध्यान लगाए और संध्या के मंत्रो को बार–बार दोहराते हुए। उसे याद नहीं उसने कितनी देर में खेत पार किए, लेकिन जब वह गाँव की ईंटों की गली में आया तब सूरज डूब चुका था और अंधेरा छाने लगा था। लोग अपने–अपने घरों में थे। धुआँ उठ रहा था। चौपाए खामोश खड़े थे । नीम सर्दी के दिन थे।

उसने पूरी आँख खोलकर बाहर का कुछ भी देखने की कोशिश नहीं की। वह अपने भीतर देख रहा था जहाँ अँधेरे में एक झिलमिलाता प्रकाश था। ईश्वर का प्रकाश और उस प्रकाश के आगे वह आँखें बंद किए मंत्रपाठ कर रहा था।

अचानक उसे अजान की आवाज सुनाई दी । गाँव के सिरे पर एक छोटी–सी मस्जिद थी। उसने थोड़ी–सी आँखें खोलकर देखा। अँधेरा काफी गाढ़ा हो गया था। मस्जिद के एक कमरे बराबर दालान में लोग नमाज के लिए इकट्ठे होने लगे थे। उसके भीतर एक लहर–सी आई। उसके पैर ठिठक गए। आँखें पूरी बंद हो गईं। वह मन–ही–मन कह उठा, ईश्वर यदि तुम हो और सच्चे मन से तुम्हारी पूजा की है तो मुझे पैसे दो, यहीं, इसी वक्त।

वह वहीं गली में बैठ गया। उसने जमीन पर हाथ रखा। जमीन ठंडी थी। हाथों के नीचे कुछ चिकना–सा महसूस हुआ। उल्लास की बिजली–सी उसके शरीर में दौड़ गई। उसने आँखें खोलकर देखा। अँधेरे में उसकी हथेली में अठन्नी दमक रही थी। वह मन–ही–मन ईश्वर के चरणों में लोट गया। खुशी के समुद्र में झूलने लगा। उसने उस अठन्नी को बार–बार निहारा, चूमा, माथे से लगाया। क्योंकि वह एक अठन्नी ही नहीं था, उस गरीब पर ईश्वर की कृपा थी। उसकी सारी पूजा और सच्चाई का ईश्वर की ओर से इनाम था, ईश्वर जरूर है, उसका मन चिल्लाने लगा। भगवान मैं तुम्हारा बहुत छोटा–सा सेवक हूँ। मैं सारा जीवन तुम्हारी भक्ति करूँगा। मुझे कभी मत बिसराना। उल्टे–सीधे शब्दों में उसने मन–ही–मन कहा और बाजार की तरफ दौड़ पड़ा। अठन्नी उसने जोर से हथेली में दबा रखी थी।

जब वह दुकान पर पहुँचा तो लालटेन जल चुकी थी। पंसारी उसके सामने हाथ जोड़े बैठा था। थोड़ी देर में उसने आँख खोली और पूछा, क्या चाहिए?

उसने हथेली में चमकती अठन्नी देखी और बोला, 'आठ आने का सफेद गुड़।'

यह कहकर उसने गर्व से अठन्नी पंसारी की तरफ गद्दी पर फेंकी। पर यह गद्दी पर न गिर उसके सामने रखे धनिए के डिब्बे में गिर गई। पंसारी ने उसे डिब्बे में टटोला पर उसमें अठन्नी नहीं मिली। एक छोटा–सा खपड़ा (चिकना पत्थर) जरूर था जिसे पंसारी ने निकाल कर फेंक दिया।

उसका चेहरा एकदम से काला पड़ गया। सिर घूम गया। जैसे शरीर का खून निकल गया हो। आँखें छलछला आईं।

'कहाँ गई अठन्नी! पंसारी ने भी हैरत से कहा।

उसे लगा जैसे वह रो पड़ेगा। देखते–देखते सबसे ताकतवर ईश्वर की उसके सामने मौत हो गई थी। उसने मरे हाथों से जेब से पैसे निकाले, नमक लिया और जाने लगा।

दुकानदार ने उसे उदास देखकर कहा, 'गुड़ ले लो, पैसे फिर आ जाएँगे।

नहीं।' उसने कहा और रो पड़ा।

अच्छा पैसे मत देना। मेरी ओर से थोड़ा–सा गुड़ ले लो। दुकानदार ने प्यार से कहा और एक टुकड़ा तोड़कर उसे देने लगा। उसने मुँह फिरा लिया और चल दिया। उसने ईश्वर से माँगा था, दुकानदार से नहीं। दूसरों की दया उसे नहीं चाहिए।

लेकिन अब वह ईश्वर से कुछ नहीं माँगता।

शब्दार्थ :– **दुर्लभ**–जो कठिनता से मिल सके, जिले पाना सहज न हो, दुष्प्राप्य **गुमशुम** –चुपचाप अपने में खोया हुआ, **धिक्कारना**–तिरस्कार करना, लानत मलामत करना फटकारना **यकीन**–विश्वास, एतबार **नीम सर्दी**–हल्की **सर्दी** **दलान**–बरामदा, पोर्च **निहारना**–ध्यानपूर्वक देखना, टक लगाकर देखना, देखना ताकना **बिसारना**–भुला देना, स्मरण न रखना, ध्यान में न रखना **पंसारी**–किराने के व्यापारी या दुकानदार

अभ्यास

पाठ से

1. माँ के आसमान की तरफ देखने भर से बालक क्या समझ जाता था ?
2. बचपन से ही माँ बालक को कैसी कहानियाँ सुनाती थी ?
3. बालक के अंदर विचित्र सा उत्साह क्यों आ गया ?
4. अठन्नी मिलने पर बालक ने क्या किया ?
5. अठन्नी की जगह खपड़ा निकलने पर बालक पर क्या प्रभाव पड़ा ?
6. दुकानदार के प्यार से कहने पर भी बालक ने गुड़ लेने से इंकार क्यों कर दिया?
7. बालक को क्यों विश्वास था कि ईश्वर उसे जरूर गुड़ देगा ?

पाठ से आगे

1. माँ के बटुए से पैसे चुराने का ख्याल आने पर बालक स्वयं को धिक्कारता है। आप किस तरह के काम करने का ख्याल मन में आते ही स्वयं को धिक्कारते हैं? साथियों से चर्चा कर लिखिए।
2. बालक जिसे अठन्नी समझ कर गुड़ खरीदना चाह रहा था वह खपड़ा निकला

2U4YNH

दुकानदार उसकी परेशानी को समझते हुए उसे गुड़ देना चाहता है पर बालक मुफ्त में गुड़ लेने से इंकार कर देता है। आप उस स्थान पर होते तो क्या करते और क्यों? लिखिए ?

3. बालक ईश्वर से सफेद गुड़ पाने की चाहत रखता है। आप सभी को अगर मौका मिले तो ईश्वर से क्या पाना चाहेंगे? आपस में बातचीत कर अपनी भावना को व्यक्त कीजिए।
4. बालक माँ की परिस्थिति को समझते हुए उसे दुःखी नहीं करना चाहता था। जब हम किसी चीज को पाने या लेने की जिद अपने माँ–पिता से करते हैं तो क्या हम उनकी स्थिति को समझते हैं, कक्षा में चर्चा कर लिखिए।
5. राह में चलते हुए अगर आपको १०० रुपए मिल जाए तो आप क्या करना चाहेंगे? साथियों से चर्चा कर लिखिए।

भाषा से

1. पाठ का शीर्षक है। सफेद गुड़ इसी तरह से पाठ में **फटे** कपड़े, **गाढ़ा अँधेरा, चमकती** अठन्नी, **छलछलाई** आँखें, **झिलमिलाता** प्रकाश, **दीन** दृष्टि शब्दों का प्रयोग हुआ है। रेखांकित शब्द संज्ञा या सर्वनाम शब्द की विशेषता बताने के कारण विशेषण के उदाहरण हैं। आप पाठ में इसी प्रकार से प्रयुक्त विशेषण के उदाहरणों को ढूंढ कर लिखिए।

2UDUQJ

2. सबसे ताकतवर ईश्वर, एकदम से काला पड़ना, बहुत छोटा सेवक प्रविशेषण के उदाहरण हैं, अर्थात कभी–कभी विशेषणों के भी विशेषण बोले और लिखे जाते हैं। जो शब्द विशेषण की विशेषता बताते हैं, वे प्रविशेषण कहलाते हैं। आप पाठ को पढ़ते हुए प्रविशेषण के कुछ उदहारणों को खोजिए और कुछ नए शब्द भी बनाइए।
3. निम्नलिखित अवतरण के रिक्त स्थानों को कोष्टक में दिए गए सटीक शब्दों से भरिए ताकि कहानी का वही भाव और सन्दर्भ अभिव्यक्त हो जैसा कि पाठ में उल्लिखित है ————————(अकस्मात/अचानक) उसे अजान की —————— (पुकार/आवाज) सुनाई दी । गाँव के ———(सिरे/बीच) पर एक छोटी–सी मस्जिद थी। उसने थोड़ी–सी आँखें ———————(फाड़कर/खोलकर) देखा। अँधेरा काफी——————— (चढ़ा/गाढ़ा) हो गया था। मस्जिद के एक कमरे बराबर —————— (ढलान/दालान) में लोग नमाज के लिए—————— (इकट्ठे/जमा) होने लगे थे। उसके भीतर एक —————(ज्वाला/लहर)–सी आई। उसके पैर ——————(जम/ठिठक) गए। आँखें पूरी बंद हो गईं। वह———————(चीख–चीख कर/मन–ही–मन) कह उठा, ईश्वर यदि तुम हो और सच्चे मन से तुम्हारी——(प्रार्थना/पूजा) की है तो मुझे ————— (दौलत/पैसे) दो, यहीं इसी वक्त।

योग्यता विस्तार

1. अलग–अलग धर्मों की पूजा पद्धतियों के बारे में शिक्षक तथा साथियों से चर्चा कर उनमें निहित सामानता को लिखिए।
2. गुड़ बनाने के कौन–कौन से तरीके हैं और इसका निर्माण किन चीजों से होता है? घर और समाज के बड़े–बुजुर्गों से पूछ कर लिखिए और कक्षा में चर्चा कीजिए।

2UHQS7

2UWLTU

पाठ – 7

समय नियोजन

– श्री समर बहादुर सिंह

प्रस्तुत पाठ में लेखक श्री समर बहादुर सिंह ने मानव जीवन के लिए समय नियोजन की आवश्यकता तथा उसके महत्व को बताते हुए स्पष्ट किया है कि अपनी व्यस्तता का प्रदर्शन करने वाले ही समय के अभाव का बहाना बनाते हैं। वास्तव में जो अपने कर्म के प्रति निष्ठावान होते हैं, वे अत्यधिक व्यस्त रहते हुए भी, अपने सभी कार्यों के लिए समय निकाल ही लेते हैं। गाँधी जी और नेहरू जी का उदाहरण देते हुए लेखक ने विद्यार्थियों को भी समय नियोजन हेतु प्रेरित किया है। जीवन में सुख, समृद्धि और सफलता उन्हीं को मिलती है जो समय की कद्र करते हैं।

हम अक्सर शिकायत किया करते हैं–समय के अभाव की, समय न मिलने की। पत्र का उत्तर न दे सका–समयाभाव के कारण; कसरत नहीं कर सकता, समय न मिलने के कारण। किंतु यदि हम सही ढंग से आत्म–विश्लेषण करें तो हम पाएँगे कि हमारी ये शिकायतें अक्सर गलत होती हैं। हम अपने को समझ नहीं पाते और तभी ऐसी शिकायतें करते हैं। यह हमारा आलस्य है, जो सदैव समय के अभाव की दुहाई दिया करता है। वस्तुतः कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है, जो व्यस्तताओं के बीच भी उन कामों को न कर सके, जिसे वह करने पर उतारू है, जिसे करना वह अनिवार्य मानता है।

नेहरू जी कितना व्यस्त रहते थे ? भारत के प्रधानमंत्री के नाते उन पर कितना दायित्व था? कुछ दिन पहले उनके साथ काम करने वाले एक सज्जन से बात करने का सौभाग्य मिला। वे बताने लगे, नेहरू जी के पास रोज़ इतनी सारी फाइलें जाती थीं, किन्तु दूसरे दिन वे उन सभी को निपटाकर वापस भेज देते थे। जहाँ तक बस चलता, एक दिन भी देर न करते। ज़रा सोचिए उनकी व्यस्तता को, जो दिनभर न जाने कितने आदमियों से मुलाकात करते थे; कितनी गंभीर समस्याओं पर सहकर्मियों से विचार–विमर्श करते थे; कितनी सभा–सोसाइटियों में जाते थे, फिर भी वे अपने व्यस्त जीवन में से कुछ समय अपने दैनिक व्यायाम और मनोरंजन के लिए भी निकाल ही लेते थे।

गाँधी जी भी कम व्यस्त नहीं रहते थे। दर्शनार्थियों की भीड़ तो उन्हें घेरे ही रहती, मुलाकातियों का भी ताँता लगा रहता। देश–विदेश के अनेक पेचीदे मामलों पर विचार–विनिमय होता, अखबारों के लिए लेख लिखे जाते किन्तु फिर भी न तो गाँधी जी की प्रार्थना–सभा के समय में हेर–फेर होता और न उनके प्रातः भ्रमण में ही बाधा आती थी। यही नहीं, दुनिया के कोने–कोने से भेजे गए पत्रों का जवाब भी वे अक्सर हाथ से ही लिखकर देते थे।

गाँधी जी और नेहरू जी दोनों का जीवन प्रमाणित करता है कि यदि हम अपने समय को सोच-समझकर विभाजित कर लें और फिर उस पर दृढ़ता से आचरण करें तो अपने निश्चित व्यवसाय के अतिरिक्त भी अन्य अनेक कार्यों के लिए हमें पर्याप्त समय मिल जाएगा। समय की कमी की शिकायत फिर कभी नहीं रहेगी। हाँ, इसके लिए हमें सतत् सचेष्ट और जागरूक अवश्य रहना पड़ेगा।

किसी ने ठीक ही कहा है- समय धन के समान है। अतः सावधानी और सतर्कता से हम अपने धन के हिसाब से समय के प्रति थोड़ी ज़्यादा ही सावधानी बरतें। कारण, धन तो आता-जाता है किंतु गया समय फिर वापस नहीं आता। समय का बजट बनाना जिसने सीख लिया, उसने जीने की कला सीख ली, सुख और समृद्धि के भंडार की कुंजी प्राप्त कर ली।

हम जीवन में क्या चाहते हैं - सुख, समृद्धि,शांति, यही न ! किंतु ये चीजें तभी मिल सकती हैं जब हम इनको पाने का निरंतर प्रयास करते चलें। यदि हम व्यायाम के लिए, चिंतन के लिए, अध्ययन के लिए समय नहीं निकाल पाएँगे तो हमारा तन-मन कैसे स्वस्थ और सबल बन सकेगा? विषम परिस्थितियों में भी हम अपना संतुलन कैसे बनाए रख सकेंगे। अतः जीवन को सही अर्थ में सफल बनाने के लिए यह आवश्यक है कि हम इन सभी की साधना में रोज़ कुछ-न-कुछ समय लगाएँ यह तभी संभव हो सकेगा जब हम अपने समय का ठीक विभाजन कर लें, रोज़ उसका लेखा-जोखा करते रहें। वस्तुतः जो समय की कद्र करना सीख गया, वह सफलता का रहस्य समझ गया। हम अपने सुख, अपनी समृद्धि के लिए अपना समय-विभाजन जितना शीघ्र कर लें उतना ही अच्छा होगा क्योंकि किसी मनीषी ने यह चेतावनी पहले ही दे रखी है कि समय और लहरें किसी की प्रतीक्षा में खड़ी नहीं रहतीं।

वयस्कों की अपेक्षा विद्यार्थियों के लिए समय-पालन का कई कारणों से अधिक महत्व है। विद्यार्थियों को एक लंबा जीवन जीना है और सफलता की ऊँची-से-ऊँची मंजिलें तय करनी हैं। दूसरी बात यह है कि विद्यार्थी-जीवन में जो आदतें पड़ जाती हैं, वे जीवन पर्यंत बनी रहती हैं। विद्यालयों में छात्रों को समय-तालिका दी जाती है लेकिन वह केवल 5-6 घंटों के लिए होती है। 18-19 घंटे छात्रों के स्वयं विवेकपूर्ण उपयोग के लिए रहते हैं। यदि वे इस समय का सही उपयोग करें तो वे न केवल परीक्षा में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होंगे, बल्कि सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक कार्यक्रमों तथा खेलकूद, व्यायाम आदि के लिए भी पर्याप्त समय निकाल सकेंगे। समय तालिका बनाने के बाद उसका दृढ़ता और निष्ठा के साथ पालन करना भी आवश्यक है। निर्धारित समय पर निश्चित काम करने से ही जीवन में सफलता मिलती है।

शब्दार्थ :– **करसत** – व्यायाम, **आलस्य** – शिथिलता, सुस्ती, **दायित्व** – जिम्मेदारी, **विचार–विमर्श** – किसी समस्या पर विचारों का **आदान**–प्रदान (सलाह–मशवरा), **सोसाइटी** – समाज, **पेचीदे** – समस्यात्मक, **सचेष्ट** – चेष्टा के साथ, **साधना** – उपासना, (अभ्यास करना)

अभ्यास

पाठ से

1. समय नियोजन से लेखक का क्या तात्पर्य है?
1. समय के संबंध में लोगों की अक्सर क्या शिकायतें रहती हैं?
3. नेहरू जी अपने कार्यों का समय प्रबंधन कैसे करते थे?
4. गाँधी जी के समय नियोजन के बारे में अपने विचार लिखिए।
5. सुख, समृद्धि एवं शांति प्राप्ति का समय के साथ क्या संबंध है?
6. कठिन परिस्थितियों में भी अपना संतुलन बनाने के लिए हमें क्या करना चाहिए?
7. विद्यार्थियों के लिए समय नियोजन क्यों महत्वपूर्ण है?
8. समय विभाजन (नियोजन) के अनुरुप कार्य करने से क्या लाभ होता है?
9. धन तो आता–जाता रहता है किन्तु गया समय फिर से वापस नहीं आता। कथन को स्पष्ट कीजिए।

पाठ से आगे

2V6HVH

1. आप पठन–पाठन के लिए अपने समय का नियोजन किस प्रकार करते हैं? एक रूपरेखा बनाइये।
2. 'समय और लहरें किसी की प्रतिक्षा नहीं करती है। आप कोई ऐसी घटना बताइये, जिसमें समय निकल जाने के बाद आपको पछताना पड़ा हो।
3. अपने आस–पास के ऐसे लोगों के बारे में बताइये जिन्होंने कठिन परिस्थितियों के बाद भी समय की कद्र करके अपने को सफल बनाया तथा समाज में अपनी पहचान बनायी।
4. समय की कद्र न करने पर लोगों को कौन–कौन सी परेशानी हो सकती है? अपने साथियों से चर्चा कर लिखिए।
5. 'समय धन के समान है ', इस प्रसिद्ध वाक्य के संबंध में आपकी क्या राय है? लिखिए।
6. वस्तुतः कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जो व्यस्तताओं के बीच भी उन कार्यों को न कर पाए, जिसे करना वह अनिवार्य मानता है। आपने भी कभी न कभी ऐसा किया होगा उस कार्य के बारे में लिखिए।

भाषा से

2VFDX5

1. **नेहरू जी क्यों व्यस्त रहते थे?**
   हमारा तन मन कैसे सबल बन सकेगा?
   जब किसी वाक्य को पढ़ते, लिखते या सुनते समय प्रश्न पूछे जाने का बोध होता है तो उसे प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं। प्रश्न वाचक वाक्य के अंत में ''?'' प्रश्न वाचक चिह्न का प्रयोग किया जाता है।
   आप अपने साथियों के सहयोग से 10 प्रश्न वाचक वाक्यों का निर्माण कीजिए।
2. संस्कृत भाषा के जो शब्द ज्यों के त्यों हिन्दी भाषा में आये है उन्हें तत्सम शब्द कहते है तथा वे शब्द जो देश एवं परिस्थिति के अनुसार अपने नये रूप को प्राप्त हुए उसे तद्भव शब्द कहा जाता है।

जैसे –

तत्सम शब्द	तद्‌भव शब्द
कार्य	काम
अग्नि	आग
गृह	घर

इसी प्रकार आप अपने शिक्षक की सहायता से निम्नलिखित शब्दों का तद्‌भव रुप लिखिए–
आम्र, पद, चंद्र, रात्रि, सूर्य, ग्राम, दुग्ध।

3. 'नेहरू जी न मालूम कितनी सोसायटियों में भाग लेने जाते थे' इस वाक्य में 'सोसायटियों' शब्द के प्रयोग पर ध्यान दीजिए। यह अंग्रेजी भाषा के 'सोसायटी' का बहुवचन रुप है। अंग्रेजी में इसका बहुवचन 'सोसाइटीज' होता है लेकिन हिन्दी में हम इसे 'सोसाइटियों' लिखते हैं। हमने बहुत से विदेशी शब्दों को हिन्दी में अपना लिया है और उनका प्रयोग हिन्दी व्याकरण के अनुसार करते हैं। जैसे–
स्कूल का स्कूलों, कापी का कापियों, ट्रेन का ट्रेनों आदि।
आप अपने परिवेश में प्रचलित ऐसे शब्दों की सूची बनाइए जो अंग्रेजी भाषा के हैं किन्तु उनका प्रयोग हिन्दी के बहुवचन के नियमानुसार किया जाता है।

4. **निम्नलिखित शब्दों का संधि विच्छेद कीजिए –**
समयाभाव, आशातीत, विद्यार्थी, शिवालय, जगन्नाथ।

5. **निम्नांकित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए –**
क. गरम गाय का दूध अच्छा लगता है।
ख. एक फूलों की माला बनाइए।
ग. मेरे लिए ठंडी बरफ लाओ।
घ. मेरे को बाज़ार जाना है।
ङ. मेरे आँख से आँसू बहता है।

6. **क. निम्नांकित शब्दों में से मूल शब्द और प्रत्यय अलग-अलग कीजिए –**
आध्यात्मिक, आधारित, नैतिक, सामाजिक, हर्षित, मौलिक, सुभाषित।
ख. इस वाक्य को पढ़िए –
जैसे ही मैं स्टेशन पहुँचा, वैसे ही गाड़ी छूट गई।

7. **इसी प्रकार ज्योंही-त्योंही, जब-तब, यद्यपि-तथापि शब्दों का प्रयोग करते हुए एक-एक वाक्य बनाइए।**

8. **'समय की महत्ता' पर दस वाक्य लिखिए।**

योग्यता विस्तार

1. **सोचिए, यदि वार्षिक परीक्षा चल रही हो और आप समय से न पहुँचें, तो क्या होगा ?**
2. **आपको पढ़ना, लिखना, खेलना, टी.वी. देखना, गृह-कार्य करना, कम्प्यूटर सीखना है तथा शाला जाना है। ये सारे कार्य करने के लिए एक समय-तालिका बनाइए।**
3. **सोचिए, यदि प्रकृति अपने नियोजित समय के अनुसार न चले तो क्या होगा ?**

2VP9YS

पाठ – 8

मेरा नया बचपन

– श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान

बचपन की मधुर यादें हर उम्र में व्यक्ति को पुलकित और रोमांचित करती हैं। घर के बच्चों की शरारतों और बाल सुलभ क्रीड़ाओं से मन बरबस ही स्वयं के बचपन की मधुर स्मृतियों में खो जाता है। इस कविता में भी सुमद्रा कुमारी चौहान ने अपने बचपन की यादों को प्रस्तुत किया है जो उन्हें अपनी बेटी की गतिविधियों को देख कर याद आई हैं ऊँच–नीच और छलकपट रहित बचपन की उन्हें याद बार–बार आती है।

बार–बार आती है मुझको मधुर याद, बचपन तेरी।
गया, ले गया तू जीवन की सबसे मस्त खुशी मेरी ॥
चिंता रहित खेलना, खाना, वह फिरना निर्भय स्वच्छंद।
कैसे भूला जा सकता है, बचपन का अतुलित आनंद ॥
ऊँच–नीच का ज्ञान नहीं था, छुआछूत किसने जानी ?
बनी हुई थी अहा, झोंपड़ी और चीथड़ों में रानी ॥
किए दूध के कुल्ले मैंने, चूस अँगूठा सुधा पिया।
किलकारी कल्लोल मचाकर, सूना घर आबाद किया ॥

रोना और मचल जाना भी क्या आनंद दिखाते थे।
बड़े–बड़े मोती–से आँसू, जयमाला पहनाते थे ।
मैं रोई, माँ काम छोड़कर आई, मुझको उठा लिया।
झाड़–पोंछकर, चूम–चूम, गीले गालों को सुखा दिया ॥
आ जा बचपन ! एक बार फिर दे–दे अपनी निर्मल शांति।
व्याकुल व्यथा मिटाने वाली, अपनी वह प्राकृत विश्रांति ॥

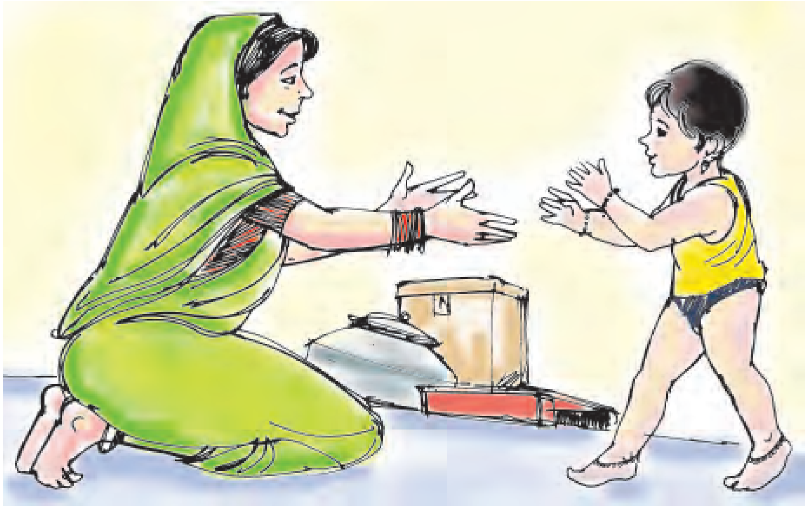

वह भोली-सी मधुर सरलता, वह प्यारा जीवन निष्पाप।
क्या फिर आकर मिटा सकेगा, तू मेरे मन का संताप ?
मैं बचपन को बुला रही थी बोल उठी बिटिया मेरी।
नंदन वन-सी गूँज उठी, वह छोटी-सी कुटिया मेरी ॥
'माँ ओ' कहकर बुला रही थी, मिट्टी खाकर आई थी।
कुछ मुँह में, कुछ लिए हाथ में, मुझे खिलाने आई थी ॥
पुलक रहे थे अंग, दृगों में कौतूहल था छलक रहा ।
मुँह पर थी आह्लाद-लालिमा, विजय गर्व था झलक रहा ॥
मैंने पूछा "यह क्या लाई ?" बोल उठी वह, "माँ काओ ।"
हुआ प्रफुल्लित हृदय खुशी से, मैंने कहा-"तुम्हीं खाओ।"
पाया मैंने बचपन फिर से, बचपन बेटी बन आया।
उसकी मंजुल मूर्ति देखकर मुझमें नवजीवन आया ॥
मैं भी उसके साथ खेलती-खाती हूँ, तुतलाती हूँ।
मिलकर उसके साथ स्वयं मैं भी बच्ची बन जाती हूँ ॥
जिसे खोजती थी बरसों से, अब जाकर उसको पाया।
भाग गया था मुझे छोड़कर, वह बचपन फिर से आया ॥

शब्दार्थ :- **निर्भर** – निडर, **स्वच्छद** – जो दूसरे के नियंत्रण में न रहे, स्वतंत्र, **अतुलित** – जिसकी तुलना न किया जा सकें, **कल्लोल** – आमोद-प्रमोद, क्रीड़ा, **किलकारी** – बच्चे की हर्ष ध्वनि, **व्याकुल** – विकल, बहुत घबराया हुआ, **विश्रांति** – आराम, आराम **निष्पाप** – पाप रहित, **संताप** – जलन, दु:ख, ग्लानि, **समृद्धि** – एश्वर्य, बहुत अधिक सम्पन्नता, **मनीषी** –ज्ञानी, विद्वान।

अभ्यास

पाठ से

1. इस कविता का शीर्षक 'मेरा नया बचपन' से क्या अभिप्राय है?
2. कवयित्री अपनी बेटी के साथ किस प्रकार बच्ची बन जाती है?
3. बेटी क्या खा कर आई थी और वह अपनी माँ से क्या कह रही थीं?
4. कवयित्री अपने बचपन का सुखद अनुभव कब करती है?

5. माँ किस उम्र की बात हमेशा दोहराती है?
6. बचपन की स्वच्छंदता, पाठ की किन पंक्तियों में अभिव्यक्त की गई है?
7. 'मंजूल मूर्ति देखकर, मुझमें नवजीवन आया' के द्वारा कवयित्री क्या कहना चाहती है?
8. बच्ची को मिट्टी खाते देखकर माँ नाराज क्यों नहीं होती है?
9. बचपन में हम किन चीजों से खेलना पसंद करते हैं?
10. ऊँच–नीच का ....'चीथड़ों में रानी' इन पंक्तियों के माध्यम से कवयित्री बच्चपन की किन बातों की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट कर रही हैं।

पाठ से आगे

1. छोटे बच्चों का घर में होना हमारे मन में कौन–कौन से भाव जागृत करता है। साथियों से चर्चा कर लिखिए।
2. कविता में हमने नन्हीं बिटिया और उसकी माँ के प्यार भरे संबंधों को जाना है। आप अपनी माँ के बारे में कैसा महसूस करते हैं? लिखिये।
3. कवयित्री कविता में बेटी के बचपन का उल्लेख करती है। हमारे आस–पास बेटियाँ का बचपन कैसा होता है? बेटों की तरह या उससे अलग। साथियों से चर्चा कर लिखिए।
4. आपको जीवन की कौन–सी अवस्था (बाल्यावस्था/युवावस्था/वृद्धावस्था) अच्छी लगती है और क्यों? सतर्क उत्तर दीजिए।
5. बचपन में हम किन–किन चीजों से खेलना पसंद करते हैं? साथियों से चर्चा कर लिखिए।
6. अक्सर बचपन में अधिकांश बच्चों की भाषा तोतली होती है। संभवतः आपकी भाषा भी वैसी रही होगी। अपने माता–पिता से इस बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए और इसे कक्षा में साथियों के साथ साझा कीजिए।
7. आम तौर पर बच्चे किसी चीज को बिना जाने समझे मुँह में डाल लेते हैं। संभवतः आपने भी ऐसा किया होगा यदि स्वयं आपको अपनी ऐसी कोई स्मृति हो तो लिखिए अथवा अपने माता–पिता से इस बारे में पूछकर लिखिए।
8. हम किसी छोटे बच्चे को देखकर स्वयं भी बचपन को पुनः जीना चाहते हैं। आपको क्या लगता है, इसके पीछे क्या कारण हो सकते हैं?
9. जैसा कि इस कविता का शीर्षक 'मेरा नया बचपन' है आप अपने अभिभावकों से इस बारे में बात कीजिए कि उन्हें अपने नये बचपन का एहसास कब और कैसे हुआ?

भाषा से

1. 'जय' शब्द में 'वि' जोड़कर 'विजय' शब्द बना है। वे शब्दांश जो किसी के पहले जुड़कर नया अर्थ प्रदान करते हैं, उपसर्ग कहलाते हैं, जैसे – वि+मल = विमल इसी तरह दिए गए शब्दों के पहले 'वि' उपसर्ग लगाकर नए शब्द बनाइए– नम्र, **शेष, देह, सर्ग, तान, कल, जय।**
2. विराम का अर्थ होता है–विश्राम या ठहराव। जब हम अपने भावों को बोलने या लिखने में प्रयोग करते हैं तो कुछ ठहरते है। इसी ठहराव को लिखते समय हम विराम चिन्हों के द्वारा प्रकट करते हैं।

   अल्प विराम (,), प्रश्न वाचक (?), निर्देशक चिन्ह (–), उद्धरण या अवतरण (" "), पूर्ण विराम (।), विराम चिन्हों सबसे ज्यादा प्रयुक्त होने वाले चिन्ह हैं –

   मैने पूछा, "यह क्या लाई?" बोल उठी वह "माँ काओ।"
   हुआ प्रफुल्लित हृदय खुशी से, मैंने कहा– "तुम्ही खाओं।"

   (इस प्रकार कविता में आए विराम चिन्हों को पहचानकर लिखिए।)

3. कविता की इन पंक्तियों को देखिए –

क. बड़े–बड़े मोती से आंसू।

ख. वह भोली सी मधुर सरलता।

ग. नंदन वन सी गूंज उठी वह।

इन पंक्तियों में सहज ही एक वस्तु की तुलना दूसरे से की गई है। काव्य में सुंदरता लाने के लिए इस तरह की युक्तियां प्रयोग में लाई जाती हैं। जब काव्य में किसी एक वस्तु की तुलना किसी दूसरी वस्तु से की जाती है तो उसे उपमा अलंकार कहते है। यह तुलना रूप, रंग, गुण, आकार के आधार पर की जाती है।

उपमा अलंकार में जिसका वर्णन किया जाता है या जिसको उपमा दी जाती है उसे उपमेय तथा जिस वस्तु से तुलना की जाए उसे उपमान कहते हैं।

सागर सा गंभीर हृदय हो।
गिरि सा ऊँचा हो जिसका मन।
यहाँ पर सागर और गिरि उपमान तथा हृदय तथा मन उपमेय है।

उपमा अलंकार के कुछ अन्य उदाहरण अपनी पाठ्यपुस्तक से खोज कर लिखिए।

4. '' मैं बचपन को बुला रही थी बोल उठी बिटिया मेरी'' कविता की इस पंक्ति में 'ब वर्ण की आवृति बार–बार हुई है। जिससे इस पंक्ति को पढ़ने में लयात्मकता का बोध होता है। इसका कारण अनुप्रास अलंकार का होना है। जब किसी वर्ण की आवृति बार–बार होती है। तो वहां अनुप्रास अलंकार होता है जिससे भाषा का सौदर्य बढ़ जाता है और उसमें लयात्मकता का गुण आ जाता है।

उदाहरण – चंदा चमके चम–चम चीखे चौकन्ना चोर।
चींटी चाटे चीनी चटोरी चीनी खोर।।

5. आप भी इस तरह के अन्य गीतों अथवा कविताओं की पंक्तियों को ढूँढकर लिखिए और उन्हें कक्षा में लय के साथ पढ़िए।

6. बचपन की अपनी कोई स्मृति जिसे याद कर आज भी आपको बहुत मजा आता है, के संबंध में एक अनुच्छेद लिखिए।

7. कविता में मधुर याद, प्यारा जीवन निस्पाप आदि विशेषण युक्त शब्दों का प्रयोग हुआ है। 'मधुर शब्द याद (क्रिया) की विशेषता बता रहा है। इसी प्रकार 'प्यारा' और 'निष्पाप' शब्द जीवन की विशेषता बता रहें है।

इस प्रकार किसी संज्ञा, क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं एवं वे शब्द जिसकी विशेषता बताते हैं, वे 'विशेष्य कहलाते हैं। कविता में प्रयुक्त विशेषण एवं विशेष्य को पहचानिए एवं निम्न सारणी में लिखिए।

विशेषण	विशेष्य
....	....

योग्यता विस्तार

1. भगवान श्रीराम अथवा श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं संबंधी पद को शिक्षक की मदद से पुस्तकालय से ढूँढकर लिखिए और उसमें वर्णित भाव पर चर्चा कीजिए।
2. बच्चों अथवा बचपन पर आधारित गानों को ढूँढकर सुनिए एवं उसमें निहित भाव को लिखिए।
3. कार्टून सीरियल 'डोरेमॉन' में सिनचैन और उसकी माँ के बीच किस तरह की नोक झोंक (बात–चीत) होती है? उसे लिखिए।

38V6KA

पाठ – 9

दू ठन नान्हे कहानी

मूल लेखक – डॉ.पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी
रूपांतर – लेखक मंडल

दू ठन नान्हे कहानी के भाव ल लेखक डॉ. पदुमलाल पुन्नालाल बक्शी ह छत्तीसगढ़ी म अनुवाद करे हवय। हीरा अऊ ओस के बूंद कहानी म बताय गेहे। सुंदरई म त्याग के भावना घलो होना चाही जेन अपन सुंदरई के घमंड करथे वोहा पथरा बरोबर कहे जाथे। वोहा ककरो काम नई आवय। कभू–कभू छोटे से जिनिस घलो ह बड़ काम आथे जेकर हिरदे म दया–मया के अमरित भरे रहिथे वोही ह सुघ्घर होथे। 'महतारी के रतन' कहानी म बताय गेहे कि हर संतान ह अपन महतारी, बाप के रतन बरोबर होथे। फेर लइका मन नई समझ सकय अऊ जौन दिन समझ जाथें वो दिन जिनगी बदल जाथे।

हीरा अउ ओस के बूँद

हीरा ह जतका सुग्घर होथे ओतके महँगा घलो होथे। अइसने सुग्घर अउ महँगा हीरा ल जंगल म परे–परे गजब दिन बीत गे । ओकर उपर कोनो मनखे के नजर नइ परिस, काबर के ओ हीरा के चारों–खुँट म काँदी जाम गे रहय। काँदी के एक ठन पत्ता ह ओकर उपर ओरमे रहय। काँदी के पत्ता म परे ओस के बूँद ह बड़ नीक लागत रहय। जब हवा म काँदी ह हाले,तब ओस के बूँद ह मोती कस चमके लागय। अइसे लागे जइसे हीरा–मोती दूनो ह एके जघा सकला गे हवँय। ये झाँकी ल देख के एक ठन बड़े जन झिंगुरा ह हीरा ल कहिथे–"हे महराज ! मोर असन छोटे जीव के उपर तुँहर किरपा बने रहय।" अपन ल 'महराज' कहत सुन के हीरा ह घमंड म फुलगे। झिंगुरा ह फेर कहिथे–'महराज',काँदी के उपर चमकइया जिनिस ह तुँहर कोनो सगा –सहोदर लागत हे। ये कोन आय ?" ये बात ल सुन के हीरा के जीव बगिया गे । ओ ह रिस म झिंगुरा ल कहिथे–"तोला मँय बुधमान समझत रेहेंव,फेर तँय तो निचट भोकवा हस । अरे झिंगुरा मोर कुल ह बड़ उँच हावे, अउ ये ओस के बूँद ह तो भिखमंगा आय। एखर पटंतर तँय मोला देखत हवस रे । जा भाग जा, ईंहा ले । दूनों झन भिखमंगा आव।" हीरा के रिस ल देख के झिंगुरा ह सकपका गे । आधा डर अउ आधा बल करके झिंगुरा ह कहिथे–"महराज ! मोला छिमा करव । तुमन जइसे सुग्घर तइसने यहु ह सुग्घर दिखत हे, एकरे कारन मैं पूछ पारेंव।" अतका कहिके झिंगुरा ह काँदी म लुका गे ।ओस के बूँद हीरा अउ झिंगुरा के गोठ ल कलेचुप सुनत रहिस हे ।

ओतके समे एक ठन बड़े जन चिरइ ह अगास ले उही तिर टप ले उतरिस। पियास म ओकर टोंटा ह सुखागे रहिस। ओ ह हीरा ल ओस के बूँद समझ के अपन चोंच ल ओकर उपर मारिस,त ओला अपन चोंच ल पखरा म मारे कस लागिस। ओ ह कहिस–''अरे,मैं तो एला ओस के बूँद समझे रेहेंव। ये तो पथरा बरोबर ठाहिल हीरा आय । ये हा मोर पियास का बुझाही ? एकर मोला कोनो जरूरत नइ हे,अब मोला बिगर पानी के मरनच परही।'' हीरा ये बात ल सुनके रिसागे। ओ ह चिरइ ल कहिस–''अरे,चिरइ ! काली के मरइया तैं आजे मर जा। तोर मरे ले दुनिया सुन्ना नइ हो जाय।''

ओस के बूँद ह दूनो के बात ल सुन के विचार करिस के ओकरे जीवन अउ सुघरइ ह धन्य होथे जेन मन पर के खातिर अपन परान ल घलो त्याग देथें। ओस के बूँद ह चिरइ ल कहिथे–''सुन चिरइ भाई, मैं ह ओस के नानकुन बूँद आँव। मोला पिये ले तुँहर परान बाँच जाही त मोर नानकुन जीवन अउ मोती कस सुघरइ ह धन्य हो जाही।'' ओस के बूँद के गोठ ल सुन के चिरइ ह कहिथे–''हाँ,तहीं मोर परान ल बचा सकत हस। तैं धन्य हस। अतका कहिके चिरइ ह ओस के बूँद ल अपन चोंच ले अमर लिस। ओखर टोंटा ह जुड़ाय कस लागिस अउ परान ह बाँच गे। झिंगुरा ह काँदी म सपटे–सपटे ये घटना ल देखिस अउ सोंचिस,के एक के हिरदे ह पथरा बरोबर कठोर हे त दूसर के हिरदे म मया–दया के अमरित भरे हे।

महतारी के रतन

माधो बाबू के घर दुर्गा पूजा बड़ धूम–धाम ले मनाय जाय। माधो बाबू के परिवार वाला मन ये पइँत थोरकिन जादा तियारी करे हावँय। खेल–तमाशा अउ नाचा–पेखन के घलो जोरा करे रहिन हे । महल बरोबर मकान ह बिजली के बत्ती ले जगर–मगर करत रहिस हे। सोन–चाँदी अउ हीरा ले सजे नारी–परानी मन आवत–जात रहँय। बिपिन ह माधो बाबू के परोसी रहय। एकरे सेती वोहु ह पूजा देखे बर आय रहिस। उहाँ सजे – धजे नारी–परानी मन ल देखके ओला अपन महतारी के सुरता आ गे। बाप ल बीते गजब दिन हो गे रहिस हे। बिपिन ल अपन बाप के सुरता घलो नइ ए। बपुरी दाई ह बनी–भुती कर के घर ल चलावत हे। ओहा सोंचथे–इहाँ सोन–चाँदी म लदाय नारी–परानी मन हँसी–ठट्ठा करत किंजरत हवँय,अउ उहाँ बिचारी दाई ह,बनी–भुती म थके–माँदे आके मोर बर भात राँधत होही। कतेक अंतर हे दूनो घर म। बिपिन ह सोंचे–बिचारे के उमर म पहुँचत रहिस। ओकर मन उदास हो गे। माधो बाबू के घर के चकाचौंध म ओखर मन नइ लगिस। ओहा ह घर लहुट गे।

बिपिन के दाई चूल्हा तीर बइठे भात राँधत राहय। गुँगवावत चूल्हा ल कभु निहर के फुँकनी म फुँकत घलो जाय। बिपिन के दाई के नजर बिपिन उपर नइ परिस। आज बिपिन के मन ह घर म घलो नइ लगिस। ओहा उठिस अउ नँदिया कोती निकलगे ।

धीरे–धीरे संझा होये लगिस। सुरुज के पिंवरा किरन ह बादर ल सोन के पानी म पोते कस पिंवरा दिस। बादर ह अइसे लागे,जइसे सोन बगरे हे। बिपिन ह सोंचथे– कहुँ मैं बादर म चढ़े सकतेंव,त बोरा भर सोन सकेल के ला लेतेंव। मोर गरीबिन महतारी ह सुख के दिन ल देख लेतिस। फेर बादर म चढ़ना तो मुसकिल हे। कोजनी

कोन ह अतेक सोन ल बादर म बगरा दे हे । ओतके बेर ओला कोनो मनखे के आरो मिलथे। बिपिन ह लहुट के देखथे,त ओहा अपन पाछू म माधो बाबू ल ठाढ़े पाथे। सगा मन ल जताके माधो बाबू ह थोरिक हवा ले बर नँदिया कोती निकले रहिस हे ।

''कस ग बिपिन ! तैं ह खेल तमाशा देखे बर नइ गे ?'' माधो बाबू ह पूछिस।

''गे रेहेंव,बाबू साहेब ! फेर लहुट के आ गेंव'' बिपिन ह बताइस ।

''काबर ?'' माधो बाबू ह पुछिस।

बिपिन ल लबारी बोले के आदत नइ रहिस। ओ ह अपन मन के सबो हाल ल बता दिस। बिपिन के बात ल सुन के माधो बाबू हँस परिस अउ हँसत–हँसत कहिस–''अरे बिपिन ! तँय फोकट दुखी होवत हस। कोन कहिथे के तोर महतारी ह गरीबिन हे। ओकर तीर तो अइसे रतन हे,जेन मोरो घर म नइ हे।''

''नइ हे ! मैं तो अपन महतारी मेर आज ले कोनो रतन ल नइ देखे हँव।बिपिन ह क़िहिस।

''बिपिन तोला मोर बात म भरोसा नइ हे,त तैं अपन महतारी ल पूछ लेबे।'' माधो बाबू कहिस। बिपिन ह माधो बाबू के गोठ ल सुनके घर कोती लहुटगे। माधो बाबू के घर के आगू म खेल–तमाशा होवत राहय। भीड़ ह सइमों–सइमों करत रहिस। बिपिन ह सिद्धा अपन घर म खुसर गे ।

''दाई–दाई !''बिपिन ह चिल्लाइस।

''काय बेटा ?''बिपिन के दाई कहिस।

''दाई ! तोर मेर कइसन रतन हे ? महूँ ल देखा तो। माधो बाबू ह कहत रहिस के तोर महतारी तीर जइसन रतन हे,वइसन रतन ओकरो घर म नइये,का ये बात ह सही हे दाई ?''

''हाँ बेटा ! मोर मेर जइसन रतन हे,माधो बाबू के घर म घलो नइ हे।''

''देखा तो,महूँ देखतेंव रतन ल।''

''आ बेटा,मोर तीर आ।''बिपिन के दाई ह बिपिन ल अपन तीर बलाइस।

जब बिपिन ह अपन महतारी तीर पहुँच गे,त ओकर दाई ह ओला काबाभर पोटार के अपन हिरदे ले लगा लिस अउ कहिस–''बेटा, तहीं मोर रतन अस,मोर खजाना अस,दाई–ददा बर संतान ले बड़के कोनो रतन नइ होय। संतान ह दाई–ददा के जिनगी ल रतन बरोबर चमकाथे।'' बिपिन ल पहिली तो बड़ अचरज होइस,फेर पाछू ओहा ये बात ल समझ गे।

बिपिन ह पढ़–लिख के बहुत बड़ साहेब बन गे,फेर तीस बरिस पहिली के घटना ल ओहा आजो सुरता करथे।

शब्दार्थ :– **सुहघर** – सुंदर, **सकलागे** – इकट्ठा हो गया, **भोकवा** – मूर्ख, **बगराना** – फैलाना, **लहुटगे** – लौटना, **मेर** – पास, **आरो** – आहट, **बपुरी**– बेचारी, **नीक** – अच्छा, **काबाभर** – बाहों की परिधि में, **निचट** – एकदम, **ठाहिल** –ठोस, **सिद्धा** – सीधा।

अभ्यास

पाठ से

1. हीरा उपर कोनो मनखे के नजर काबर नई परिस?
2. झिंगुरा ह ओस के बूंद ल हीरा के सगा काबर कहिस?
3. पियासे चिरइ ह का जिनिस ल देखके खाल्हे उतरिस?
4. चिरई ह अपन चोंच ल ओस के बूंद समझ के मारिस त ओला का लगिस?
5. ओस के बूंद ह हीरा अऊ चिरई के बात ल सुनके मन में का विचार करथे?

6. झिंगुरा ह काँदी में सपट के कोन से घटना ल देखिस अऊ का सोचिस?

7. माधो बाबू ल अपन महतारी के काबर सुरता आगे?

8. विपिन ह सुरुज के पिंवरा किरन ल देखके का सोचत रहिस?

पाठ से आगे

1. ''हीरा अउ ओस के बूँद'' कहानी म एक के हिरदे ह पथरा बरोबर कठोर हे त दूसर के हिरदे म मया दया के अमरित भरे हवय अइसन काबर कहे गेहे?

2. महतारी बर लइका रतन से कम नई होवय। तुहर महतारी ह घलो तुमन ल रतन काहत होही। ओ कारण ल पता लगाके लिखव।

भाषा से

1. कहानी में आये वाक्य ''जेकर बुध नई रहय'' वोला एक शब्द म 'भोकवा' कहे जाथे।

अइसने खाल्हे लिखाय वाक्य मन के अर्थवाला एक शब्द लिखव

- जेन कभू सच नई बोलय–
- जेन बनी भूती करथे –
- जेन ह बैपार करथे –
- जेन खेल – तमाशा देखाथे –

2. पाठ म आये समझ, कह, सोच सब्द म ''इया'' प्रत्यय लगाके नवा शब्द बन जाथे–

जैसे – समझ + इया = समझइया

कह + इया = कहइया

सोच + इया = सोचइया

अइसने खाल्हे लिखाय सब्द मन ला ''इया'' प्रत्यय लगाके नवा शब्द बनावव–

सकल, देव, देख, आदि।

3. कहानी म आये ''पियास'' '' घमंड'' शब्द भाववाचक संज्ञा हवय। इन ल विशेषण म बदले ले –

पियास – पियासी = चिरई पियासी है।

घमंड – घमंडी = मनखे, घमंडी हो जाथे।

अइसने खाल्हे दे शब्द मन के विशेषण बनावव

त्याग, लबरा, चमक ।

योग्यता विस्तार

1. 'महतारी के मया' जेन कविता, कहानी, नाटक म बतावय गेहे अइसने कोनो भाव वाले किताब ल पढ़व?

2. डॉ. पदुमलाल पुन्नालाल बक्शी के अऊ दूसर कहानी मन ल घलो पढ़व।

पाठ – 10

हम पंछी उन्मुक्त गगन के

–डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन'

परतंत्रता और बंधन किसी भी रूप में सुखदायी नहीं हैं। अधिक वैभव और सुख के आड़ में पीछे परतंत्रता, पीड़ा और बंधन उनमें समाहित होती है। इस कविता में परतंत्रता की पीड़ा, व पिंजरे में बंद पंछी तथा उसके उद्देश्य हीन जीवन का चित्रण किया गया है। उसकी किस्मत में सिर्फ विवशता, आकुलता और व्यथा ही शेष रह जाती है।

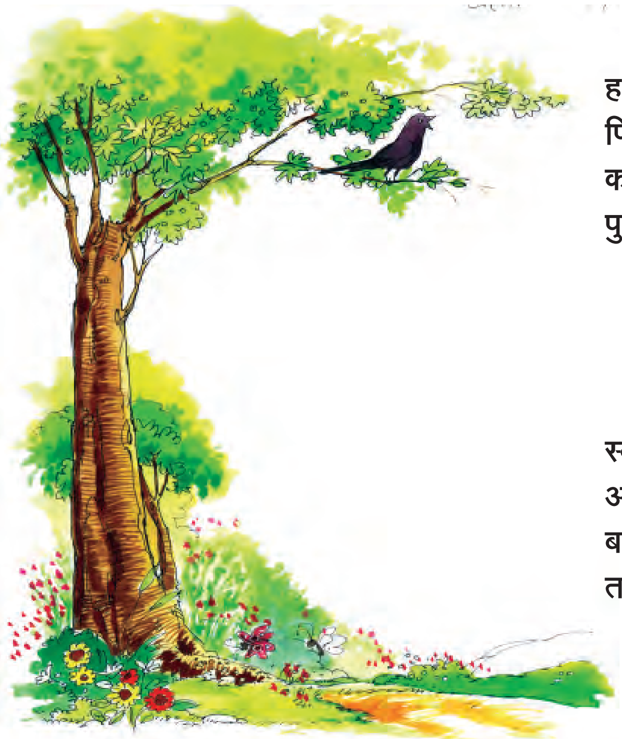

हम पंछी उन्मुक्त गगन के
पिंजरबद्ध न गा पाएँगे,
कनक–तीलियों से टकराकर
पुलकित पंख टूट जाएँगे।

हम बहता जल पीनेवाले
मर जाएँगे भूखे–प्यासे,
कहीं भली है कटुक निबोरी
कनक–कटोरी की मैदा से।

स्वर्ण–शृँखला के बंधन में
अपनी गति, उड़ान सब भूले,
बस सपनों में देख रहे हैं
तरु की फुनगी पर के झूले।

ऐसे थे अरमान कि उड़ते
नील – गगन की सीमा पाने,
लाल किरण–सी चोंच खोल
चुगते तारक–अनार के दाने।

होती सीमाहीन क्षितिज से
इन पंखों की होड़ा–होड़ी,
या तो क्षितिज मिलन बन जाता
या तनती साँसों की डोरी।

नीड़ न दो, चाहे टहनी का
आश्रय छिन्न–भिन्न कर डालो,
लेकिन पंख दिए हैं, तो
आकुल उड़ान में विघ्न न डालो।

शब्दार्थ :– **गगन** – आसमान, **पिंजरबद्ध** – पिंजरे में बंद, **पुलकित** – प्रसन्न, **निबोरी** –नीम का फल, **फुनगी** – पेड़ का अंतिम सिरा, **तारक** – पंक्षी, **होड़ा–होड़ी** – बराबरी करना, **विघ्न** – बाधा, **क्षितिज**– वहा स्थान जहाँ पर धरती और आसमान मिलते हुए दिखाई दे। **आश्रय**– सहारा, **आकुल**–व्याकुल

अभ्यास

पाठ से

1. पिंजर बद्ध पंछी के क्या–क्या अरमान थे?
2. हर तरह की सुख–सुविधाएँ पा कर भी पक्षी पिंजरे में बन्द क्यों नहीं रहना चाहता है?
3. पुलकित पंखों का आशय क्या है?
4. 'स्वर्ण.........श्रृंखला के बंधन में अपनी गति, उड़ान सब भूले', से कवि का क्या आशय है?
5. उन्मुक्त गगन के पंछी से क्या आशय है?
6. कनक तीलियों से कवि का क्या आशय है?
7. निम्नलिखित पद्यांशों का अर्थ स्पष्ट कीजिए–

   क. ऐसे थे अरमान कि उड़ते, नील–गगन की सीमा पाने,
   लाल किरण–सी चोंच खोल, चुगते तारक–अनार के दाने।

   ख. नीड़ न दो चाहे टहनी का, आश्रय छिन्न–भिन्न कर डालो।
   लेकिन पंख दिए हैं तो, आकुल उड़ान में विघ्न न डालो।

3AFGV6

पाठ से आगे

1. आपको कोई पिंजड़े में बंद कर दे किन्तु आपकी आवश्यकता की सारी सुविधाएँ दे, तो क्या आप पिंजड़े में बंद रहना पसन्द करेंगे? हाँ अथवा नहीं कारण सहित उत्तर दीजिए।
2. मनुष्य की वर्तमान जीवन शैली पक्षियों को किस प्रकार से प्रभावित कर रही है? शिक्षक एवं अपने साथियों से चर्चा कर लिखिए।
3. घरों में लोग पक्षी पालकर पिंजरें में रखते हैं। पिंजरे में बंद पक्षी क्या सोचता होगा?
4. परतंत्रता की चिकनी–चुपड़ी रोटी से स्वतंत्रता की रूखी–सूखी रोटी अधिक अच्छी होती है। इस कथन के संमर्थन में अपने विचार लिखिए।
5. पक्षियों को आसमान में उड़ते देखकर आपके मन में क्या–क्या विचार उठते हैं? समूह में चर्चा कर लिखिए।
6. पिंजरे में बंद पक्षी और एक स्वछंद पक्षी दोनों की जीवन शैली में क्या–क्या समानताएँ और अंतर होते है। विचार कर लिखिए।
7. पतंग की उड़ान, पक्षियों की उड़ान, बातों की उड़ान आदि इन तीनों तरह की उड़ानों के संबंध में आपने लोगों को बात करते सुना होगा अथवा स्वयं अनुभव किया होगा। इनमें क्या फर्क है लिखिए।

भाषा से

1. पानी, नीर, अम्बु आदि जल के पर्यायवाची हैं। (प्रायः समान अर्थ या आशय का बोध कराने वाले शब्दों को पर्यायवाची शब्द कहा जाता है।) पाठ में आए निम्नलिखित शब्द के पर्यायवाची दिए गए हैं इनमें से गलत पर्यायवाची शब्द की पहचान कीजिए।

3APCHT

1.	गगन	–	अम्बर, नभ, अनन्य, आसमान
2.	किरण	–	कर, रश्मि, पद्म, अंशु
3.	आश्रय	–	सहारा, आधार, अवसान, अवलंबन
4.	नीड़	–	घोसला, माँद, उद्यम
5.	पंख	–	पर, डेने, परंतु
6.	जल	–	वारि, अम्बु, वारिधि, नीर
7.	वृक्ष	–	पादप, दारू, दरख्त, दोलन
8.	आसमान	–	आकाश, अनिल, व्योम, अंबर
9.	कनक	–	राकेश, स्वर्ण, सोना,धतूरा
10.	पंक्षी	–	खग, पक्ष, पखेरु, पंछी

2. कविता में पक्षी, स्वर्ण, विध्न, स्वप्न, श्वास आश्रय, शृंखला, उन्मुक्त जैसे शब्द आए हैं जिन्हें हम **तत्सम शब्द कहते हैं** (तत्+सम = उसके समान)। आधुनिक भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त ऐसे शब्द जिनको संस्कृत से बिना कोई रूप बदले ले लिया गया है तथा जो सीधे संस्कृत से आये हैं, **तत्सम शब्द कहलाते हैं।** दिए गए तत्सम शब्दों का अर्थ अपनी भाषा में स्पष्ट करते हुए वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

3. कनक–तीलियों, स्वर्ण–शृंखला पाठ में इस प्रकार के शब्दों में योजक चिह्नों का प्रयोग हुआ है। योजक चिह्न (Hyphen) दो शब्दों को जोड़ने के लिए प्रयोग किया जाता है! योजक चिह्न वाले शब्दों को कविता से छाँटकर लिखिए।

4. प्रस्तुत कविता से अनुप्रास अलंकार का उदाहरण ढूँढकर लिखिए।

5. 'हम पंछी उन्मुक्त गगन के' इस कविता का केन्द्रीय भाव अपने शब्दों में लिखिए।

योग्यता विस्तार

3AY8YG

1. आज कल गौरैया जैसे पक्षी विलुप्त हो रहे हैं। विलुप्ती के कगार पर पहुँच रहे पक्षियों को बचाने के लिए क्या किया जा सकता है? समूह में चर्चा कर लिखिए।

2. हमारे संविधान में नागरिकों के लिए कुछ मौलिक अधिकारों का प्रावधान हैं। उनमें स्वतंत्रता का अधिकार भी एक है। सामाजिक विज्ञान के शिक्षक की मदद से यह जानने का प्रयास कीजिए कि स्वतंत्रता के इस अधिकार के अंतर्गत किस–किस तरह के अधिकार शामिल हैं एवं उनकी क्या सीमाएँ हैं?

3. ''स्वतंत्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है'' यह स्लोगन लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने आजादी की लड़ाई के समय दिया था। आप भी स्वतंत्रता के अधिकार के संबंध में जो विचार रखते है, उसके आधार पर कोई दो स्लोगन लिखिए।

पाठ – 11

शहीद की माँ

– श्री योगेश चंद्र शर्मा

3B8514

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम दो रूपों में लड़ा जा रहा था। एक वर्ग में वे लोग थे जो अहिंसक लड़ाई लड़ रहे थे। दूसरे वर्ग में वे क्रांतिकारी थे जो हिंसा तक का सहारा लेकर अँग्रेजों को भारत से खदेड़ना चाहते थे। रामप्रसाद 'बिस्मिल' दूसरे वर्ग में थे। क्रांतिकारियों को अँग्रेजों से लड़ने के लिए हथियारों की आवश्यकता थी। हथियार खरीदने के लिए उन्हें धन चाहिए था। वे भारतीयों से धन छीनने की अपेक्षा ब्रिटिश सरकार का खजाना लूटना श्रेयस्कर समझते थे। क्रांतिकारियों के जासूसों ने उन्हें सूचना दी कि अमुक तारीख को अमुक ट्रेन से सरकारी खजाना दिल्ली जाएगा। क्रांतिकारियों ने उस खजाने को लूटने की योजना बना ली। क्रांतिकारियों के दल ने काकोरी नामक स्थान पर ट्रेन को रोका और खजाना लूट लिया। रामप्रसाद 'बिस्मिल' क्रांतिकारियों के दल के नेता थे। अँग्रेजों ने अपना जाल फैलाकर उन्हें तथा उनके कुछ अन्य साथियों को पकड़ लिया। 'बिस्मिल' को फाँसी की सज़ा सुनाई गई। फाँसी के एक दिन पहले उनकी माँ उनसे मिलने जेल में पहुँचीं। 'बिस्मिल' अपनी माँ से मिलना नहीं चाहते थे। उन्हें भय था कि कहीं उनसे मिलकर माँ का हृदय द्रवित न हो जाए। किंतु क्रांतिवीर 'बिस्मिल' की माँ का हृदय तो चट्टान की भाँति कठोर था। उन्हें गर्व था कि उनका बेटा भारत माँ को स्वतंत्र कराने के प्रयास में फाँसी पर झूलने जा रहा है। देशभक्ति से सराबोर उस त्यागमयी माँ ने अपने सपूत को आशीर्वाद दिया और उससे हँसते-हँसते विदा ली। धन्य है वह माँ जिसने अपने लाल को भारत माता की बलिवेदी पर बलिदान कर दिया। असीम देशभक्ति, साहस, वीरता की भावना से ओतप्रोत माँ और पुत्र का वार्तालाप इस एकांकी में पढ़िए।

(जेल की कोठरी का दृश्य। रामप्रसाद 'बिस्मिल' सींखचों के पीछे, इधर-उधर घूमते हुए मस्ती से गा रहे हैं।)

''सरफरोशी की तमन्ना, अब हमारे दिल में है,
देखना है ज़ोर कितना बाज़ू-ए-क़ातिल में है।
सिर्फ मिट जाने की हसरत, इक दिले 'बिस्मिल' में है,
अब तेरी हिम्मत की चर्चा, गैर की महफिल में है।

(गीत की समाप्ति के साथ ही जेलर प्रवेश करता है। जेलर भारतीय है। रामप्रसाद 'बिस्मिल' के प्रति उसकी आँखों में अपनापन है।)

जेलर – (प्रवेश करते हुए) पंडित रामप्रसाद 'बिस्मिल' !

बिस्मिल – (मुस्कुराते हुए जेलर की तरफ देखकर) जेलर साहब ! फरमाइए क्या बात है ?

जेलर – तुमसे कोई मिलने आया है।

बिस्मिल – मुझसे मिलने ? कौन आया है ?

जेलर – तुम्हारी माँ हैं।

बिस्मिल – (प्रसन्नता से) मेरी माँ ! (कुछ सोचकर अचानक उदास हो जाता है।) लेकिन ....! नहीं, नहीं, जेलर साहब ! मैं अपनी माँ से नहीं मिलूँगा।

जेलर – (आश्चर्य से) माँ से नहीं मिलोगे ? यह तुम क्या कह रहे हो ?

बिस्मिल – हाँ जेलर साहब, मैं अपनी माँ से नहीं मिल पाऊँगा। मुझे उनसे नहीं मिलना चाहिए।

जेलर – लेकिन क्यों ? कल तुम्हें फाँसी होने वाली है और तुम आखिरी बार अपनी माँ से विदा भी नहीं लोगे ?

बिस्मिल – मज़बूर हूँ जेलर साहब ! केवल एक दिन की मेरी इस ज़िंदगी को देखकर माँ को कितना दुख होगा, इसे आप नहीं जान सकते और मुझे डर है कि माँ की भीगी आँखें कहीं मेरे कदमों को डगमगा न दें, मुझे मेरी मौत के लिए अफसोस न होने लगे।

जेलर – (व्यंग्य से) इसका मतलब हुआ कि तुम्हें अपने आप पर यकीन नहीं ।

बिस्मिल – नहीं, नहीं, जेलर साहब ! ऐसा न कहिए । मैं चट्टान की तरह अटल हूँ और ईश्वर को अर्पित किए गए किसी फूल की मुस्कान मेरी रग–रग में है । लेकिन तब भी जेलर साहब ! माँ से मिलने की हिम्मत मैं नहीं जुटा पा रहा हूँ । क्षमा चाहता हूँ जेलर साहब! माँ से भी मेरी ओर से क्षमा माँग लेना, मैं उनसे नहीं मिल सकूँगा ।

(यकायक रामप्रसाद 'बिस्मिल' की वृद्धा माँ प्रवेश करती हैं । साधारण वेशभूषा ।)

माँ – (प्रवेश करते हुए) क्या कह रहा है, रामप्रसाद ? माँ से नहीं मिलेगा ? मुझसे नहीं मिलेगा तू ? ज़रा फिर से एक बार मेरी ओर देखकर कहना तो सही ।

बिस्मिल – (आश्चर्य से) माँ ? तुम .... ?

माँ – हाँ मैं ही तो हूँ । क्या अपनी माँ को पहचान भी नहीं सकता ?

बिस्मिल – ऐसे मत बोलो, माँ !

माँ – और क्या बोलूँ, अपने देश का ऐसा दीवाना बना कि जन्म देने वाली अपनी माँ को भी भूल गया ? मुझसे मिलने को भी तेरा जी न चाहा ?

बिस्मिल – माँ ! मुझे गलत मत समझो । मेरा मतलब यह नहीं था । मैंने तो ...... ।

माँ – (बात काटकर स्नेह से) अरे, अब रहने दे अपनी सफाई को । मैं सब जानती हूँ । तू अपनी माँ को भले ही भूल जा, पर मैं अपने बेटे रामप्रसाद को खूब जानती हूँ । तूने सोचा होगा कि तुझे इस हाल में देखकर मुझे शायद दुख होगा । मौत की गोद में तुझे देखकर मेरी आँखों से परनाले बहने लगेंगे ।

बिस्मिल – हाँ माँ ! मेरा मतलब यही था।

माँ – पगले ! तू अपनी माँ को इतना भी नहीं पहचान सका ? जिस भारत माँ के लिए तू कुर्बान हो रहा है, वह अकेले तेरी ही तो माँ नहीं, वह तो मेरी भी माँ है । बेटे ! तेरे सभी बुजुर्गों की माँ है । इस सारे देश की माँ है ।

बिस्मिल – (भावावेश में) माँ ! मैंने समझा था कि .... ।

माँ – अन्य साधारण स्त्रियों की तरह मैं भी रोने–चीखने लगूँगी । यही न ? लेकिन बेटे, तूने यह न सोचा कि जिस माँ ने तुझे बचपन से ही त्याग, वीरता और देश–प्रेम का पाठ पढ़ाया है, आज अपनी मेहनत को फलते–फूलते देखकर उसे कष्ट क्यों होगा? आज का दिन तो मेरे लिए सबसे बड़ी खुशी का दिन है ।

बिस्मिल – मुझे अपने विचारों के लिए अफसोस है माँ !

माँ – नहीं मेरे लाल ! आज के दिन तू किसी का अफसोस न कर । तू तो कुर्बानी की राह जा रहा है, मेरे बच्चे ! अफसोस तो मुझे है कि मेरा दूसरा बेटा अभी इतना छोटा क्यों है ?

बिस्मिल – माँ ! विश्वास रखो । तुम्हारे इस बेटे के बलिदान से अनेक रामप्रसाद पैदा होंगे और तब वह दिन दूर नहीं होगा, जब हमारा यह देश गुलामी के चंगुल से मुक्त होकर आज़ादी की साँस ले सकेगा और लहलहाती ज़मीन हमारी अपनी होगी ।

माँ – कितना शुभ होगा वह दिन ?

बिस्मिल – हाँ माँ । (कुछ ठहरकर) माँ ! एक इच्छा है ।

माँ – बोल बेटे ! क्या इच्छा है ? मैं तेरी हर इच्छा को पूरा करने की कोशिश करूँगी ।

बिस्मिल – जब आज़ादी का पहला जश्न मनाया जाए, तब मेरी तस्वीर को ऐसी जगह रख देना, जहाँ से मैं सारा जश्न अपनी उस तस्वीर के ज़रिए देख सकूँ, लेकिन मेरी उस तस्वीर को कोई न देख सके ।

माँ – ऐसा क्यों मेरे लाल ? मैं तेरी तस्वीर को ऐसी जगह रखूँगी, जहाँ सारी दुनिया उसे देख सके ।

बिस्मिल – नहीं माँ ! ऐसा मत करना । मेरी तस्वीर को देखकर लोगों को मेरी याद आ जाएगी और तब शायद उस खुशी के मौके पर उनकी आँखें गीली हो जाएँ । मेरे देश को आज़ादी मिले और मेरे देशवासी उस दिन आँसू बहाएँ, यह सहन नहीं हो सकेगा, माँ !

माँ – (भावावेश में) मेरे बेटे ! ऐसा ही होगा, मेरे लाल !

जेलर – (घड़ी देखते हुए) क्षमा कीजिए । समय काफी हो चुका ।

माँ – चलती हूँ जेलर साहब ! (अपनी साड़ी के पल्लू में बँधे हुए कुछ बेसन के लड्डू निकालती हैं ।) ले बेटा ! ये बेसन के लड्डू तेरे लिए बनाकर लाई हूँ । माँ के हाथ का यही तुझे अंतिम भोग है ।

बिस्मिल – बेसन के लड्डू ?

माँ – हाँ ! तुझे बेसन के लड्डू बहुत अच्छे लगते हैं ना ?

बिस्मिल – (हिचकिचाते हुए) लेकिन माँ .... जेलर साहब ! (बिस्मिल जेलर की तरफ देखता है। जेलर मुस्कुराकर स्वीकृति देता है ।)

माँ – (मुस्कुराकर) चिंता न कर । जेलर साहब से मैंने पहले ही पूछ लिया है । बहुत अच्छे आदमी हैं ।

बिस्मिल – लाओ माँ ! अपने हाथ से ही खिला दो । (प्रसन्नचित्त माँ बिस्मिल को लड्डू खिलाती हैं ।)

बिस्मिल – बस माँ ! ये बचे हुए लड्डू मैं बाद में खा लूँगा । (लड्डू लेकर अपने पास रख लेता है।)

माँ – (बिस्मिल के सिर पर हाथ फेरते हुए) अच्छा मेरे लाल ! मैं चलती हूँ ।

बिस्मिल – अच्छा माँ ! ईश्वर करे अगले जन्म में भी तुम ही मेरी माँ बनो ।

माँ – और मैं फिर तुझे इसी तरह कुर्बान कर दूँ । पाल–पोसकर बड़ा करूँ और फिर .... (गला रुँध जाता है ।)

बिस्मिल – (आश्चर्य से) माँ यह क्या ? यह तुम्हें अचानक क्या हो गया ?

माँ – (जबर्दस्ती हँसते हुए) कुछ नहीं बेटा ! कुछ भी तो नहीं ।

बिस्मिल – तो फिर तुम्हारी आँखों में आँसू क्यों छलक आए माँ ?

माँ – उन्हें छलकने दे बेटा ! उनकी तू क्यों चिंता करता है ?

बिस्मिल – नहीं माँ ! विदा की बेला में तुम्हारी आँखों में चमकने वाले ये आँसू .... मेरे कदमों को डगमगा रहे हैं ।

माँ – (आश्चर्य और दुख से) रामप्रसाद ! यह क्या कहता है ? जन्मभूमि पर न्यौछावर होनेवाले बहादुर इस तरह की बातें नहीं किया करते । संसार की कोई भी शक्ति उनके कदमों को नहीं डगमगा सकती ।

बिस्मिल – मैं भी अब तक अडिग ही हूँ माँ ! लेकिन तुम्हारी आँखों से बहनेवाले दर्द को मैं सहन नहीं कर सकता । तुम दुखी रहोगी माँ तो मेरी आत्मा भी दुखी रहेगी ।

माँ – मेरा दुख ? तेरी कुर्बानी पर मुझे दुख ? यह तू क्या कह रहा है बेटा ?

बिस्मिल – मैं नहीं कह रहा माँ ! तुम्हारी आँखों से बहने वाले आँसू कह रहे हैं कि तुम्हें कोई दुख है ।

माँ – (हँसकर) पगले ! अरे ये आँसू तो खुशी के हैं ।

बिस्मिल – खुशी के आँसू !

माँ – हाँ बेटा ! पाल–पोसकर अपनी संतान को अपने हाथों से देश के लिए कुर्बान कर देने में भी एक अज़ीब–सी खुशी है और उस खुशी को प्राप्त करने का गौरव मुझे प्राप्त हो रहा है ।

बिस्मिल – माँ ! .... मैंने समझा था कि .... ।

माँ – अरे ! अब रहने भी दे अपनी समझ को । जेलर साहब ! क्या कल अपने बेटे की फाँसी के समय में यहाँ रह सकती हूँ ।

जेलर – जी नहीं । हुक्म न होने के कारण मैं मज़बूर हूँ ।

बिस्मिल – ज़रूरत भी क्या है माँ ? तुमने अपने बेटे को भारत माँ की गोद में डाल दिया । अब उसकी सेवा के लिए, यह आत्मा किसी भी रूप में रहे । क्या फर्क पड़ता है ?

माँ – तू ठीक कहता है मेरे लाल ! अच्छा मेरे बच्चे ! अपनी भारत माँ की अच्छी तरह सेवा करना । कोई चूक न होने पाए । (बिस्मिल के सिर पर हाथ फेरती हैं । बिस्मिल माँ के पैर छूता है ।) चलिए जेलर साहब ! (जेलर के साथ प्रस्थान करती है । बिस्मिल उस तरफ देखता रहता है । पर्दा धीरे–धीरे गिरता है ।)

शब्दार्थ :– **सरफरोशी** – बालिदान देना, सिर कलम कर देना, **तमन्ना** – तीव्र इच्छा, **हसरत**–इच्छा, **महफिल**–सभा, **मजबूर**–बेबस, लाचार, **अफसोस**–दुःख, **यकीन**–विश्वास, **परनाले**–आँसू, **गुलामी**–दासता, **जश्न**–समारोह, **चंगुल**–बंधन।

अभ्यास

पाठ से

1. रामप्रसाद 'बिस्मिल' कौन थे? उन्हें फाँसी की सजा क्यों हुई?
2. जेल में आईं अपनी माँ से मिलने के लिए 'बिस्मिल' हिचकिचा क्यों रहे थे?
3. 'बिस्मिल' की माँ ने अपने बेटे को किस बात की उलाहना दी?
4. 'बिस्मिल' ने माँ के सामने कौन–सी इच्छा प्रकट की?
5. ''मुझे मेरी मौत के लिए अफसोस न होने लगे'' बिस्मिल ने ऐसा क्यों कहा ?
6. बिस्मिल ने अपनी माँ से तस्वीर को कैसी जगह रखने के लिए कहा?
7. 'बिस्मिल' ने अपनी तस्वीर को सभी के सामने रखने के लिए मना क्यों किया?
8. अपनी आँखों में आँसू आने का माँ ने क्या कारण बताया?
9. कारागार से विदा होते समय माँ ने बिस्मिल से क्या कहा ?
10. माँ को किस घात से गौरव का अनुभव हो रहा था?
11. इस एकांकी के आधार पर बिस्मिल की माँ की चरित्रगत विशेषताओं को लिखिए?

पाठ से आगे

1. ''अपने देश का ऐसा दीवाना बना कि जन्म देने वाली अपनी माँ को भी भूल गया!'' माँ के ऐसा कहने में कौन से भाव रहे होंगे? विचार कर लिखिए।
2. ''मैं चट्टान की तरह अटल हूँ और ईश्वर को अर्पित किए गए किसी फूल की मुस्कान मेरे रग–रग में है मगर वह हिम्मत नहीं है।''जेलर साहब से बिस्मिल ने ऐसा क्यों कहा होगा ?
3. जिस माँ ने तुझे ''बचपन से ही त्याग, वीरता और देश–प्रेम का पाठ पढ़ाया है, आज अपनी मेहनत को फलते–फूलते देखकर उसे कष्ट क्यों होगा? बिस्मिल की माँ का यह कहना किस भाव का सूचक है ?
4. एकांकी में बिस्मिल के लिए जेल में उनकी माँ बेसन के लड्डू बनाकर खाने के लिए लाती है। इसी तरह आपको भी माँ के हाथ से बना कोई भोज्य पदार्थ विशेष रुप से पंसद होगा। उसके बारे में लिखिए।

3BH12R

भाषा से

1. ''तुम्हारे इस बेटे के बलिदान से अनेक रामप्रसाद पैदा होंगे'' पाठ में उद्धृत इस वाक्य में शब्द 'रामप्रसाद' सामान्यत व्यक्ति वाचक संज्ञा है। जिसका संबंध रामप्रसाद नामक व्यक्ति से हैं, परंतु यहाँ इस वाक्य में स्वयं शहीद 'रामप्रसाद' ने देशहित में शहीद होने वाले वीरों के लिए 'अनेक रामप्रसाद' के पैदा होने की बात कही हैं। भाषा में इस प्रकार की स्थिति आने पर व्यक्ति वाचक संज्ञा, जाति वाचक संज्ञा का कार्य करने लगती है। कुछ अन्य उदाहरण नीचे दिए गए हैं इन्हें भी देखिए –

   क. वह कलयुग का राम है।

   ख. तुम ही विभीषण हो।

   ग. वह आदमी नहीं जल्लाद है।

   आप भी इस तरह के पाँच वाक्यों को लिखिए।

3BQH4E

2. मेरी माँ! (कुछ सोचकर) लेकिन ....! नहीं नहीं जेलर साहब! मैं अपनी माँ से नहीं मिलूँगा। आश्चर्य, आनंद, दुःख आदि का भाव प्रकट करने के लिए जिस चिह्न का प्रयोग किया जाता है उसे विस्मयादि बोधक चिह्न(!) कहते हैं पाठ में इस प्रकार के वाक्यों का अनेक स्थानों पर प्रयोग हुआ है। उन्हें खोजकर लिखिए।

3. निम्नलिखित अनुच्छेद में रिक्त स्थानों को कोष्ठक में दिए गए उचित शब्द से भरकर पूरा कीजिए– अन्य साधारण स्त्रियों की ....(तरह / जगह) मै भी रोने–चीखने लगूँगी। यह न ? लेकिन ....(बेटे / बेटी) तूने यह न सोचा कि जिस माँ ने तुझे.............................(जवानी / बचपन) से ही त्याग, वीरता और देश–प्रेम का पाठ पढ़ाया है, आज अपनी....................(हिम्मत / मेहनत) को फलते–फूलते देखकर उसे..................................(कष्ट / खुशी) क्यों होगा ? ''आज का दिन तो मेरे लिए सबसे........... ....(बड़ी / छोटी) खुशी का दिन है।

4. पाठ में हम देखते हैं कि बिस्मिल और जेलर के बीच हुई बातचीत में काफी सवाल हैं, जिन्हें हम प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं जैसे –

- मुझसे मिलने कौन आया है ?
- माँ से नहीं मिलोगे ?
- यह तुम क्या कह रहे हो ?

उपर्युक्त वाक्यों को पढ़ने से स्पष्ट होता है कि प्रश्न वाचक वाक्य हम कैसे बनाते हैं अर्थात् जिस वाक्य में कोई प्रश्न पूछा गया हो अथवा प्रश्न पूछने का भाव हो उसके अंत में प्रश्न वाचक चिह्न (?) का प्रयोग कर प्रश्नवाचक वाक्य बनाते हैं।

पाठ में प्रयुक्त प्रश्न वाचक वाक्यों को खोज कर लिखिए तथा कुछ साधारण वाक्यों का चुनाव कर प्रश्नवाचक वाक्यों का निर्माण कीजिए।

5. **निम्नलिखित शब्दों को पढ़िए –**

क	**ख**	**क**	**ख**
नीति	**अनीति**	**रुचि**	**अरुचि**
सत्य	**असत्य**	**मान्य**	**अमान्य**
धर्म	**अधर्म**	**विश्वास**	**अविश्वास**

क खण्ड के नीचे लिखे शब्दों में और ख खण्ड के नीचे लिखे शब्दों में आपको क्या अन्तर दिखाई दे रहा है ? क्या ख खण्ड के शब्द क खण्ड के शब्दों के विलोम शब्द हैं। यदि हाँ तो इन उदाहरणों से क्या नियम निर्धारित होता है ? इसी नियम के पालन में कोई पाँच अन्य शब्द और उनके विलोम शब्द लिखिए।

6. **निम्नांकित मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए।**
जी चाहना, कदम डगमगाना, गोद में डालना, फलना–फूलना, चंगुल से मुक्त होना।

7. **समानार्थी शब्दों को मिलाइए जैसे उद्यान – बगीचा–**

सरफरोशी	त्याग
तमन्ना	हत्यारा

कातिल	अंतर
कुर्बानी	सभा
हुक्म	बलिदान
महफिल	इच्छा
फर्क	आदेश

8. **नीचे लिखे शब्दों को बारहखड़ी के क्रम में लिखिए –**

मिठाई, मूली, मतलब, मंगल, मौसी, मीनार, मालिक, मुकुट, मेला, मोरनी, मैदान ।

नोट :– शब्द कोश में इन्हीं बारहखड़ी के क्रम से शब्दों की व्यवस्था होती है। उनके क्रम के आधार पर शब्दार्थ ढूँढा जाता है।

9. **निम्नलिखित अनुच्छेद को ध्यान से पढ़िए तथा नीचे कोष्ठक में दिए गए उपयुक्त शब्दों का प्रयोग कर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –**

प्रस्तुत एकांकी में लेखक ने माँ.... ममता, देशप्रेम की उत्कट अभिलाषा और .... के प्रति बलिदान की भावना का .... चित्र प्रस्तुत किया है । ऐसा उत्कृष्ट.... करनेवाली माँ केवल अपने बेटे.... ही माँ नहीं होती बल्कि वे.... के नाम से इतिहास में जानी जाती हैं । बिस्मिल जैसे रणबाँकुरे, वीर, देशभक्त .... साहसी बेटों को पाकर राष्ट्र गौरव...... अनुभव करता है और वह राष्ट्र.... होकर दिन–दूनी रात चौगुनी उन्नति के शिखर पर बढ़ता जाता है ।

(राष्ट्रमाता, का, और, की, राष्ट्र, स्वतंत्र, अनूठा, बलिदान, की)

10. **इन वाक्यों को पढ़िए –**

क. **मैंने अपने हाथों से कमरे की सफाई की है।**

ख. तुम्हें अपनी सफाई में कुछ कहना है?

दोनों वाक्यों में ‘ सफाई ’ शब्द का प्रयोग हुआ है । इन दोनों के अर्थ अलग-अलग हैं। दोनों अर्थों में इनका अलग-अलग प्रयोग कीजिए ।

11. **इस एकांकी का सारांश लिखिए ।**

योग्यता विस्तार

1. स्वतंत्रता आंदोलन के क्रांतिकारियों का चित्र संग्रह कर उनकी सूची बनाइए और कक्षा में चस्पा कीजिए ।
2. प्रस्तुत एकांकी को साथियों के साथ मिलकर अभिनय के साथ विद्यालय में प्रस्तुत कीजिए। आप इस कार्य में अपने शिक्षक की सहायता भी ले सकते हैं।
3. स्वाधीनता–आन्दोलन में जिन क्रांतिकारियों ने भाग लिया, उनकी सूची बनाइए।
4. ‘सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में।’ इस गीत के निहित भाव को शिक्षक की मदद से समझिए और ऐसे ही भाव वाले अन्य गीतों को ढूँढकर लिखिए।

3HV9IB

पाठ – 12

सर्वधर्म समभाव

–डॉ.कृष्ण गोपाल रस्तोगी

धार्मिक सहिष्णुता और मानव धर्म सर्वोपरि है। युद्ध,द्वेष और कलह का भी इन पर कोई असर नहीं होना चाहिए। मानव कल्याण, विश्वबंधुत्व की भावना हर मनुष्य में सर्वोपरि हो। इस बात का प्रमाण महाराणा प्रताप और गुरू गोविन्द सिंह की इन दो प्रेरक कहानियों में मिलता है जहाँ युद्ध जीतने के बाद भी दोनों ने मानवता को सबसे ज्यादा महत्व देते हुए शत्रु–सैनिक और उनके परिवार को सम्मान, सुरक्षा और सहायता देते हुए अपनी महानता का परिचय दिया और आत्मीय व्यवहार किया।

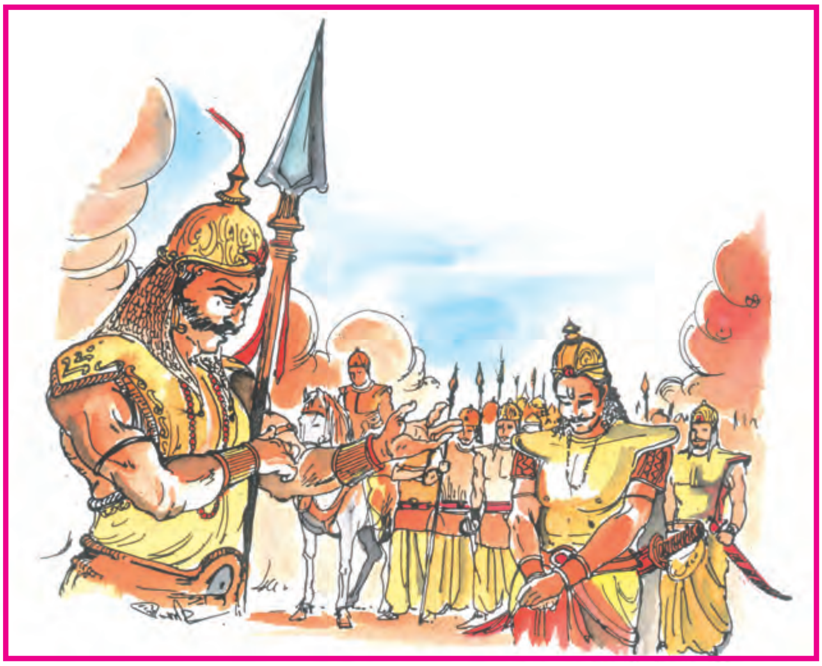

महाराणा प्रताप और मुगलों के बीच युद्ध चल रहा था। कुँवर अमरसिंह के नेतृत्व में राणा का पलड़ा भारी रहा। खानखाना और उसकी सेना को मैदान छोड़ना पड़ा। अमरसिंह ने मुगलों की स्त्रियों, बच्चों, परिवारवालों और सैनिकों को बंदी बना लिया।

राणा प्रताप ने जब लड़ाई में जीतने का समाचार सुना, तो वे कुँवर अमरसिंह को बधाई देने स्वयं आए। परंतु जब महाराणा को पता चला कि कुँवर ने मुगलों की स्त्रियों और परिवारवालों को बन्दी बना लिया है, तो वे अत्यंत क्रुद्ध होकर बोले, '' कुँवर ! लड़ाई जीतकर तुमने जो स्थान मेरे हृदय में प्राप्त किया था, वह समाप्त हो गया है। तुम नहीं जानते तुमने मुगलों की स्त्रियों और परिवारवालों को बन्दी बनाकर कितना बड़ा अपराध किया है। हमारी शत्रुता मुगल साम्राज्य से है, किसी व्यक्ति विशेष से नहीं। उनकी स्त्रियाँ भी हमारी माँ–बहनों के समान हैं।''

राणा प्रताप ने स्वयं जाकर खानखाना की बेगम से भेंट की और कुँवर के अपराध के लिए क्षमा माँगी। उन्होंने आदेश दिया कि मुगलों की स्त्रियाँ और बच्चे सम्मान पूर्वक मुगलों के पास पहुँचा दिए जाएँ।

अकबर ने जब देखा कि मुगलों की स्त्रियाँ और बच्चे राजपूतों के संरक्षण में सकुशल लौट रहे हैं, तो उसका सिर भी महाराणा प्रताप की धार्मिक सहिष्णुता के सामने आदर से झुक गया। संसार में अनेक धर्म हैं। सभी धर्म हमें अच्छी-अच्छी बातें सिखाते हैं। वे सभी हमें असत्य से सत्य की ओर, बुराई से अच्छाई की ओर तथा पाप से पुण्य की ओर ले जाते हैं। हमारा कर्त्तव्य है कि हम सभी धर्मों का आदर करें। भारतीय संस्कृति में तो विशेष रूप से कहा गया है कि किसी भी धर्म की निंदा मत करो।

ऐसी ही एक दूसरी घटना और पढ़िए।

एक बार गुरु गोविन्द सिंह को सूचना मिली कि किसी शत्रु ने उनके राज्य के किसी भाग पर अचानक हमला कर दिया है। उन्होंने अपने सैनिकों से उसका मुकाबला करने को कहा। युद्ध हुआ और उसमें सिखों की जीत हुई। अगले दिन गुरु के कुछ शिष्यों ने एक सिख सैनिक को उनके सामने प्रस्तुत किया और कहा, ''गुरु जी ! यह युद्ध के मैदान में सिख भाइयों के साथ-साथ दुश्मन के घायल सिपाहियों को भी पानी पिला रहा था। लगता है, यह दुश्मन से मिला हुआ है, इसे दण्ड मिलना चाहिए।''

गुरु गोविंद सिंह ने उस युवक से पूछा, ''क्या यह सच है कि तुम युद्धभूमि में शत्रु सेना के घायल सिपाहियों को पानी पिला रहे थे ?''

''हाँ, महाराज ! यह बिल्कुल सच है,'' वह बोला।

''पर क्या शत्रु के सैनिकों को पानी पिलाना उचित है ?'' गुरु ने पूछा।

''श्रीमान ! आप ही ने एक बार बताया था कि सभी मनुष्यों में एक ही आत्मा है। इसी बात को ध्यान में रखकर मैंने उन्हें पानी पिलाया। यदि मुझसे कोई अपराध हो गया है, तो आप मुझे दण्ड दे सकते हैं, महाराज !'' वह युवक बोला।

गुरु गोविंद सिंह उस युवक के उत्तर से बेहद खुश हुए। उन्होंने कहा, ''मुझे खुशी है कि मेरे सारे शिष्यों में से धर्म का वास्तविक अर्थ केवल तुम्हीं ने समझा है। तुमने दुश्मन के घायल सैनिकों को पानी पिलाकर कोई अपराध नहीं किया, तुमने गुरु नानक की वाणी को सही तरह से समझा ही नहीं, अपने आचरण में भी उतारा है।''

एक सैनिक ने शंका प्रकट की, ''यदि युद्ध में घायल पड़े शत्रु-सैनिक को पानी पिलाना धर्म का काम है तो फिर उसी सैनिक को युद्ध में मार गिराना तो अधर्म होना चाहिए।''

''युद्ध में शत्रु सैनिक का सामना करना राष्ट्रधर्म है, जबकि घायल सैनिक को पानी पिलाना मानव धर्म है। किसी घायल, असहाय या दुर्बल व्यक्ति से केवल इसीलिए घृणा करना कि वह दूसरे धर्म का अनुयायी है, उचित नहीं है,'' गुरु गोविंद सिंह ने उत्तर दिया।

हमारा देश भारत ऐसा देश है जहाँ अनेक धर्मों के लोग रहते हैं। भारत के संविधान के अनुसार सभी को धार्मिक स्वतंत्रता प्राप्त है। इसलिए देश की एकता और अखण्डता के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि प्रत्येक भारतीय अपने-अपने धर्म का पालन करता हुआ भी किसी अन्य धर्म के प्रति घृणा या द्वेष का भाव न रखे। ईश्वर, अल्लाह, गॉड आदि उसी ईश्वर के अनेक नाम हैं। गांधी जी अपने भजन में ठीक ही गाया करते थे-'' ईश्वर अल्लाह तेरे नाम, सबको सन्मति दे भगवान्।''

बच्चो ! ध्यान रहे, इस साम्प्रदायिक भेद के कारण भारत की एकता पर आँच नहीं आनी चाहिए।

है साम्प्रदायिक भेद से कब ऐक्य मिट सकता अहो !
बनती नहीं क्या एक माला विविध सुमनों की कहो ॥

– **मैथिलीशरण गुप्त**

शब्दार्थ :– **बधाई** – मंगलकामना, **कुँवर**– राजकुमार, **संरक्षण**–निगरानी, हिफाजत, देखरेख, **सहिष्णुता** – सहनशीलता, **कर्त्तव्य** – फर्ज, (दायित्व), **विशेष** – असाधारण, असामान्य, **निन्दा** –दोष कथन, **अचानक** – अकास्मात, **सिख** – एक धर्म, पंथ, **राष्ट्रधर्म** – राष्ट्र के प्रति हमारे कर्त्तव्य, **सहाय** – लाचार, **दुर्बल** – कमजोर, **अनुयायी** – अनुचर, **संविधान** –विधि की व्यवस्था, **धार्मिक स्वतंत्रता** – धर्म को मानने की आजादी, **सन्मति** – अच्छी बुद्धि, **एक्य** –एकता।

अभ्यास

पाठ से

1. सर्वधर्म समभाव से आप क्या समझते हैं ?
2. राणा प्रताप ने कुँवर अमरसिंह को बधाई भी दी और उन पर क्रोधित भी हुए। क्यों ?
3. शत्रु-नारियों और बच्चों के प्रति राणा प्रताप की क्या धारणा थी ?
4. महाराणा प्रताप खानखाना की बेगम से क्षमा क्यों माँगते हैं ?
5. अकबर महाराणा के सामने क्यों झुक गया ?

6. **शिष्यों ने गुरु गोविन्द सिंह से क्या शिकायत की ?**
7. **शिष्य के उत्तर से गुरु गोविन्द सिंह क्यों प्रभावित हुए ?**
8. **राष्ट्रधर्म और मानवधर्म का एक–एक उदाहरण दीजिए।**
9. **महाराणा प्रताप व गुरू गोविंद सिंह में कौन–सी समानताएँ थी ?**
10. **एक माला में भिन्न– भिन्न प्रकार के फूलों की बात (पाठ में) किस संदर्भ में कही गई है?**

3NE1LL

पाठ से आगे

3NHWN9

1. सभी धर्मो में मानव सेवा को सर्वोच्च माना गया है। आपके विचार से मानव सेवा किसे कहेंगे ? उदाहरण सहित बताइए।
2. आप अगर गुरू गोविंद सिंह के शिष्य की जगह होते तो क्या अपने शत्रु के घायल सिपाहियों को पानी पिलाते ? अपने विचार लिखिए।
3. महाराणा प्रताप ने मुगलों की स्त्रियों और बच्चों को सम्मान पूर्वक सुरक्षित वापस कर दिया। आपके विचार से दुश्मनों के परिवार को महाराणा प्रताप के द्वारा छोड़ना उचित था अथवा नहीं।
4. देश की अखण्डता एवं एकता के लिए हमें क्या करना चाहिए? अपने विचार लिखिए।
5. सभी धर्म असत्य से सत्य की ओर, बुराई से अच्छाई की ओर तथा पाप से पुण्य की ओर ले जाते हैं। इसके विपरीत अधर्म, हिंसा, तथा अशिक्षा हमें विनाश की आरे ले जाती है। कैसे? लिखिए।
6. यदि आपको कोई घायल व्यक्ति मिले तो आप क्या करेंगे? संक्षेप में लिखिए।

भाषा एवं व्याकरण

1. ''हाँ महाराज ! यह बिल्कुल सच है'' वह बोला।

   '' पर क्या शत्रु के सैनिकों को पानी पिलाना उचित है'' गुरू ने पूछा। उपरोक्त दोनों ही वाक्य में उद्धरण चिह्न ''.........................'' का प्रयोग किया गया है।

   किसी के कथन को ज्यों का त्यों प्रस्तुत करने के लिए दोहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग किया जाता है। पाठ में आये उद्धरण चिह्न वाले अन्य वाक्यों को ढूँढकर लिखिए।
2. मानव शब्द में 'ता' प्रत्यय लगकर 'मानवता' शब्द बन जाता है। इस प्रकार वे शब्दांश जो शब्द के अन्त में जुड़कर उसके अर्थ को बदल देते हैं अथवा उसमें विशेषता उत्पन्न कर देते है, उन्हें प्रत्यय कहते हैं। इसी प्रकार से पाठ में आये 'ता' प्रत्यय लगे शब्दों की सूची बनाइए।
3. नीचे लिखे वाक्यों को पढ़िए –

   1. सैनिकों से मुकाबला किया 2. सैनिक को प्रस्तुत किया।

   वाक्य में सैनिकों (बहुवचन) व दूसरे वाक्य में सैनिक (एकवचन) में लिखा हुआ है, अर्थात् ''पदों के जिस रूप में उसके एक या अनेक होने का बोध हो वह वचन कहलाता है।''

   जैसे :– लड़का–लड़के

   एकवचन में संज्ञापदों की एक संख्या का और बहुवचन में उसकी अनेक संख्याओं का बोध होता है। पाठ में आए एकवचन एवं बहुवचन संज्ञाओं को ढूँढकर लिखिए एंव उनका वाक्यों में प्रयोग भी कीजिए। दिए गए उदाहरण के समान ही पाठ में आये हुए शब्दों को ढूँढकर एकवचन से बहुवचन बनाइए।

4. क्या संसार में अनेक धर्म हैं ?

गुरू गोविन्द सिंह उस युवक के उत्तर से खुश नहीं हुए।

पहले वाक्य में क्या लगा हुआ है अर्थात वह प्रश्न का बोध कराता है। ऐसे वाक्य जिसमें क्या, कब, कैसे पूछा जाये वहाँ प्रश्न सूचक वाक्य होता है। दूसरे वाक्य में किसी बात के न होने का भाव है अतः यह निषेध सूचक वाक्य है। अब आप पाँच प्रश्नवाचक एवं पाँच निषेधात्मक वाक्य बनाइए।

निर्देशानुसार वाक्यों को बनाइए।

1. यह सच है (प्रश्न वाचक)
2. उन्होनें आदेश दिया (निषेध वाचक)
3. सेना को मैदान छोड़ना पड़ा (प्रश्न वाचक)
4. उचित है। (निषेध वाचक)

5. पाठ में वाक्य दिया गया है – 'किसी भी धर्म की निंदा मत करो।' इस वाक्य में निंदा की जगह बुराई लिख दें तो वाक्य के अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं होता।

ऐसे शब्द जिनके अर्थ में समानता होती है समानार्थक शब्द कहे जाते हैं। निम्नांकित वाक्यों में रेखांकित शब्दो के समनार्थी शब्द लिखिए।

1. हमारी शत्रुता मुगल साम्राज्य से है।
2. युद्ध हुआ और उसमें सिखों की जीत हुई
3. इसे दण्ड मिलना चाहिए।
4. मैंने उन्हे पानी पिलाया।

6. निम्नलिखित शब्दों से ऐसे वाक्य बनाइए कि प्रत्येक का लिंग प्रकट हो जाए –

मुकाबला, युद्ध, सेना, लड़ाई, पानी, सुमन, भाला

7. 'धर्म' शब्द में 'इक' प्रत्यय लगाकर 'धार्मिक' शब्द बना है। इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों में 'इक' प्रत्यय लगाकर नए शब्द बनाइए –

मर्म, कर्म, समाज, परिवार

8. 'हार' का विलोम शब्द 'जीत' है। इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द बनाइए –

सत्य, अच्छाई, पुण्य, आदर

योग्यता विस्तार

1. महाराणा प्रताप व गुरू गोविंद सिंह जैसे ही छत्तीसगढ़ में भी वीर महापुरूष हुए हैं। उनके बारे में जानकारी प्राप्त कर उनके नाम व कार्यो की सूची बनाइये।
2. ऐतिहासिक मुगलकालीन शासकों की सूची शिक्षक की सहायता से बनाइए।
3. ऐसे गीत/कविताओं का संकलन करें जिनमें सर्व धर्म समभाव निहित हो।

3NHSPH

पाठ – 13

आलसीराम

– *श्री नारायण लाल परमार*

3P6NRJ

छत्तीसगढ़ के प्रसिद्ध साहित्यकार श्री नारायण लाल परमार की प्रस्तुत लोककथा एक आलसी व्यक्ति के हृदय परिवर्तन की कहानी है। कुएँ में डुबकियाँ लगाने का दंड भुगत लेने पर आलसीराम सदा के लिए कर्मठ बन जाता है। कथा में आए पात्रों के नामों, ग्राम्य शब्दों तथा लोकगीत की कड़ियों के समावेश से ग्राम्य जीवन का चित्र निखर उठा है।

अंगद उसका नाम था । 'यथा नाम तथा गुण' वाली कहावत उस पर पूरे सौ पैसे ठीक उतरती थी । जहाँ वह बैठ जाता, फिर उठने का नाम न लेता । न घर की चिंता, न खाने–पीने की । बेचारी पत्नी गाँव का कूटना–पीसना करके किसी तरह बच्चों का पेट पालती और अपने पति की राह देखा करती । अंगद कभी घर जाता, कभी किसी के चौरे पर ही सोया रहता ।

लोगों को आश्चर्य होता यह देखकर कि गाँव का यह स्वस्थ–प्रसन्न युवक इतना आलसी क्यों है ? बात किसी की समझ में न आती । कभी कोई पड़ोसी उसकी पत्नी से कहता कि अब यदि घर आए तो उसे भोजन न देना । कभी उसके लिए दरवाजा बंद रखने की तरकीब की जाती, परंतु अंगद पर उसका भी कुछ असर न होता । न वह जेठ में सूखता और न भादों में हरा होता । किसी ने उसे काम पर बुलाया तो ठीक और न बुलाया तो ठीक । न किसी से राम–रमौवल, न किसी से दुश्मनी। बस अंगद , अंगद ही था ।

धीरे से एक दिन परऊ ठेठवार ने कहा कि अंगद तो चोर है । कल रात उसकी बाड़ी में कुँदरू चुराने आया था। बात पर किसी को विश्वास नहीं हुआ । अंगद की घरवाली से पूछा गया, तो पता चला कि वह पिछले तीन दिनों से घर नहीं आया । बेचारे ठेठवार की रुसवाई हुई और बस ।

परंतु अब अंगद के पीछे काफी नज़रें लगी होतीं । लोग सोचते कि यह प्रायः घर नहीं जाता। खाने के लिए कभी–कभार काम के एवज में कोई कुछ दे देता है, परंतु उतने से ही इस जवान शरीर का पोषण भला कैसे हो सकता है ? परंतु अंगद था कि राग–द्वेष से परे जिए चला जा रहा था।

भादों की रात थी । पूर्णमासी थी, परंतु बादलों के कारण धुप अँधियारी छाई हुई थी । कोचरू पटेल अपनी बाड़ी की रखवाली कर रहा था कि सहसा उसे आवाज़ सुनाई पड़ी–

खीरा रे, भई खीरा, बड़ सुग्घर रुख हीरा ।
खाँव का दू–चार, खा न गा हजार ।

उसके बाद कुछ खीरे तोड़कर खाए गए और फिर सन्नाटा छा गया । उपर्युक्त कथन का आशय यह था कि ओ खीरे के अनमोल पेड़ ! मैं दो–चार खा लूँ क्या ? (और क्षणिक अंतराल से वही आवाज़ फिर गूँजी कि एक क्या हजार फल खा लो न ।)

सुनकर कोचरू पटेल दंग रह गया । पहले सोचा कि कहीं भूत–प्रेत न हो । बाहर निकलकर ललकारने की हिम्मत न हुई और खीरे खानेवाला खाकर चला गया । प्रातः जब उन्होंने गाँव के लोगों से इस बात की चर्चा की तो किसी ने कहा कि हो–न–हो सपना देखा होगा । और फिर उस गाँव में तथा आसपास कोई–न–कोई ऐसा ही सपना कभी–कभी देखने लगा ।

माघ आ गया । कछार में कलिंदर लगाए गए । रखवाली होने लगी । एक रात को महँगू ने अपनी बाड़ी में सुना–

कलिंदर रे, भई कलिंदर, पाके हवस तैं सुंदर,
खाँव का दू–चार,खान न गा हजार ।

(ओ भई कलिंदर, तुम सुंदर हो, पक चुके हो, खा लूँ क्या दो–चार ? एक क्या खाओ न हजार।)

और उसके बाद दो–चार कलिंदर तोड़कर भागने की आवाज़ । इस घटना ने अंगद को चोर सिद्ध कर दिया । बेचारा ! गाँव में पंचों की बैठक हुई । आखिर इस अंगद को क्या सज़ा दी जाए ? दिखने में तो यह चोर नहीं दिखता । आखिर पंच साब ने पूछा अंगद से –

''तुमने चोरी की है या नहीं ?''

''मैंने तो पूछकर ही फल तोड़े थे'' – अंगद ने कहा ।

''किससे पूछा था ?''

''पेड़ से'' - अंगद ने कहा ।

''पेड़ भी बोलता है क्या ?''

अंगद ने इसका कोई जवाब न दिया ।

काफी सोच–विचार के बाद अंगद की सज़ा तय हुई जो गुप्त रखी गई । दूसरे दिन कोचरू पटेल की बाड़ी में गाँव के लोग इकट्ठे हुए । अंगद को एक रस्से से बाँधा गया और आहिस्ते से कुएँ में उतारा गया । जब अंगद पानी की सतह पर पहुँचा तो ऊपर से एक ने आवाज़ दी–

कुआँ रे भई कुआँ, तोर नाम ले काँपे रुआँ ।
डुबकनियाँ खवाओं का दू–चार, खवा न गा हजार ।

(ओ भई कुआँ, तुम्हारे नाम से ही रोएँ काँप जाते हैं । दो चार डुबकियाँ खिलाऊँ क्या ? दो–चार क्या हजार खिलाओ न !)

और उसके बाद अंगद को दो–चार डुबकियाँ खिलाई गईं और पूछा गया–क्यों अंगद अब जी भरा या नहीं ? अंगद ने क्षमा–प्रार्थना की । उसे ऊपर लाया गया । लोग खूब हँसे । अंगद चुप । शर्म से उसने सिर नीचा कर लिया ।

फिर तो अंगद काम में जुटा, सो जुट ही गया। पत्नी खुश, बच्चे खुश और सारा गाँव खुश। परंतु अब भी अंगद 'आलसीराम' के नाम से पुकारा जाता, जबकि वह रात–दिन काम में लगा रहता। अंगद को अपने इस नाम की भी परवाह नहीं थी। मानों वह अपने भूतकाल को भूल गया था और जुट गया था स्वर्ग बनाने में – अपने गाँव को, अपनी धरती को।

शब्दार्थ :– **तरकीब**–उपाय, **रुसवाई**–अपमान, **एवज**–बदले में, **राग–द्वेष** –ईर्ष्या, डाह, **आहिस्ते**–धीरे, **परवाह**–चिंता, **भूतकाल**–बीता हुआ कल।

अभ्यास

पाठ से

1. अंगद का नाम आलसीराम क्यों पड़ा?
2. अंगद की पत्नी अपने बच्चों का पालन–पोषण कैसे करती थी?
3. अंगद को बदलने के लिए उसकी पत्नी ने कौन–कौन सी तरकीबें अपनाई?
4. कोचरू पटेल के खेत में कौन–सी घटना घटी?
5. ठेठवार की बातों का लोगों ने विश्वास क्यों नहीं किया?
6. किस घटना ने अंगद को चोर सिद्ध कर दिया?
7. पंचों ने अंगद को क्या सजा़ दी?
8. सजा मिलने के बाद अंगद के जीवन में क्या बदलाव हुआ?
9. **निम्नलिखित कथनों का आशय स्पष्ट कीजिए।**
   - **क. अंगद अंगद ही था।**
   - **ख. अंगद था कि राग–द्वेष से परे जिए चला जा रहा था।**
   - **ग. वह भूतकाल को भूल गया और जुट गया था स्वर्ग बनाने में – अपने गाँव को, अपनी धरती को।**
   - **घ. अंगद के पीछे काफी नज़रें लगी होतीं।**

पाठ से आगे

3PPFUU

1. अंगद की पत्नी बच्चों की देखभाल करती थी। अपने परिवार व बच्चों की अकेले देखभाल करने वाली महिलाओं को किन–किन परेशानियों का सामना करना पड़ता है? अपने घर तथा आस–पास रहने वाली माताओं–बहनों से इस समस्या पर बातचीत कर लिखिए।
2. आलसी व्यक्ति अपने परिवार व समाज पर किस प्रकार बोझ होता है, साथियों से चर्चा करके लिखिए।
3. अंगद द्वारा काम करना प्रारंभ करने से उसके परिवार में क्या परिवर्तन आए होंगे?
4. अंगद की सजा को गुप्त रखने के क्या कारण होंगे?

भाषा से

1. **निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखिए और वाक्यों में प्रयोग कीजिए।**
   पेट पालना, राह देखना, दंग रह जाना, सिर नीचा करना।
2. **इस लोककथा में दो लोकोक्तियों का प्रयोग हुआ है – 'यथा नाम तथा गुण' और 'न जेठ में सूखे, न भादों में हरे' इनका अर्थ लिखिए और उचित प्रसंगों में इनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।**

3. **नीचे लिखे शब्दों के विरुद्धार्थी शब्द लिखिए।**
   राग, अँधियारी, मोल, स्वर्ग, वर्तमान।

4. 'खेद' को पैदा करने वाले के लिए 'खेदजनक' शब्द का प्रयोग करते हैं। इसी प्रकार नीति से युक्त को नीतियुक्त, बुद्धि से हीन को बुद्धिहीन, राजा का दरबार को राजदरबार, कार्य में परायण को कार्यपरायण लिखा जाता है। इस तरह से बने पद सामासिक पद कहलाते हैं।

   नीचे लिखे सामासिक शब्दों का विग्रह कीजिए।

   ध्यानमग्न, स्नानगृह, धर्मशाला, भूतकाल, विश्रामगृह, संसदभवन, मर्यादाहीन, भाग्यहीन, मंदभाग्य।

5. **'श्रम** का **महत्ता' विषय पर दस वाक्य लिखिए। इस पाठ से आपको क्या संदेश मिलता है ?**
6. **'आलसीराम' लोक-कथा का सारांश पन्द्रह वाक्यों में लिखिए।**

योग्यता विस्तार

1. साल के बारह महीनों के हिन्दी नाम लिखिए।
2. पाठ में दी गई कविता के समान ही अन्य कविता बनाइए।
3. पूर्णमासी व अमावस्या के बारे में अपने घर के बड़ों से पूछकर उनके बारे में लिखिए।
4. आपने अपने बड़ों से कोई न कोई लोक कथा जरूर सुनी होगी, उसे लिखिए और अपनी कक्षा में सुनाइए।
5. अपने क्षेत्र में प्रचलित लोकगीतों का संकलन तैयार कीजिए।

पाठ – 14

नाचा के पुरखा : दाऊ मंदरा जी

–लेखक मंडल

ये पाठ म नाचा के महान कलाकार दुलार सिंह साव दाऊ मंदराजी के संक्षिप्त जीवन परिचय दे गेहे। ओ मन कलाकारी ले अपन अउ अपन गाँव, प्रदेश के नाँव उँच करिन। नाचा ल नवा रूप–रंग दे म मंदराजी अलगेच काम करिन, जेकर से नाचा के रूप बदलगे। दाऊ मंदराजी म संगठन क्षमता खूबेच रहिस हे। ओ हो मन नाचा के कलाकार मन ल एक संगठन म जोड़े के उदिम करिन। छत्तीसगढ़ के कला ल जग म उजागर करे बर जेमन अपन सरबर फूँक देइन, ओमा पहली नाव दाऊ दुलार सिंह मंदाराजी के हे।

लोकनाट्य ह ओतकेच जुन्ना आय जतके मनखे के जिनगी। लोक कलाकार मन जइसन सपना देखथें अउ ओला सही असन करे के उदिम करथें, उही ह लोकनाट्य कहाथे। 'नाचा' ह छत्तीसगढ़ के प्रमुख लोकनाट्य आवय। नाचा के सरलता, सहजता ह ओकर सुघरइ आय अउ ओकर प्रभाव के कारन ह इही म लुकाय हे।

नाचा देखइया मन मोहित हो जाथें अउ रातभर अपन जघा ले टस–ले–मस नइ होवँय। नाचा म जेन लोक–जीवन के महक,लोकहित के भाव अउ लोक संस्कृति के अधार हवय, ओही एकर आत्मा आय। नाचा के कोनो लिखित म बोली–भाखा (संवाद) नइ होवय। नाचा के कलाकार मन अपन हाजिरजवाबी म हाँसी–मजाक के बात ल त बोलथेंच, फेर एमा मनखे के सुभाव अउ समाज के कुरीति के बरनन घलो रहिथे। इही विशेषता ह देखइया मन ल रातभर बाँध के राखे रहिथे।

कहे जाथे के छत्तीसगढ़ के नाट्य परंपरा ह संसार के सब ले जुन्ना नाट्य परंपरा आय। रामगढ़ के पहाड़ी के रंगशाला ल सबले जुन्ना रंगशाला माने जाथे।

नाचा में पहिली खड़े साज के चलन रहिस। फेर कोनो नाचा दल (पार्टी) संगठित नइ रहिस। नाचा के कलाकार मन ल सकेल के दाऊ मंदराजी ह एक ठन नाचा दल बनाइस 'रवेली रिंगनी साज'। इही ह छत्तीसगढ़ के पहिली नाचा पार्टी आय।

नाचा बर अपन तन–मन–धन ल अर्पित करइया दुलार सिंह साव 'मंदरा जी' के जनम 1 अप्रैल सन् 1911 म राजनाँदगाँव ले 7 कि.मी. दूरिहा गाँव रवेली के मालगुजार परिवार म होय रहिस। ईंकर पिताजी के नाव दाऊ रामाधीन अउ माता जी के नाव रेवती बाई रहिस। ईंकर प्राथमिक शिक्षा कन्हारपुरी म पूरा होइस।

मंदरा जी दाऊ ह नानपन ले गाना–बजाना म धियान धरे रहिस। गाँव के कलाकार मन के संगत म रहिके तबला–चिकारा बजाय बर सिखिन। ओ समय म हरमुनिया(हारमोनियम) ल कोनो जानत नइ रहिन।

दाई–ददा मन के इच्छा रहिस के बेटा ह पढ़–लिख के मालगुजारी ल सँभाल लय,फेर बालक मंदरा जी के मन म नाचा अइसे रमिस के ओला नाचा छोड़ कुछू नइ भाइस। दाई–ददा ल ये सब थोरको पसंद नइ रहिस। एकरे सेती 14 साल के बालपन म मंदराजी के बिहाव कर देइन। फेर ओकर मूँड़ म तो नाचा के धुन सवार राहय,वो ह कहाँ बँधातिस घर–गृहस्थी म। निसदिन ओकर मन म नाचा के बोली–बात अउ गीत ह घुमरत राहय।

दुलारसिंह साव ले मंदराजी बने के एक ठन किस्सा हे। बचपन म बड़े जन पेट वाला,मोठ–डाँट लइका ह अँगना म खेलत राहय। उही अँगना के तुलसी चँवरा म एक ठन पेटला मूर्ति माड़े राहय। नना–बबा मन ह इही ल देख के दुलारसिंह ल मदरासी कहि दिन। काकी अउ भउजी मन ल घलो इही नाव भा गे। इही मदरासी ह आगू चलके मंदरा जी होगे।

मंदरा जी के मन नाचा म तो रमे राहय,फेर समाज के कइ ठन कुरीति अउ अँगरेजी राज के गुलामी ह घलो उँकर मन ल कचोटे। ओ मन छत्तीसगढ़ ल जगाना चाहत रहिन। छत्तीसगढ़ी समाज ल जगाये बर ओला नाचा ले बढ़िया उचित साधन अउ का मिलतिस। मंदराजी ह अब नाचा ल अपन मन माफिक रूप दे म भिड़गें।

मंदरा जी दाऊ मन सन् 1927–28 म नाचा के नामी कलाकार मन ल जोरे के काम शुरू कर दिन। गुंडरदेही (खल्लारी) के नारद निर्मलकर(परी),लोहारा भर्रीटोला के सुकलू ठाकुर(गम्मतिहा,जोकर),खेरथा अछोली के नोहर दास(गम्मतिहा,जोकर), कन्हारपुरी राजनाँदगाँव के रहइया रामगुलाल निर्मलकर (तबलची) अउ खुद मंदराजी दाऊ (चिकरहा),ये पाँचों कलाकार मिल के पहिली छत्तीसगढ़ी नाचा दल 'रवेली नाचा पार्टी' के अधार बनिन।

मंदरा जी दाऊ मन सन् 1930 म कलकत्ता ले हारमोनियम बिसा के लाइन। नाचा म पहिली बेर चिकारा के जघा म हारमोनियम बजाइन। खड़े साज नाचा ह मसाल के अँजोर म होवय। कलाकार मन ब्रम्हानंद अउ कबीर के निरगुनिया भजन आँवर–भाँवर घूम–घूम के गावँय।

ओ मन नाचा के रूप ल बदलिन। निरगुनिया भजन के जघा ''भाई रे तैं छुवा ल काबर डरे'' अउ ''तोला जोगी जानेव रे भाई'' जइसन सुग्घर–सुग्घर गीत ल शामिल करिन। नाचा अब मंच म होय लगिस,मंच उपर चँदोवा तनगे। बजकरी कलाकार मन बाजबट(तख्त)उपर बइठे लगिन। मसाल के जघा पेट्रोमेक्स (गैसबत्ती) आगे। छुही,गेरू,कोइला अउ हरताल के जघा स्नो,पावडर आगे। नवाँ–नवाँ गम्मत बनाय गिस। नाचा के समय घलो बदल दे गिस। अब रात के दस बजे ले बिहनिया के होवत ले नाचा होय लगिस।

तीर–तकार अउ दूरिहा–दूरिहा ले लइका सियान गाड़ी–गाड़ा म नाचा देखे बर जावँय। मंदरा जी अउ नाचा अब एक–दूसर के साथी बनगें। रवेली नाचा पार्टी के कार्यक्रम 1950–51 म रायपुर म होइस। डेढ़ महीना ले रोज नाचा होइस। रवेली नाचा पार्टी के कलाकार मन अतेक सुग्घर गम्मत देखावँय के शहर के जम्मो सिनेमाघर(टॉकीज) के खेल बंद होगे।

मंदरा जी ह नाचा अउ कलाकार मन बर अपन तन–मन–धन सबो ल खुवार कर दिस। नाचा के ओखी म समाज म अँजोर बगराय खातिर अपन मालगुजारी ल होम कर दिस। जिनगी के आखरी समय म उँखर तीर हारमोनियम के छोड़ कुछू नइ रहिस। 24 सितंबर 1984 म मंदराजी ह ये दुनिया ल छोड़ के स्वर्गवासी होगें।

हमर बड़े पुरखा मन अपन पीछू जेन चीज छोड़ के जाथें, ओकर ले समाज ह कई जुग तक ले अँजोर म चमकत रहिथे। उँकर करम–कमई के ममहई ह जन–जन के मन म बसे रहिथे।

मंदरा जी कहे रिहिन– "हमन गम्मत देखा के समाजिक कुरीति ल उजागर करेन। 'पोंगवा पंडित' गम्मत म छुवाछूत ल दूरिहा करे के कोसिस करेन। 'इरानी' गम्मत म हिन्दू–मुसलमान एकता समाज के आघू लायेन। 'मोर नाव दमाद अउ गाँव के नाव ससुरार' गम्मत म बाल–बिहाव ल रोके के कोसिस करेन।'मरारिन' गम्मत म देवर–भउजी के नता ल दाई–बेटा के रूप म देखायेन। अजादी के खातिर लड़ई चलत रहिस। हमर नाचा पार्टी ह घलो बीर–सेनानी मन के संग दिस। हमर गीत अउ गम्मत देश–प्रेम के भाव ले जुड़े रहय। अजादी के बात हमर गीत अउ गम्मत म रहय। एकरे सेती हमर नाचा म अँगरेजी सरकार ह रोक घलो लगाय रहिस।''

आज नाचा कलाकार मन के बीच म मंदराजी के बड़ सम्मान हे। उँकर जनम स्थान रवेली म हर साल 1 अप्रैल के छत्तीसगढ़ के छोटे–बड़े कलाकार मन सकलाथें अउ उँकर सुरता करथें।

छत्तीसगढ़ शासन ह घलो नाचा के पुरखा मंदराजी के सम्मान म हर साल कलाकार मन ल दू लाख रुपिया के इनाम देथे।

शब्दार्थ :– **पुरखा**–पूर्वज, **ओतकेच**–उतना ही, **लुकाय** – छिपाना, **सकेल**– इकट्ठा, **नानपन**–बचपन, **सिखिन** – सीखना, **थोरको** – थोड़ा भी **मननाफिक** – मन के अनुसार, **बिसाके** – खरीदकर, **जोगी** – योगी, ऋषि, **अतेक** – इतना, **खुवार** –नष्ट, **आघू** – आगे।

अभ्यास

पाठ से

1. लोकनाट्य ल कतेक जुन्ना माने गेहे?
2. लोगन मन नाचा से काबर परभावित होथे?
3. नाचा के आत्मा काला कहे गेहे?
4. नाचा देखइया मन ल नाचा के कोन से विशेषता रातभर बाँधे रहिथे?
5. दाऊ मंदरा जी ह नाचा के गम्मत में समाज के कोन–कोन से कुरीति ल उजागर करत रहिसे?
6. नाचा म पहिली चिकारा के जघा म कोन जिनिस के प्रयोग करय?
7. दाऊ मंदरा जी के मन काबर कचोटत रहिसे?
8. अंगरेजी सरकार ह नाचा पार्टी ल कोन कारण से बंद करवा देइस?

पाठ से आगे

1. तुमन ल कभू–कभू नाटक या प्रहसन देखे के अवसर मिले होही अऊ कोनो प्रहसन अऊ गम्मत के कोनो पात्र ल देखके तुँहर मन म कोनो भाव ह अच्छा लगिस होही। उन भाव ल अपन शब्द म लिखव।

3QH3ZS

2. ''भाई रे तै छुवा ल काबर डरे'' गीत ल नाचा म शामिल करे के पाछू म का सोच रहिस होही? विचार करके लिखव।
3. हमर पुरखा मन अपन पाछू कोन से जिनिस छोड़ के जाथे, जेकर कारण समाज ह कई युग तक ले अंजोर रहिथे।

भाषा से

3QQZ2F

1. खाल्हे दे वाक्य ल घलो पढ़व अऊ समझव

   मंदरा जी नाचत रहिन।

   इहां 'मंदरा जी' कर्ता अऊ नाचत ' कर्म हवय।

   ''जौन शब्द ले कोनो कारज के करे के बात होथे ओला क्रिया कहिथे।

   भेद – (1) सकर्मक (2) अकर्मक

   सकर्मक – जौन वाक्य में कत्तां अउ कर्म दूनो होथे वोला सकर्मक क्रिया कहिथे।

   जैसे – मोहन पुस्तक पढ़थे। मोहन का पढ़थे? उत्तर– पुस्तक

   अकर्मक क्रिया– जौन क्रिया में अर्थ ल स्पष्ट करे बर कर्म के आवश्यकता नई होए, वोला अकर्मक क्रिया कहिथे। जैसे– मै खाथव? का खाथव– नई पता लेकिन 'कौन' लगा के पूछे ले कर्त्ता के पता चलथे। अब खाल्हे देवाय सकर्मक क्रिया वाले वाक्य मन ल अकर्मक क्रिया वाले वाक्य में बदलव।

   1. मैं स्कूल जाथव 2. मैं पुस्तक देखथव 3. मैं खेल खेलथंव 4. मैं गॉव जात हॅव।
2. पाठ म 'पार्टी' अउ 'पेट्रोमेक्स' जइसन शब्द मन लिखाय हवय जेन ह विदेशी शब्द आय।

   'अइसने दूसर देश के भाषा के शब्द जेला हिन्दी म अऊ छत्तीसगढ़ी म शामिल कर ले गेहे वोला विदेशी शब्द कहिथें। पाठ म आये अइसने विदेशी शब्द ल छाँट के लिखव।
3. खाल्हे लिखाये शब्द मन के हिन्दी म उल्टा शब्द लिखव–

   नवा, दिन, अपन
4. खाल्हे लिखाय शब्द मन के दो–दो पर्यायवाची शब्द लिखव –

   संगवारी, जिनगी, मनखे, बेटा, प्रेम, तन

योग्यता विस्तार

3QZV43

1. छत्तीसगढ़ में कई ठन नाचा पार्टी हवय। ऊँखर बारे म पता लगावव अऊ सूची बनावव।
2. पाठ के कोनो नाटक ल गम्मत बनाके स्कूल म अभिनय करव।
3. ''खड़े साज के नाचा'' के बारे म घलो शिक्षक के सहायता से जानकारी लिखव।

पाठ – 15

सरलता और सहृदयता

43E4JH

श्री एस. के. दत्त

इंसान महान सिर्फ अपनी डिग्रियों और पद से ही नहीं होता अपितु अपनी सादगी, सहजता और सहृदयता से बनता है। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होने राष्ट्रपति जैसे सर्वोच्च पद पर आसीन होते हुए भी अपने मानवीय मूल्यों को हमेशा उपर रखा। घर के एक साधारण नौकर के प्रति उनके अपनत्व भरे व्यवहार को दर्शाती यह कहानी हृदय में संवेगों का संचार करती है।

वह नौकर बचपन से ही उनके घर काम करता आ रहा था। अब वह बूढ़ा हो गया था। उसने घर के बच्चों को अपनी उँगली पकड़कर चलना सिखाया था। अब वे बच्चे बड़े हो गए थे। वे बच्चे ऊँचे-ऊँचे पदों पर पहुँच गए थे। पर इस बूढ़े काका के प्रति सबके मन में स्नेह और सम्मान की भावना थी। सब उन्हें अपने परिवार का एक सदस्य समझते थे। परिवारवाले चाहते थे कि ये बूढ़े काका अब काम-काज करना बंद कर दें और शेष जीवन आराम से गुजारें, पर ये थे कि मानते ही नहीं थे। घर की सफाई, झाड़-पोंछा तथा कमरों की देख-भाल खुद किया करते थे।

एक दिन ये बूढ़े काका अपने बाबू के पढ़ने के कमरे की सफाई कर रहे थे। अपने बाबू के एक-एक सामान को उठाते, उसकी धूल पोंछते और उसे यथा-स्थान रख देते। अचानक जाने कैसे एक बहुत कीमती कलमदान उनके हाथ से छूट गया। कोई साधारण कलमदान नहीं था वह, कारीगरी का उत्कृष्ट नमूना था, बहुत कीमती तथा दुर्लभ था।

बूढ़े काका जी टूटे हुए कलमदान को एकटक देखते रहे। उन्हें कुछ सूझा नहीं कि अब क्या करें? चुपचाप वह टूटा हुआ कलमदान उठाकर मेज़ पर रख दिया, पर वे बहुत घबरा गए। 'बाबू आएँगे, तो वे उनसे क्या कहेंगे ? वे डाँटेंगे, तो मैं क्या उत्तर दूँगा ? ऐसा कीमती कलमदान तो अब मिलेगा नहीं, कितना दुख होगा 'बाबू' को ?' यही सोच-सोचकर उनका दिल बैठा जा रहा था।

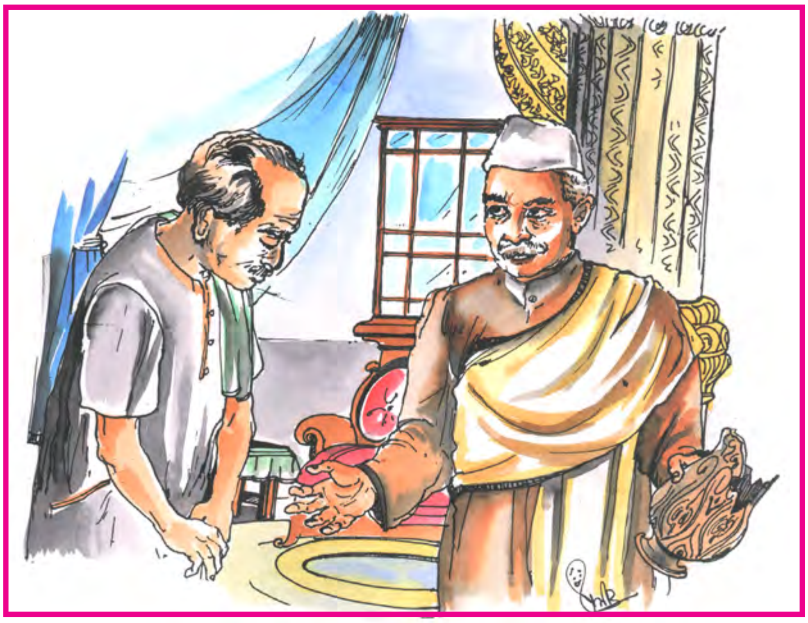

सायंकाल 'बाबू' आए और भोजन के उपरान्त अपने कमरे में अपना दैनिक काम–काज निपटाने चले गए। कमरे में पहुँचे ही थे कि उनकी नज़र टूटे हुए कलमदान पर पड़ी। वे इतने कीमती कलमदान को टूटा हुआ देखकर बहुत दुखी हुए। उन्होंने उसे उठाया तो देखा उसके दो टुकड़े हो चुके थे। उन्होंने बूढ़े काका को आवाज़ दी–'काका। काका।'

बूढ़े काका ने डरते हुए प्रवेश किया।

'यह कलमदान किसने तोड़ा ?'

'मुझसे टूट गया, मालिक।'

'कैसे ?'

'मैं सफाई कर रहा था कि अचानक हाथ से छूट गया।'

'जानते हो यह कितना कीमती था ? ऐसा दूसरा कलमदान कहाँ मिलेगा ?'

बूढ़े काका सिर नीचा किए सुनते रहे।

'अब खड़े–खड़े मेरा मुँह क्या देख रहे हो, जाओ यहाँ से। .... और हाँ, कल से मेरे पढ़ने के कमरे की सफाई मत करना।' बूढ़ा डाँट खाकर, सिर नीचे किए चुपचाप चला गया। उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। इससे पहले अपने 'बाबू' से उसे कभी ऐसी डाँट नहीं खानी पड़ी थी।

रात हो गई। 'बाबू' अपने बिस्तर पर लेटे–लेटे सोने की कोशिश कर रहे थे, पर न जाने क्यों आज नींद आने का नाम ही नहीं लेती थी। उनका मन अशांत था। वे रह–रहकर अपने कलमदान, बूढ़े काका और उनके प्रति अपने व्यवहार के बारे में सोच रहे थे।

'बचपन से ही ये काका हमारे यहाँ काम कर रहे हैं। इन्होंने तो मुझे उँगली पकड़कर चलना सिखाया। क्या उनके प्रति मेरा ऐसा कठोर व्यवहार उचित था ?'

'क्या एक कलमदान एक व्यक्ति के सम्मान से अधिक कीमती है ?'

'अगर गलती से उनसे वह कीमती कलमदान टूट भी गया, तो क्या हुआ ? यदि वह मुझसे गिरकर टूट जाता तो .... ?'

'कितनी सेवा की है उन्होंने हमारे परिवार की ? कभी शिकायत का कोई मौका नहीं दिया, पर आज मैंने उन पर इतना क्रोध करके क्या उनकी सारी सेवा पर पानी नहीं फेर दिया ?'........इस तरह के अनेक सवाल 'बाबू' के मन में उठते और उनका मन अधीर हो उठता।

रात काफी हो चुकी थी। बाबू ने बूढ़े काका को आवाज़ दी। बूढ़े काका भी सो नहीं रहे थे। वे भी अपनी गलती को याद करके आँसू बहा रहे थे। अचानक बाबू की आवाज़ सुनकर उन्होंने आँसुओं को पोंछा और वे डरते–डरते 'बाबू' के कमरे की ओर जाने लगे। परंतु काका ने देखा बाबू उन्हीं की ओर आ रहे हैं। काका की घबराहट और बढ़ गई। वे सोचने लगे, 'शायद बाबू का गुस्सा अभी ठंडा नहीं हुआ है।' काका सिर नीचे करके खड़े हो गए।

'काका ! मुझे माफ कर दो। मैं अपने व्यवहार पर शर्मिंदा हूँ।' .... अचानक बाबू के मुँह से निकला।

बूढ़ा काका उनके मुँह की ओर देखता रह गया। इतना बड़ा आदमी एक छोटे-से नौकर से माफी माँग रहा है। वह 'बाबू' के पैरों में गिरकर माफी माँगने को झुका ही था कि बाबू ने उसे बीच में ही रोक दिया। 'काका ! क्या आप मुझे क्षमा नहीं करेंगे ?'

'बाबू ! आप ये क्या कह रहे हैं ? मुझसे जो भूल हुई है, मैं उसके लिए शर्मिंदा हूँ। फिर कहाँ आप और कहाँ मैं .... ?'

बाबू बोले, 'जब तक आप मेरे सर पर हाथ रखकर नहीं कहेंगे कि आपने मुझे क्षमा कर दिया है, मुझे चैन नहीं पड़ेगा।' बूढ़े काका की आँखों से आँसुओं की झड़ी लग गई। उन्हें बाबू के सिर पर हाथ रखकर कहना पड़ा, 'अच्छा, चलो, मैंने अपने 'बाबू' को क्षमा कर दिया।'

बच्चो ! क्या तुम जानते हो ये 'बाबू' कौन थे ? ये 'बाबू' थे भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद। यह घटना तब की है, जब वे राष्ट्रपति भवन में थे और उनके एक पुराने बूढ़े सेवक से उनका एक बेशकीमती कलमदान टूट गया था जो उन्हें किसी बड़े आदमी ने उपहार में दिया था। ज़रा सोचो, भारत के राष्ट्रपति होकर भी वे कितने उदार, सहृदय और विनम्र थे। घमंड तो उन्हें छू तक न गया था।

शब्दार्थ :– **कमलदान** – कलम रखने का पात्र, दिल बैठना (मुहावरा), **सायंकाल** – संध्या, शाम, **अचानक** – सहसा, अकस्मात्, **कोशिश** – प्रयत्न, **अधीर** – अस्थिर, बेचैन, **घबराहट** –व्याकुलता, अधीरता, **शर्मिन्दा** – लज्जित, **उदार** – शीलवान, **सहृदय** – दयालु, **विनम्र** –सुशील।

अभ्यास

पाठ से

1. काका के बाबू कौन थे?
2. बूढ़े काका का, घर के सभी लोग सम्मान क्यों करते थे?
3. परिवार वाले क्यों चाहते थे कि बूढ़े काका काम करना बंद कर दें?
4. राजेन्द्र बाबू का मन अशांत क्यों था?
5. राजेन्द्र बाबू को नींद क्यों नहीं आ रही थी?
6. कीमती कलमदान कैसे टूटा ?
7. बूढ़े काका क्यों नहीं सो पा रहे थे?
8. राजेन्द्र बाबू ने बूढ़े काका से क्षमा क्यों माँगी?
9. बूढ़े काका ने बाबू के सिर पर हाथ रखकर क्या कहा?
10. राजेन्द्र बाबू को अपने किए पर पछतावा क्यों हुआ?

पाठ से आगे

43MZLA

1. 'क्या एक कलमदान एक व्यक्ति के सम्मान से अधिक कीमती है'? विचार कर लिखिए।
2 बूढ़े काका ने सच बोलकर अपनी गलती स्वीकार की और डाँट खाई। वो झूठ बोल कर कलमदान तोड़ने का दोष दूसरे पर लगा सकते थे। क्या उनका दूसरे पर दोष मढ़ना उचित होता? अपने विचार कारण सहित लिखिए।
3. बूढ़े काका ने गलती की थी इस लिए राजेन्द्र बाबू ने उन्हे डाँटा। राजेन्द्र बाबू ने डाँट कर सही किया या गलत? अपने विचार लिखिए।
4. बूढ़े काका को डाँटने के बाद राजेन्द्र बाबू बेचैन और अधीर हो गए थे। क्या आपके साथ भी ऐसी कोई घटना हुई है जिससे आप बेचैन हो गए हों?
5. बूढ़े काका ने कलमदान जान बुझ कर नहीं तोड़ा भी फिर भी उन्होंने चुप–चाप डाँट सह ली। अगर आप उनकी जगह होते तो क्या करते?

भाषा से

(1) इन शब्दों को देखिए –

आजन्म, अतिशय, उपाध्यक्ष, पराजय, प्रबल, विवाद। इन शब्दों में मूल शब्दों के साथ 'आ', 'अति', 'उप', परा 'प्र' और 'वि' जुड़े हैं, जो शब्दों के अर्थ का विस्तार कर रहे हैं। इस प्रकार के अव्ययों याशब्दों को जो किसी शब्द के आगे जुड़ कर उसके अर्थ में विस्तार कर देते हैं, उपसर्ग कहते हैं।

43HVMX

अब आप निम्नालिखित शब्दों से उपसर्ग पहचान कर अलग कीजिए–

प्रतिदिन, आक्रमण, संयोग, सुगम, अभिनंदन, अनुकरण, अधिकार, उत्तीर्ण, निबंध, उपग्रह।

2. अब इन शब्दों को देखिए –

धनवान, सफलता, आनेवाला, श्रेष्ठतर, पहनावा, घटिया, होनहार, कुलीन, लेखक, सूखा।

इन शब्दों में क्रमशः 'वान', 'ता', 'वाला', 'तर', 'आवा', इया , हार', 'ईन' 'अक', 'आ' शब्दों के पीछे लगकर शब्दों को विशिष्ट अर्थ प्रदान कर रहें हैं। इस प्रकार के शब्दों अथवा अव्ययों को प्रत्यय कहते है।

अब आप निम्नलिखित शब्दों से प्रत्यय अलग कीजिए :–

घबराहट, कुलीन, चमक, पवित्र, पाँचवाँ, मिलनसार, घूसखोर, अफीमची, सुनवाई।

3. नीचे लिखे शब्दों में प्रत्यय और उपसर्ग दोनों हैं। उन्हें अलग कीजिए –

अपमानित, अधार्मिक, अभिमानी, बेचैनी, दुस्साहसी, उपकार, अनुदारता, निर्दयी

4. निम्नलिखित शब्दों को ध्यान से देखिए –

पशु, सुंदरता, व्यथा, मोहन, दिल्ली, मारना

इन शब्दों से जाति, गुण, भाव, व्यक्ति, स्थान तथा क्रिया का बोध हो रहा है इस प्रकार के शब्दों को संज्ञा कहते हैं।

अब इन शब्दों को भी देखिए–

मनुष्य, नदी, नगर, पर्वत, पशु, पक्षी, लड़का, कुत्ता, गाय, घोड़ा, नारी, गाँव।

इन शब्दों से व्यक्ति स्थान, वस्तु आदि की जाति का बोध हो रहा है इस प्रकार के संज्ञा शब्दों को

जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। इसी प्रकार अमेरिका, नमक, अनिल जैसे शब्द एक व्यक्ति, वस्तु या स्थान का बोध कराते हैं इसलिए इस प्रकार के संज्ञा शब्दों को व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।

बुढ़ापा, मिठास, बचपन, मोटापा, थकावट, चढ़ाई जैसे शब्दों से किसी व्यक्ति या पदार्थ की अवस्था, गुण–दोष अथवा गुणधर्म का बोध होता है इसलिए इन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

अब आप निम्नलिखित शब्दों में से जातिवाचक, व्यक्तिवाचक तथा भाववाचक, संज्ञाओं को पहचान कर लिखिए –

सहायता, नारी, रामायण, जुलूस, प्यास, कपिला, मद्रास, सलाह, संतोष, ताँबा, पिता, युवक, गंदा, जवान, चोर, रसगुल्ला, सूरज, ऐरावत, परिवार, कक्षा, रामायण।

5. नीचे लिखे हुए वाक्यों में रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए–

क. मैं चटाई पर लेट गया।

ख. मोहन कहानी सुनाते–सुनाते रो पड़ा।

ग. तिरंगे के सम्मान में सर झुक जाता है।

घ. वह रायगढ़ से लौट आया है।

ङ. सीता कल ही दिल्ली पहुँच गयी थी।

च. ट्रेन जल्दी ही आ जाएगी।

रेखांकित शब्दों में दो अलग–अलग क्रियाएँ एक साथ मिलकर किसी घटना को दिखा रही हैं। इस प्रकार जब दो अलग क्रिया शब्द एक साथ मिल कर एक नयी पूर्णक्रिया का बोध कराते हैं तो उन्हें संयुक्त क्रिया कहते हैं।

अब आप नीचे दिए हुए क्रिया शब्दों में से नये संयुक्त क्रिया शब्द बनाइए तथा वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

पढ़ना, खाना, आना, करना, पाना, लिखना, जाना, लड़ना।

नीचे लिखे वाक्यों को पढ़िए और समझिए :

क. ‘यह कोई साधारण कलमदान नहीं था ?’

ख. ‘कोई साधारण कलमदान नहीं था यह।’ दोनों वाक्यों का अर्थ एक ही है, लेकिन दूसरे वाक्य में शब्दों का स्थान बदलकर कथन अधिक सशक्त बना दिया गया है।

आप भी इस तरह के दो उदाहरण लिखिए –

6. **निम्नलिखित मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए।**

दिल बैठ जाना, खड़े–खड़े मुँह देखना,पानी फेर देना,झड़ी लग जाना।

7. **निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।**

दुर्लभ, उदार, उत्कृष्ट, साधारण, प्रश्न।

8. **निम्नलिखित शब्द–युग्मों को ध्यान से पढ़िए और उन्हें इस प्रकार वाक्यों में प्रयोग कीजिए कि उनके अर्थ स्पष्ट हो जाएँ।**

चिता–चीता, पिता–पीता, कुल–कूल, ओर–और, समान–सामान, घटना–घटाना,दिया–दीया।

9. **सही जोड़ी मिलाइए।**

दैनिक	–	काका
कीमती	–	पद
ऊँचा	–	कामकाज
बूढ़े	–	कलमदान
शेष	–	मन
अधीर	–	जीवन

योग्यता विस्तार

1. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को 'बाबू' के नाम से जाना जाता है इसी प्रकार महात्मा गाँधी को 'बापू' कहा जाता हैं। हमारे देश के ऐसे बहुत सारे महापुरुष एवं क्रांतिकारी हुए है जिन्हें हम उनके उपनाम से जानते हैं। आप उनके वास्तविक नाम तथा उनके उपनाम की सूची तैयार कीजिए।
2. राजेन्द्र बाबू के विषय में जानकारी पुस्तकालय से ढूँढकर पढ़िए और उनकी चारित्रिक विशेषताओं का लेखन कीजिए।
3. 'सादा जीवन उच्च विचार' विषय पर कक्षा में अपने विचार व्यक्त कीजिए।
4. गाँधीजी और लाल बहादुर शास्त्री जी का जीवन भी बहुत सरल और सादा था। उनके जीवन से ऐसी घटनाएँ खोजकर कक्षा में सुनाइए।

446RPK

ikB & 16

चचा छक्कन ने केले खरीदे

44FHR8

– श्री इम्तियाज़ अली

मनुष्य अपनी भावनाओं, लालसाओं और इच्छाओं को छिपाने का हर संभव प्रयास करता है। परन्तु मौका आते ही उसका लालच किसी न किसी रूप में बाहर आ जाता है। प्रस्तुत हास्य कहानी में इम्तियाज अली नें चचा छक्कन के माध्यम से मनुष्य के इसी स्वभाव को चित्रित किया है। चचा छक्कन के केले खाने की लालच ने उन्हें तरह–तरह के बहाने बनाने के लिए मजबूर कर दिया। और उन्होंने पूरे परिवार के हिस्से के केले खा लिए।

एक बात मैं शुरू में ही कह दूँ । इस घटना का वर्णन करने में मेरी इच्छा यह हरगिज़ नहीं है कि इससे चचा छक्कन के स्वभाव के जिस अंग पर प्रकाश पड़ता है, उसके संबंध में आप कोई स्थायी राय निर्धारित कर लें । कई बार मैं खुद देख चुका हूँ कि शाम के वक्त चचा छक्कन बाज़ार से कचौरियाँ या गँड़ेरियाँ या चिलगोज़े और मूँगफलियाँ एक बड़े–से रूमाल में बाँधकर घर पर सबके लिए ले आते हैं । और फिर क्या बड़ा और क्या छोटा, सबमें बराबर–बराबर बाँटकर खाते–खिलाते रहे हैं । पर उस रोज़ अल्लाह जाने क्या बात हुई कि .... ।

उस रोज़ तीसरे पहर के वक़्त इत्तफाक से चचा छक्कन और बिंदो के सिवाय कोई भी घर में मौजूद न था । मीर मुंशी साहब की पत्नी को बुखार था । चची दोपहर के खाने से निवृत्त होकर उनके यहाँ चली गई थीं । बिन्नों को घर छोड़े जा रही थीं कि चचा ने कहा – ''बीमार को देखने जा रही हो तो शाम से पहले भला क्या लौटना होगा ? बच्ची पीछे घबराएगी । साथ ले जाओ, वहाँ बच्चों में खेलकर बहली रहेगी ।'' चची बड़बड़ाती हुई बिन्नो को साथ ले गई, नौकर चची को मीर मुंशी साहब के घर तक पहुँचाने भर जा रहा था, मगर बिन्नो साथ कर दी गई तो बच्ची के लिए उसे भी वहाँ ठहरना पड़ा ।

लल्लू के मदरसे का डी.ए.वी. स्कूल से क्रिकेट का मैच था । वह सुबह से उधर गया हुआ था । मोदे की राय में लल्लू अपनी टीम का सबसे अच्छा खिलाड़ी है । अपनी इस राय की बदौलत उसे अक्सर क्रिकेट मैचों का दर्शक बनने का मौका मिल जाता है । इसलिए साधारण नियमानुसार आज भी वह लल्लू की अरदली में था । दो बजे से सिनेमा का मैटिनी शो था । दद्दू चचा से इज़ाज़त लेकर तमाशा देखने जा रहा था । छुट्टन को पता लगा कि दद्दू तमाशे में जा रहा है तो ऐन वक्त पर वह मचल गया और साथ जाने की ज़िद करने लगा । चचा ने उसकी पढ़ाई–लिखाई के विषय में चची का हवाला दे–देकर एक छोटा किन्तु विचारपूर्ण भाषण देते हुए उसे भी अनुमति दे दी । बात असल यह है कि चची कहीं मिलने गई हों, तो बाकी लोगों को बाहर जाने के लिए इज़ाज़त लेना कठिन नहीं होता। ऐसे स्वर्ण अवसरों पर चचा पूर्ण एकांत पसंद करते हैं । जिन कार्यों की ओर बहुत समय से ध्यान देने का अवसर नहीं मिला होता, ऐसे समय चचा ढूँढ़–ढूँढ़कर उनकी ओर ध्यान देते हैं ।

आज उनकी क्रियाशील बुद्धि ने चची की अनुपस्थिति में घर के तमाम पीतल के बरतन आँगन में जमा कर लिए थे । बिंदो को बाज़ार भेजकर दो पैसे की इमली मँगाई थी । आँगन में मोढ़ा डालकर बैठ गए थे । पाँव मोढ़े के ऊपर रखे हुए थे । हुक्के का नैचा मुँह से लगा हुआ था । व्यक्तिगत निगरानी में पीतल के बरतनों की सफाई की व्यवस्था हो रही थी ।

बिंदो ने कुछ कहे बिना इमली लोटे में भिगो दी । चचा ने अभिमान से संतोष का प्रदर्शन किया- ''कैसी बताई तरकीब ? ले, अब बावरचीखाने में जाकर बरतन माँजने की थोड़ी-सी राख ले आ । किस बरतन में लाएगा भला ?''

बिंदो अभी बावरचीखाने से राख ला भी न पाया था कि दरवाज़े पर एक फलवाले ने आवाज़ लगाई । कलकतिया केले बेचने आया था । उसकी आवाज़ सुनकर कुछ देर तक तो चचा खामोश बैठे हुक्का पीते रहे । कश अलबत्ता जल्दी-जल्दी लगा रहे थे । मालूम होता था, दिमाग में किसी किस्म की कशमकश ज़ारी है । जब आवाज़ से मालूम हुआ कि फलवाला वापस जा रहा है तो जैसे बेबस-से हो गए । बिंदो को आवाज़ दी- ''ज़रा जाकर देखियो तो, केले किस हिसाब से देता है ।''

बिंदो ने वापस आकर बताया- ''छह आने दर्जन ।''

''छह आने दर्जन, तो क्या मतलब हुआ, चौबीस पैसे के बारह । बारह दूनी चौबीस, यानी दो पैसे का एक; ऊँहूँ, महँगे हैं । जाकर कह, तीन के दो देता हो, तो दे जाए ।''

दो मिनट बाद बिंदो ने आकर बताया कि वह मान गया और कितने केले लेने हैं, पूछ रहा है । फलवाला आसानी से सहमत हो गया तो चचा की नीयत में खोट आ गई । ''यानी तीन पैसे के दो ? क्या ख्याल है मँहगे नहीं इस भाव पर ?''

बिंदो बोला - ''अब तो उससे भाव का फैसला हो गया ।''

''तो किसी अदालत का फैसला है कि इतने ही भाव पर केले लिए जाएँ ? हम तो तीन आने दर्जन लेंगे; देता है तो दे, नहीं देता है न दे । वह अपने घर खुश, हम अपने घर खुश ।''

बिंदो असमंजस की दशा में खड़ा रहा । चचा बोले, ''अब जाकर कह भी तो सही, मान जाएगा ।'' बिंदो जाने से कतरा रहा था । बोला, ''आप खुद कह दीजिए ।''

चचा ने जबाव में आँखें फाड़कर बिंदो को घूरा । वह बेचारा डर गया, मगर वहीं खड़ा रहा । चचा को उसका असमंजस में पड़ना किसी हद तक उचित मालूम हुआ । उसे तर्क का रास्ता समझाने लगे, ''तू जाकर यूँ कह, मियाँ ने तीन आने दर्जन ही कहे थे, मैंने आकर गलत भाव कह दिया । तीन आने दर्जन देने हों तो दे जा ।''

बिंदो दिल कड़ा करके चला गया । चचा जानते थे, भाव ठहराकर मुकर जाने पर केलेवाला शोर मचाएगा । बाहर निकलना युक्तिपूर्ण न मालूम होता था । दबे पाँव अंदर गए और कमरे की जो खिड़की ड्योढ़ी में खुलती थी उसका पट ज़रा-सा खोलकर बाहर झाँकने लगे । फलवाला गरम हो रहा था, ''आप ही ने तो भाव ठहराया और अब आप ही ज़बान से फिर गए । बहाना नौकर की भूल का, जैसे हम समझ नहीं सकते । या बेईमानी, तेरा ही आसरा !'' बिंदो गरीब चुप करके खड़ा था । फलवाला बकता-झकता, खोंचा उठा चलने लगा । बिंदो भी अंदर आने को मुड़ गया । वह दरवाज़े तक पहुँचने न पाया था कि फलवाला रुक गया । खोंचा उतारकर बोला – ''कितने लेने हैं ?''

बिंदो अंदर आया तो चचा मोढ़े पर जैसे किसी विचार में तल्लीन हुक्का पी रहे थे । चौंककर बोले–''मान गया ? हम कहते थे न, मान जाएगा । हम तो इन लोगों की नस-नस से वाकिफ हैं । तो कै केले लेने मुनासिब होंगे ?'' चचा ने उँगलियों के पोरों पर गिन-गिनकर हिसाब लगाया–हम आप, छुट्टन की माँ, लल्लू, दद्दू, बिन्नो और छुट्टन । गोया छह, छह दूनी क्या हुआ ? खुदा तेरा भला करे, बारह । यानी एक दर्जन । प्रत्येक आदमी को दो केले बहुत होंगे । फल से पेट तो भरा नहीं जाता । मुँह का स्वाद बदल जाता है । पर देखियो, दो-तीन गुच्छे अंदर लेकर आना, हम आप उसमें से अच्छे-अच्छे केले छाँट लेंगे ।

फलवाले ने शिकायत की सदा लगाते हुए केलों के गुच्छे अंदर भेज दिए । चचा ने केलों को दबा-दबाकर देखा, उनकी चित्तियों का अध्ययन किया और दर्जनभर अलग किए । केलेवाला बाकी केले लेकर बड़बड़ाता हुआ विदा हो गया । चचा ने बिंदो की ओर रुख किया – ''ले, इन्हें खाने की डलिया में हिफाज़त से रख दे । रात के खाने पर लाकर रखना । और जल्दी से आकर बरतन माँजने के लिए राख ला । बड़ा समय नष्ट हो गया इस सौदे में ।''

बिंदो केले अंदर रख आया और बावरचीखाने से राख लाकर बरतन माँजने लगा । ''यूँ ..... ज़रा ज़ोर से । हाँ, ताकि बरतन पर रगड़ पडे । इस तरह पीतल के बरतन साफ करने के लिए ज़रूरत इस बात की होती है कि इमली के प्रयोग से पहले बरतनों को एक बार खूब अच्छी तरह माँजकर साफ कर लिया जाए । ऐसे सब बरतनों की सफाई के लिए इमली निहायत लाज़वाब नुस्खा है । गिरह में बाँध रख । किसी रोज़ काम आएगा । और पीतल ही का क्या ज़िक्र ? धातु के सभी सामान इमली से दमक उठते हैं । अभी-अभी तू आप देखियो कि इन काले-काले बरतनों की सूरत क्या निकल आती है ? हाँ, और वह, मैंने कहा – केले एहतियात से रख दिए हैं न ?..... यूँ बस मँज गया । अब रगड़ उस पर इमली । इस तरह । देखा, मैल किस तरह कटता है, कैसी चमक आती जा रही है । यह इमली सचमुच बड़ी चीज़ है । मगर बिंदो मेरे भाई, ज़रा उठियो तो । उन केलों से जो दो हमारे हिस्से के हैं, हमें ला दीजियो । हम तो अभी ही खाए लेते हैं, बाकी लोग जब आएँगे, अपना-अपना हिस्सा खाते रहेंगे ।''

बिंदो ने उठकर दो केले ला दिए । चचा ने मोढ़े पर उकड़ूँ बैठे-बैठे पैंतरा बदला और केलों को थोड़ा-थोड़ा छीलना और मज़े से खाना शुरू किया । ''अच्छे हैं केले, बस यूँ ही ज़रा ज़ोर से हाथ, इस तरह । छुट्टन की अम्माँ देखेंगी तो समझेंगी, आज ही नए बरतन खरीद लिए हैं । और वह मैंने कहा, अब कै केले बाकी रह गए हैं ?

दस ? हूँ। खूब चीज़ है न इमली ? एक टके के खर्चे में कायापलट हो जाती है। मगर बिंदो, इन दस केलों का हिसाब बैठेगा किस तरह ? यानी हम शरीक न हों तब तो हर एक को दो–दो केले मिल जाएँगे। लेकिन हमारे साझे के बिना शायद दूसरों का जी खाने को न चाहे। क्यों ? छुट्टन की अम्मी तो हमारे बगैर नज़र उठाकर भी न देखना चाहेंगी। तूने खुद देखा होगा, कई बार ऐसा हो चुका है। और बच्चों में भी दूसरे हज़ार ऐब हों, पर इतनी खूबी ज़रूर है कि वे लालची और स्वार्थी नहीं हैं। सबने मिलकर शरीक होने के लिए हमसे अनुरोध शुरू किया तो बड़ी मुश्किल होगी। बराबर–बराबर बाँटने के लिए केले काटने ही पड़ेंगे और कलकतिया केले की बिसात भला क्या होती है ? काटने में सबकी मिट्टी पलीद होगी। मगर हम कहते हैं कि समझो प्रत्येक आदमी एक–एक का हिसाब रख दिया जाए तो ? दो–दो न सही एक–एक ही हो, मगर खाएँ तो सब हँसी–खुशी से, मिलजुलकर। ठीक है ना ? गोया छह रख छोड़ने ज़रूरी हैं। तो इस सूरत में कै केले ज़रूरत से ज्यादा हुए ? चार ना ? हूँ, तो मेरे ख्याल से वे चारों ज्यादा केले ले आना। बाकी के छह तो अपने ठीक हिसाब के मुताबिक बँट जाएँगे।''

बिंदो उठकर चार केले ले आया। चचा ने इत्मीनान से उन्हें बारी–बारी खाना शुरू कर दिया।

''हाँ, तो तू भी कायल हुआ न इमली की करामात का ? असंख्य लाभों की चीज़ है। मगर क्या कीजिए, इस ज़माने में देश की चीज़ों की ओर कोई ध्यान नहीं देता। यही इमली अगर विलायत से डिब्बों में बंद होकर आती तो ज़नाब लोग इस पर टूट पड़ते। हर घर में इसका एक डिब्बा मौजूद रहता।''

''तो अब छह ही बाकी रह गए हैं ना ? कुछ नहीं, बस ठीक है। सबके हिस्से में एक–एक आ जाएगा। हमें हमारे हिस्से का मिल जाएगा, दूसरों को अपने–अपने हिस्से का। काट–छाँट का तो झगड़ा ख़तम हुआ। अपने–अपने हिस्से का केला लें और जो जी चाहे करें। जी चाहे आज खाएँ, आज जी न चाहे, कल खाएँ। और क्या, होना भी यूँ ही चाहिए। इच्छा के बिना कोई चीज़ खाई जाए तो शरीर का अंश नहीं बनने पाती, यानी अकारथ चली जाती है। कोई चीज़ आदमी खाए उसी वक्त, जब उसके खाने को जी चाहे। छुट्टन की अम्माँ की हमेशा यही कैफियत है। जी चाहे तो चीज़ खाती हैं, न चाहे तो कभी हाथ नहीं लगातीं। हमारा अपना भी यही हाल है। ये फुटकर चीज़ें खाने को कभी कभार ही जी चाहता है। होना भी ऐसा ही चाहिए। अब ये ही केले हैं, बीसियों मर्तबा दुकानों पर रखे देखे, कभी रुचि न हुई। आज जी चाहा तो खाने बैठ गए। अब फिर न जाने कब जी चाहे। हमारी तो कुछ ऐसी ही तबीयत है। न जाने शाम को जब तक सब आएँ, रुचि रहे या न रहे। निश्चय से क्या कहा जा सकता है ? दिल ही तो है। मुमकिन है उस वक्त केले के नाम से मन में घृणा हो। तो ऐसी सूरत में क्या किया जाए ? हम तो बाकी छह केलों में से अपने हिस्से का एक केला अभी खा लेते हैं। क्यों? और क्या ? अपनी–अपनी तबीयत, अपनी–अपनी भूख। जब जिसका जी चाहे, खाए। उसमें तकल्लुफ क्या? तकल्लुफ में तकलीफ ही तकलीफ है। ऐसे मामलों में तो बेतकल्लुफी ही अच्छी है।''

''तो ज़रा उठियो मेरे भाई ! बस, मेरे ही हिस्से का केला लाना। बाकी के सब वहीं अच्छी तरह रखे रहें।''

बिंदो ने आज्ञा का पुनः पालन किया। चचा केला छीलकर खाने लगे।

''देख, क्या सूरत निकल आई बरतनों की ? सुभान–अल्लाह। यह इमली का नुस्खा मिला ही ऐसा है। अब इन्हें देखकर कोई कह सकता है कि पुराने बरतन हैं ! बस, यह इमली की बात आगे न निकलने पाए। बच्चों से भी ज़िक्र न कीजियो, वरना निकल जाएगी बात। कब तक आएँगे बच्चे ? लल्लू का मैच तो शायद शाम से पहले खतम न हो। उसके खाने–पीने का इंतज़ाम टीमवालों ने कर दिया होगा। वरना, खाली पेट क्रिकेट किससे खेला जाता है ? कोई इंतज़ाम न होता तो वहीं खाना मँगवा सकता था। खूब तर माल उड़ाया होगा आज। मेवे–मिठाई से ठसाठस पेट भर लिया होगा। चलो, क्या हर्ज़ है, यह उमर खाने–पीने की है। और फिर घर के दूसरे लोग बढ़िया–बढ़िया चीज़ें खाएँ तो

वह बेचारा क्यों पीछे रहे ? दद्दू और छुट्टन तो टिकट के दाम के साथ खाने-पीने के लिए भी पैसे लेकर गए हैं । और क्या ? वहीं किसी दुकान पर मेवा-मिठाई उड़ा रहे होंगे । खुदा खैर करे, गरिष्ठ चीज़ें खा-खाकर कहीं बदहज़मी न कर जाए। साथ में कोई रोक-टोक करनेवाला नहीं है । तकलीफ होती है । बिन्नो तो माँ के साथ है । वह ख्याल रखेगी कि कहीं ज्यादा न खा जाए । मगर मैं कहता हूँ कि केले हमने आज बड़े बेमौके लिए । उस वक्त ख्याल ही नहीं आया कि आज तो वे सब बड़ी-बड़ी नियामतें उड़ा रहे होंगे । केलों को कौन पूछने लगा ? और तूने भी याद न दिलाया, वरना क्यों लेते इतने बहुत-से केले ? बेकार नष्ट हो जाएँगे । पर अब खरीद जो लिए। किसी-न-किसी तरह ठिकाने तो लगाने ही पड़ेंगे । फेंके तो नहीं जा सकते । फिर ले आ यहीं। मज़बूरी में मैं ही खतम कर डालूँ ।''

शब्दार्थः– **हरगिज**–कदापि, **चिलगोजे** – एक प्रकार का फल, जो बदाम जैसा होता है, **इत्तफाक** – संयोग, **निवृत्त** – विरक्त, **अरदली**– नौकर, **मोढा** – माचा, बेत का बना आसन, **बावरचीखाने** – रसोई घर, **अलबत्ता** – निस्संदेह, **कश्मकश** – असमंजस, **वाकिफ** – जानना, **गोया** – जैसे, मानों, **निहायत** – बहुत अधिक, **गिरह** – गाँठ, **पलीद** – बिगाड़ना, **कैफियत** –वर्णन, **मुमकिन** – संभव, **तकल्लुक** – शिष्टाचार, **गरिष्ठ** – खाद्य पदार्थ जो देर से पचता है, **नियामतें** – ईश्वर प्रदत्त वैभव।

अभ्यास

पाठ से

1. बिंदो कौन है? चचा छक्कन ने उससे कौन–कौन से कार्य करवाए?
2. चचा छक्कन घर पर अकेले क्यों रह गए थे ?
3. इमली का प्रयोग चचा ने किस कार्य के लिए किया?
4. फलवाले ने 'या बेईमानी, तेरा ही आसरा' क्यों कहां?
5. क्रिकेट देखने का मौका किसे मिलता था और क्यों?
6. चचा छक्कन ने एक दर्जन केले खाते वक्त कौन–कौन से बहाने बनाए?
7. चचा छक्कन ने डिब्बा बंद समान के बारे में क्या कहा ?
8. देशी चीजों और विदेशी चीजों के विषय में चचा के क्या ख्याल हैं?

पाठ से आगे

1. घर के अभिभावक बच्चों को फुसलाने के लिए कई तरह के बहाने बनाते है। अपने साथियों के सहयोग से उन बहानों को सूचीबद्ध कीजिए।
2. फल वाले ने दोबारा दाम कम करके फल क्यों बेच दिया? अपने विचार लिखिए।
3. बच्चे जब घर लौटकर आए होंगे तब बिंदो ने केले खरीदे जाने की घटना को बताया होगा। बच्चों की क्या प्रतिक्रिया हुई होगी? चचा छक्कन ने क्या जबाव दिया होगा? साथियों से चर्चा करके लिखिए।

44PISV

4. चचा छक्कन ने एक बार केले के दाम ठहरा लिए लेकिन बाद में बदल गए। उनका इस तरह का व्यवहार उचित था या अनुचित? कारण देते हुए अपना उत्तर लिखिए।
5. लेखक ने तकल्लुफ में तकलीफ–ही–तकलीफ बताई है। आप लेखक के इस विचार से कहाँ तक सहमत हैं?
6. 'इच्छा के बिना कोई चीज खाई जाए तो शरीर को उसका लाभ नहीं मिलता आप इस बात से कहाँ तक सहमत/असहमत हैं? तर्क द्वारा स्पष्ट करें।
7. आजकल लोगों में देशी वस्तुओं की अपेक्षा विदेशी वस्तुओं के प्रति ज्यादा रुझान देखा जा रहा है। ऐसी प्रवृत्ति कहाँ तक उचित है? इससे देश को होने वाले फायदे–नुकसान पर अपना तर्क दें।
8. अक्सर तीज–त्यौहार जैसे अवसरों पर घरों में तरह–तरह के पकवान आदि भोज्य पदार्थ बनते हैं, जो गरिष्ठ होते हैं। उन्हें खाकर बदहजमी हो जाती है। आपके साथ भी ऐसा हुआ होगा। अपना ऐसा ही कोई अनुभव लिखिए।

भाषा से

1. वाक्य संरचना को समझने के लिए निम्नलिखित उदाहरणों को देखिए –
   - बिंदो उठकर चार केले ले आया।
   - जी चाहे आज खाएँ, आज जी न चाहे, कल खाएँ।
   - बिंदो केले अंदर रख आया और बावरचीखाने से राख लाकर बरतन माजने लगा।

   पहले वाक्य में एक क्रिया अथवा एक ही विधेय है। उसे सरल या साधारण वाक्य कहते हैं। दूसरे वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य है और एक आश्रित या सहायक उपवाक्य है। यह संपूर्ण वाक्य एक मिश्र वाक्य है। तीसरे वाक्य में दो वाक्य हैं जो 'और' शब्द से जुड़े हैं तथा दोनों स्वतंत्र वाक्य हैं। इसे संयुक्त वाक्य कहते हैं, पाठ से इस प्रकार के दो–दो वाक्यों को चुनकर लिखिए।
2. मदरसा, तरकीब, आसरा, हिफ़ाज़त जैसे विदेशज् शब्द (वे शब्द जो विदेशी भाषाओं से आकर हिन्दी भाषा में प्रयुक्त होने लगे हैं) के अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए?
3. अल्प विराम (,) - लिखते समय जहाँ थोड़ी देर रूकना पड़ता है। वहाँ प्रयोग किया जाता है।
   पूर्ण विराम (।) – लिखते समय जहाँ ज्यादा देर के लिए रुकना होता है। वहाँ प्रयोग किया जाता है।
   प्रश्न वाचक (?)– अगर लिखित स्वरुप में प्रश्न पूछा जाए तो वहाँ प्रयुक्त होता है। अब आप इन तीनों के उदाहरण पाठ में खोजिए।
4. **निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित शब्दों के स्थान पर विदेशी शब्दों का प्रयोग करके वाक्य बनाएँ –**

   क. औपचारिकता दिखाने की ज़रूरत नहीं, इसे अपना घर समझिए।

ख. एक मामूली बात पर दोनों भाइयों में बहुत देर तक खींचातानी होती रही ।
ग. हमारा छोटा भाई इतना बातूनी है कि ज़रा देर चुप नहीं बैठ सकता ।
घ. आज तो आप मुझे संयोग से यहाँ मिल गए ।
ङ. मैंने तो आपकी अनुपस्थिति में आराम से बैठकर खाना खाया ।
च. अपने शरीर की स्वयं सुरक्षा करनी चाहिए ।

5. निम्नलिखित शब्दों का इस प्रकार वाक्यों में प्रयोग कीजिए जिससे उनके अर्थ में अंतर स्पष्ट हो जाए –
नियत/नीयत, लोटा/लौटा, चित्त/चिति

6. क. निम्नलिखित शब्दों और मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए –
ठिकाने लगाना, हवाला देना, नीयत में खोट आना, नस–नस से वाकिफ़ होना, काया पलट होना, मिट्टी पलीत होना, अकारथ चली जाना, ज़बान से फिर जाना।

7. 'अभिमान' शब्द की रचना समझिए । 'मान' शब्द में 'अभि' उपसर्ग जोड़कर यह शब्द बना है ।
ख. आप भी 'अभि'' उपसर्ग जोड़कर दो शब्द बनाइए और उनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।
ग. ऐसे दो शब्द लिखिए जिनमें 'अनु' उपसर्ग लगा हो ।

8. भूतकाल की चार क्रियाओं में वाक्य–रचना कीजिए जिनमें कर्ता के साथ 'ने' विभक्ति चिह्न का प्रयोग हुआ हो ।

योग्यता विस्तार

1. हिन्दी साहित्य में विभिन्न विधाएँ है जैसे कहानी, कविता, निबंध, एकांकी इत्यादि। ऐसी ही एक विधा है 'व्यंग्य'। आप अपने शिक्षक के सहयोग से व्यंग्य रचनाओं को पढ़िए।
2. चचा छक्कन की अन्य कारगुजारियों के संबंध में लेखक ने कई अन्य मनोरंजक विवरण लिखे हैं। शिक्षक की मदद से उन्हें खोजकर पढ़िए।
3. इमली किन–किन कामों में उपयोग आती है। जानकारी प्राप्त कीजिए।
4. उन विदेशी वस्तुओं की सूची बनाएँ जो इन दिनों बहुतायत में घरों अथवा लोगों के पास देखी जा सकती है।

458AH6

ikB & 17

नीति के दोहे

–तुलसी/रहीम/कबीर

नीति के इन दोहों में मीठी वाणी, मुखिया के महत्व, संतोष रूपी धन की महत्ता, परोपकार, कुसंगति का प्रभाव, समय तथा छोटी वस्तुओं की उपयोगिता और 'अति' के दुष्परिणामों को उभारा गया है एवं व्यावहारिक उदाहरणों के माध्यम से जीवन मूल्यों पर बल दिया गया है।

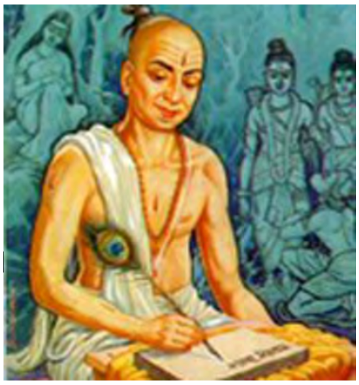

तुलसी मीठे बचन तें, सुख उपजत चहुँ ओर।
बसीकरण यह मंत्र है, परिहरि बचन कठोर ॥

मुखिया मुख सो चाहिए, खान–पान को एक।
पालै–पोसै सकल अँग, तुलसी सहित बिबेक ।

आवत हिय हरषै नहीं, नैनन नहीं सनेह ।
तुलसी तहाँ न जाइए, कंचन बरसैं मेह ॥

तुलसी संत सुअंब तरु, फूलि–फलहिं पर हेत ।
इतते ये पाहन हनत, उतते वे फल देत ॥

तुलसी

तरुवर फल नहिं खात हैं, सरबर पियहिं न पान।
कहि रहीम परकाज हित, संपति संचहिं सुजान ॥

रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि।
जहाँ काम आवै सुई, कहाँ करै तलवारि ॥

जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
चंदन बिष व्यापै नहीं, लिपटे रहत भुजंग ॥

रहिमन निज मन की ब्यथा, मनहीं राखौ गोय।
सुनि इठलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहै कोय ॥

रहीम

काल करै सो आज कर, आज करै सो अब ।
पल में परलय होयगी, बहुरि करेगा कब ।।

माला तौ कर में फिरै, जीभ फिरै मुख माँहि ।
मनुआ तो चहुँ दिसि फिरै, यह तो सुमिरन नाहिं ।।

अति का भला न बोलना, अति की भली न चूप ।
अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप ।।

दुरलभ मानुष जनम है, देइ न बारंबार ।
तरुबर तैं पत्ता झड़ै, बहुरि न लागै डार ।।

कबीर

शब्दार्थ :– **उपजत** – उत्पन्न होना, **परिहरि** –त्याग करना, परित्याग, **कंचन** –सोना, **मेह**–बादल, **सुअंब** – मीठे आम के पेड़, **पाहन** – पत्थर, **हनत** – मारना, **सरबर** – तलाब, सरोवर, **संचाहि** –इकट्ठा करना, **सुजान** – ज्ञानी, **उत्तम** – बहुत अच्छा, **भुजंग** – सर्प, **व्यथा** – पीड़ा, दर्द, **परलय** – प्रलय, **बहुरि**–पुनः (फिर), **सुमिरन** – याद करना (भजन)।

अभ्यास

पाठ से

1. आम के पेड़ और संत में क्या समानता है?
2. परोपकार के महत्व को रहीम ने किस प्रकार समझाया है?
3. 'उत्तम प्रकृति वाले व्यक्ति कुसंगति से प्रभावित नहीं होते हैं।' इसे समझाइए।
4. 'मनुष्य देह नाशवान है।' इस कथन को कबीर ने कैसे सिद्ध किया है।
5. 'भले लोग हमेशा दूसरों के लिए ही कार्य करते हैं।' रहीम जी ने इस बात को किस तरह समझाया है?
6. मानव के रूप में जन्म को दुर्लभ क्यों बताया गया है?
7. तुलसी ने मीठे वचन को वशीकरण का मंत्र क्यों कहा है?
8. तुलसी के अनुसार हमें कैसे स्थान पर नहीं जाना चाहिए?
9. आज का काम कल पर क्यों नहीं टालना चाहिए?
10. निम्नलिखित दोहों के अर्थ स्पष्ट कीजिए –

    क. तुलसी संत सुअंब तरु, फूलि–फलहिं पर हेत।
    इतते ये पाहन हनत, उतते वे फल देत।।

    ख. जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
    चंदन विष व्यापै नहीं, लिपटे रहत भुजंग।।

पाठ से आगे

45R2ZG

1. 'अपने मन की व्यथा दूसरों को भी बतानी चाहिए या अपने मन में ही रखनी चाहिए।' अपने विचार कारण सहित लिखिए।
2. तुलसीदास जी के अनुसार 'मुखिया को मुख के समान होना चाहिए।' आपके अनुसार घर के मुखिया में कौन–कौन से गुण होने चाहिए और क्यों?
3. हमें बोलते या बातचीत करते समय किन बातों/चीजों का ध्यान रखना चाहिए।

भाषा से

1. नीचे वाक्यों के कुछ जोड़े दिए गए हैं। उन्हें देखिए –

45ZY24

(i) **हम आप से कहे थे।**
(ii) **हमने आप से कहा था।**

(i) **एक फूल की माला दो।**
(ii) **फूलों की एक माला दो।**

(i) **मैं गर्म गाय का दूध पीता हूँ।**
(ii) **मैं गाय का गर्म दूध पीता हूँ।**

यहाँ हर जोड़े के पहले वाक्य में अशुद्धि है, जिसे सुधार कर दूसरे वाक्य में लिखा गया है। जानकारी के आभाव में वाक्य रचना में कई प्रकार की अशुद्धियाँ आ सकती हैं। ये अशुद्धियाँ वचन, लिंग, विभक्ति, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, मुहावरे, क्रिया विशेषण, पदक्रम, पुनरूक्ति तथा शब्दों से संबंधित हो सकती हैं। नीचे कुछ अशुद्ध वाक्य दिए जा रहे हैं। उनमें अशुद्धि को पहचानिए और शुद्ध कर के लिखिए–

(1) उसने अनेकों ग्रथ लिखे।
(2) वह धीमी स्वर में बोला।
(3) मैं यह काम नहीं किया हूँ।
(4) में रविवार के दिन जाऊँगा।
(5) गीता आई और कहा।
(6) वह श्याम पर बरस गया।
(7) उसे भारी दुख हुआ।
(8) मैं दर्शन देना आया था।
(9) इस क्षेत्र में सर्वस्व शांति है।
(10) मैनें ग्रहकार्य नहीं किया है।
(11) वह बेफिजूल की बातें करता है।
(12) यहाँ नहीं रूको।

2. इन वाक्यों को देखिए –

(i) 'तीर' एक **अस्त्र** है।
(ii) तलवार एक **शस्त्र** है।
(ii) 'बाईबिल' एक **ग्रंथ** है।
(ii) हिन्दी की **पुस्तक** दो।

शब्दों के इन जोड़ों में रेखांकित शब्द एक समान अर्थ देने वाले माने जाते हैं परंतु वास्तव में उनके अर्थ

और प्रयोग में सूक्ष्म अंतर होता है। ऐसे शब्दों को 'सूक्ष्म अर्थभेदी शब्द कहते हैं। इस प्रकार के शब्द समानार्थी प्रतीत होते हुए भी भिन्न अर्थ प्रगट करते हैं। नीचे कुछ सूक्ष्म अर्थ–भेदी शब्दों के जोड़े दिए गए है। आप उनका वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि उनमें अंतर स्पष्ट हो जाए–

(1) अनिवार्य	– आवश्यक	(2) गहरा	– घना
(3) आज्ञा	– आदेश	(4) प्रणाम	– नमस्कार
(5) कठिन	– कठोर	(6) वध	– हत्या
(9) अमूल्य	– बहुमूल्य	(10) छाया	– परछाई

3. 1. हमने कल कबड्डी खेला।

2. हम कबड्डी खेल रहे हैं।

3. हम कबड्डी खेलेंगे।

उपर्युक्त वाक्यों में 'खेला', खेल रहे हैं' और 'खेलेंगे' तीनों क्रियाएँ हैं जो अलग–अलग समय में कार्य के होने का बोध करवा रही हैं। क्रिया का वह रूप जिससे उसके होने या करने के समय का पता चले, काल कहलाता है। काल के तीन भेद हैं–

1. भूतकाल :– क्रिया बीते समय में हुए कार्य का बोध कराती है। (उदा. हमने पाठ पढ़ लिया था।)
2. वर्तमान :– क्रिया वर्तमान में चल रहे कार्य का बोध कराती है। (उदा. हम पाठ पढ़ रहे हैं।)
3. भविष्य :– क्रिया भविष्य में होने वाले कार्य का बोध कराती है। (उदा. हम पाठ पढ़ेंगे।)

नीचे दिए गए वाक्यों का काल पहचान कर लिखिए –

1. शायद चोर पकड़ा जाए।
2. पुजारी पूजा करता है।
3. मोहन आया।
4. वह देखता है।
5. रीता रो रही थी।
6. दीपक अखबार बेचेगा।
7. मै पढ़ रहा हूँ।
8. वह आए तो मैं जाऊँ।
9. मैं अभी सोकर उठी हूँ।
10. किसान बाजार जा रहा होगा।
11. वह पढ़ता होगा।
12. बस छूट गयी होगी।
13. यदि वर्षा होती तो छतरी बिकती।
14. संभव है कि वह लौटा हो।
15. महादेवी जी ने संस्मरण लिखे।

4. **निम्नलिखित के दो–दो पर्यायवाची शब्द लिखिए –**

साँप, सोना, पेड़, सरोवर, तलवार।

5. **नीचे लिखे शब्दों के तत्सम रूप लिखिए –**

   सनेह/ मेह/ धूरि/ रतन/ तरवारि/ परलय/ दुरलभ/ जनम/ हरष।

6. **निम्नलिखित शब्दों के विरूद्धार्थी शब्द लिखिए –**

   कठोर, विवेक, हर्ष, संतोष, हित, परमार्थ, लघु।

योग्यता विस्तार

1. **कक्षा में अध्यापक के मार्गदर्शन में दोहा अंत्याक्षरी का आयोजन कीजिए।**
2. कबीर दास जी, अब्दुर्रहीम खानखाना तथा गोस्वामी तुलसीदास का जीवन परिचय खोज कर पढ़िए।
3. सूरदास और रसखान की कुछ रचनाओं को खोजकर कक्षा में सुनाइए।
4. मीठी वाणी एवं सत्संगति के महत्व से संबंधित दोहों का संकलन कीजिए।

469U3R

ikB 18

हमर कतका सुंदर गाँव

–प्यारेलाल गुप्त

ये कविता म कवि ह गाँव के सुघरइ के बरनन करे हें। हमर गाँव ह लछमी माता के पाँव सहीं सुग्घर हे। लीपे–पोते घर–दुवार हे,कोठार म पहार सहीं खरही गँजाय हे। तरिया म पक्का घाट बने हे,खेत म पिंयर–पिंयर सरसों फूले हे अउ गाँव के जम्मो मनखे मन आपस म राजी–खुसी से रहिथें।

अइसने भाव कवि ह ये कविता म परगट करे हें।

हमर कतका सुंदर गाँव,
जइसे लछिमी जी के पाँव।
घर उज्जर लीपे – पोते ,
जेला देख हवेली रोथे ।
सुग्घर चिकनाये भुइयाँ ,
चाहे भात परुस लय गुंइयाँ ।
अँगना मा तुलसी घरुवा ,
कोठा मा बइला गरुवा।
लकठा मा कोलाबारी,
जहँ बोथन साग–तरकारी।
ये हर अनपूरना के ठाँव।

बहिर मा खातू के गड्ढा,
जहँ गोबर होथे एकट्ठा।
धरती ला रसा पियाथे,
ओला पीके अन उपजाथे।
ल देखा हमर कोठार,
जहँ खरही के गंजे पहार।
गये हे गाड़ा बरछा,
जेखर लकठा मा हवे मदरसा।
जहँ नित कुटें, नित खायँ।।

जहाँ पक्का घाट बँधाये,
चला–चला तरइया नहाये।
ओ हो, करिया सफ्फा जल,
जहँ फूले हे लाल कँवल।
लकठा मा हय अमरइया,
बनबोइर अउर मकैया।
फूले हय सरसों पिंवरा,
जइसे नवा बहू के लुगरा
जहँ घाम लगे न छाँव।

आपस मा होथन राजी,
जहँ नइये मुकदमाबाजी।
भेदभाव नइ जानन,
ऊँच – नीच नइ मानन।
दुख–सुख मा एक हो जाथी,
जइसे एक दिया दू बाती।
जहँ छल–कपट न दुराँव,
हमर कतका सुंदर गाँव।।

छत्तीसगढ़ी शब्द मन के हिन्दी अर्थ

उज्जर	=	उज्जवल,स्वच्छ	हवेली	=	महल
परुस लय	=	परोस लें	गुइयाँ	=	साथी, सखी
कोठा	=	गौशाला	गरुवा	=	गाय–बैल आदि जानवर
लकठा	=	नजदीक,पास	कोलाबारी	=	बाड़ी
खातू	=	खाद	कोठार	=	खलिहान
खरही	=	कटी हुई फसल की ढेरी	बरछा	=	गन्ने का खेत
लुगरा	=	साड़ी	दुराँव	=	किसी से बात छिपाकर रखने का भाव
तुलसी घरुवा	=	तुलसी का चबूतरा, तुलसी चौंरा			

अभ्यास

पाठ से

- कवि ह गाँव मन ल लछिमी जी के पाँव काबर कहे हावय?
- गाँव के घर मन ल देख के हवेली काबर दुःखी होथे?

- अनपूरना के ठाँव कहाँ हवय?
- धरती ह कइसे किसम ल अन्न उपजाथे?
- कोठा मा का–का जिनिस रखे जाथे?
- ''जइसे एक दिया दू बाती'' पंक्ति म कवि ह का बतावत हवय?
- कवि ह नवा बहू के लुगरा ल सरसों के फूल के संग तुलना काबर करे हवय।
- अँगना में तुलसी–चौरा लगाय के का कारण होही?

पाठ से आगे

1. 'अपन गाँव ह सब झन ला सुघ्घर लागथे'। ये कहावत हवय। तुमन ल अपन गाँव कोन कारण से सुघ्घवर लागथे? सुघरई के बरनन दस वाक्य म लिखव।

2. गाँव के मनखे मन आपस म मिलजुल के रहिथे अऊ बड़े–बड़े कारज ल घलो कर लेथे। वोमा सब झन के सहयोग रहिथे। अइसने कोई काम के उदाहरण अपन घर के बड़े मन ले पता लगाके लिखव।

4HWYKY

भाषा से

1. ''हमर कतका सुंदर गाँव'' कविता में आये वाक्य सुंदर गाँव की तुलना लछिमी जी के पाँव ले करे गेहे।

जौन ला उपमा कहिथे। हिन्दी में एला समता या तुलना घलो कहे जाथे।

'' जिहाँ दुठन व्यक्ति, समान, गुण, धर्म, स्वरूप असन विशेषता के आधार पर बरोबर दिखथे, उही ह उपमा अलंकार होथे। उपर में दे वाक्य के जइसन पाठ में आये उपमा अलंकार के उदाहरण ल छाँटके लिखव।

4I6UHL

2. खाल्हे लिखाय वाक्य ल ध्यान से पढ़व ''मे हा कलिकुन रायपुर गे रहे हँव'' ये वाक्य ह काम के होये के बोध करावथे जौन ल **भूतकाल** कहिथे। अऊ 'मे हा जावत हँव', 'में हा खात हव, ''में हा नहावत हँव,।' सबे वाक्य म काम होवत हे बताय गेहे। ए पाय के ये ह वर्तमान काल के वाक्य आय। अइसने किसम ल ''मे कालि जाहू, 'खाहूँ', 'नहाहूँ' आदि शब्द मन ह भविष्य काल के बोध कराथें।

उपर दे उदाहरण के आधार ले पाठ ले भूतकाल, वर्तमान काल अऊ भविष्य काल के वाक्य खोज के लिखव।

योग्यता विस्तार

1. गाँव ल साफ सुथरा रखे बर तुँहर का–का योगदान होही? ओला लिखव।
2. हमर कतका सुंदर गाँव जइसन अऊ दूसर पाठ ल शिक्षक के सहायता ले पढ़व।

4IFQP9

4IPLQH

ikB & 19

हार की जीत

—श्री सुदर्शन

'हार की जीत' श्री सुदर्शन द्वारा रचित एक कहानी है जिसमें लेखक ने बाबा भारती के चरित्र का ऐसा आदर्श प्रस्तुत किया है, जो श्रेष्ठ मानवीय गुणों से युक्त है। डाकू खड्ग सिंह के छल–कपट को जानकर भी बाबा भारती का उस अपाहिज बने खड्ग सिंह से यह कहना कि 'मेरी प्रार्थना केवल यह है कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना, लोगों को यदि इस घटना का पता लग गया तो वे किसी गरीब पर विश्वास न करेंगे, उसके (खड्ग सिंह के) हृदय को झकझोर देता है। बाबा भारती के इस पवित्र और उच्च विचार को सुनकर उसका हृदय परिवर्तित हो जाता है। यही इस कहानी का उद्देश्य है। सुदर्शन जी की यह कहानी मील का पत्थर बनी हुई है।

माँ को अपने बेटे और किसान को अपने लहलहाते खेत देखकर जो आनंद आता है, वही आनंद बाबा भारती को अपना घोड़ा देखकर आता था। वह घोड़ा सुंदर था, बड़ा बलवान था। बाबा भारती उसे 'सुल्तान' कहकर पुकारते, अपने हाथ से खरहरा करते, खुद दाना खिलाते और देख–देख प्रसन्न होते थे । आप गाँव से बाहर छोटे–से मंदिर में रहते थे और भगवान का भजन करते थे। सुल्तान के बिना जीना उनके लिए बहुत ही कठिन था।

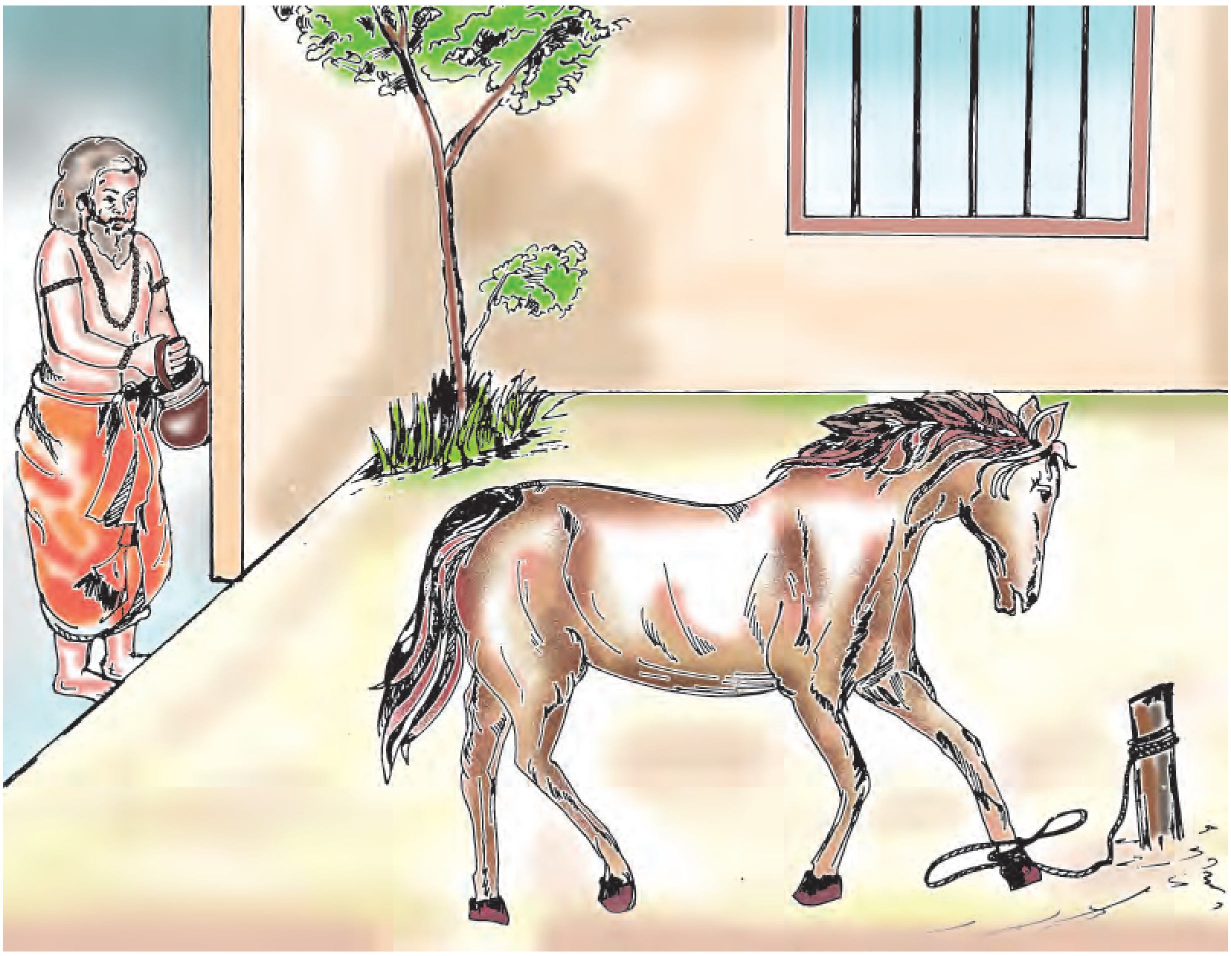

खड्गसिंह उस इलाके का कुख्यात डाकू था । लोग उसका नाम सुनकर काँपते थे। होते-होते सुल्तान की कीर्ति उसके कानों तक भी पहुँची । उसका मन उसे देखने केलिए अधीर हो उठा । वह एक दिन दोपहर के समय बाबा भारती के पास जा पहुँचा और नमस्कार करके बैठ गया ।

'कहो, इधर कैसे आ गए ?'

'सुल्तान की चाह खींच लाई ।'

'विचित्र जानवर है । देखोगे तो प्रसन्न हो जाओगे ।'

'मैंने भी बड़ी प्रशंसा सुनी है ।'

'उसकी चाल तुम्हारा मन मोह लेगी ।'

'कहते हैं, देखने में भी बड़ा सुंदर है ।'

'क्या कहना ! जो उसे एक बार देख लेता है, उसके हृदय पर उसकी छवि अंकित हो जाती है ।'

'इच्छा तो बहुत दिनों से थी, लेकिन आज आ सका ।'

बाबा भारती और खड्गसिंह अस्तबल में पहुँचे । बाबा ने घोड़ा दिखाया घमंड से और खड्गसिंह ने घोड़ा देखा आश्चर्य से । वह कुछ देर तक चुपचाप खड़ा रहा । उसके हृदय में हलचल होने लगी । बालकों की-सी अधीरता से बोला-''बाबा, इसकी चाल न देखी, तो क्या देखा ?''

बाबा जी भी मनुष्य ही थे । अपनी वस्तु की प्रशंसा दूसरे के मुख से सुनने के लिए उनका हृदय अधीर हो गया । घोड़े को खोलकर बाहर ले गए । घोड़ा वायु-वेग से उड़ने लगा। उसकी चाल देखकर खड्गसिंह के हृदय पर साँप लोट गया । वह डाकू था और जो वस्तु उसे पसंद आ जाए, उस पर वह अपना अधिकार समझता था । जाते-जाते उसने कहा -''बाबा जी, मैं यह घोड़ा आपके पास न रहने दूँगा ।''

बाब भारती डर गए । अब उन्हें रात को नींद न आती । सारी रात अस्तबल की रखवाली में कटने लगी । प्रतिक्षण खड्गसिंह का भय लगा रहता । परंतु कई मास बीत गए और वह न आया। यहाँ तक कि बाबा भारती कुछ असावधान हो गए और इस भय को स्वप्न के भय की नाईं मिथ्या समझने लगे ।

संध्या का समय था । बाबा भारती सुल्तान की पीठ पर सवार होकर घूमने जा रहे थे। सहसा एक ओर से आवाज़ आई -''ओ बाबा, इस कँगले की सुनते जाना ।''

आवाज़ में करुणा थी । बाबा ने घोड़े को रोक लिया । देखा, एक अपाहिज वृक्ष की छाया में पड़ा कराह रहा है । बोले - ''क्यों, तुम्हें क्या कष्ट है ?''

अपाहिज ने हाथ जोड़कर कहा - ''बाबा, मैं दुखिया हूँ । मुझ पर दया कीजिए, रामवाला यहाँ से तीन मील दूर है, मुझे वहाँ जाना है । घोड़े पर चढ़ा लो, परमात्मा भला करेगा ।''

''वहाँ तुम्हारा कौन है ?''

''दुर्गादत्त वैद्य का नाम आपने सुना होगा । मैं उनका सौतेला भाई हूँ ।''

बाबा भारती ने घोड़े से उतरकर अपाहिज को घोड़े पर सवार किया और स्वयं उसकी लगाम पकड़कर धीरे-धीरे चलने लगे ।

सहसा उन्हें एक झटका-सा लगा और लगाम हाथ से छूट गई । उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा,जब उन्होंने देखा कि अपाहिज घोड़े की पीठ पर तनकर बैठा है और घोड़े को दौड़ाए लिए जा रहा है । वह खड्गसिंह था ।

बाबा भारती कुछ देर तक चुप रहे और इसके पश्चात् कुछ निश्चय करके पूरे बल से चिल्लाकर बोले – ''ज़रा ठहर जाओ।''

खड्गसिंह ने यह आवाज़ सुनकर घोड़ा रोक दिया और उसकी गर्दन पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा–''बाबा जी, यह घोड़ा अब न दूँगा।''

''परंतु एक बात सुनते जाओ।'' खड्गसिंह ठहर गया। बाबा भारती ने निकट जाकर उसकी ओर ऐसी आँखों से देखा, जैसे बकरा कसाई की ओर देखता है और कहा – ''यह घोड़ा तुम्हारा हो चुका। मैं तुमसे इसे वापस करने के लिए न कहूँगा, परंतु खड्गसिंह केवल एक प्रार्थना करता हूँ। इसे अस्वीकार न करना, नहीं तो मेरा दिल टूट जाएगा।''

''बाबा जी, आज्ञा कीजिए। मैं आपका दास हूँ, केवल यह घोड़ा न दूँगा।''

''अब घोड़े का नाम न लो। मैं तुमसे इसके विषय में कुछ न कहूँगा। मेरी प्रार्थना केवल यह है कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना।''

खड्गसिंह का मुँह आश्चर्य से खुला रह गया। उसका विचार था कि उसे घोड़े को लेकर यहाँ से भागना पड़ेगा, परन्तु बाबा भारती ने स्वयं उससे कहा – ''इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना।'' इससे क्या प्रयोजन सिद्ध हो सकता है ? खड्गसिंह ने बहुत सोचा, सिर मारा, परंतु कुछ समझ न सका। हारकर उसने अपनी आँखें बाबा भारती के मुख पर गड़ा दीं और पूछा, ''बाबा जी, इसमें आपको क्या डर है ?''

सुनकर बाबा भारती ने उत्तर दिया – ''लोगों को यदि इस घटना का पता चल गया, तो वे किसी गरीब पर विश्वास न करेंगे ।''

यह कहते–कहते उन्होंने सुल्तान की ओर से इस तरह मुँह मोड़ लिया जैसे उनका उससे कभी कोई संबंध ही न रहा हो ।

बाबा भारती चले गए, परंतु उनके शब्द खड्गसिंह के कानों में उसी प्रकार गूँज रहे थे। सोचता था – कैसे ऊँचे विचार हैं, कैसा पवित्र भाव है ? इन्हें इस घोड़े से प्रेम था, इसे देखकर उनका मुख फूल की नाईं खिल जाता था। कहते थे – 'इसके बिना मैं रह न सकूँगा ।' इसकी रखवाली में वे कई रात सोए नहीं, भजन–भक्ति न कर रखवाली करते रहे । परन्तु आज उनके मुख पर दुख की रेखा तक न दिखाई पड़ती थी । उन्हें केवल यह ख्याल था कि कहीं लोग गरीबों पर विश्वास करना न छोड़ दें । ऐसा मनुष्य, मनुष्य नहीं, देवता है ।

रात्रि के अंधकार में खड्गसिंह बाबा भारती के मंदिर में पहुँचा। चारों ओर सन्नाटा था। आकाश में तारे टिमटिमा रहे थे। थोड़ी दूर पर गाँव के कुत्ते भौंक रहे थे। मंदिर के अंदर कोई शब्द सुनाई न देता था। खड्गसिंह सुल्तान की बाग पकड़े हुए था। वह धीरे–धीरे अस्तबल के फाटक पर पहुँचा। फाटक खुला पड़ा था। किसी समय बाबा भारती स्वयं लाठी लेकर पहरा देते थे, परन्तु आज उन्हें किसी चोरी, किसी डाके का भय न था। खड्गसिंह ने आगे बढ़कर सुल्तान को उसके स्थान पर बाँध दिया और बाहर निकलकर सावधानी से फाटक बंद कर दिया। इस समय उसकी आँखों में नेकी के आँसू थे।

रात्रि का तीसरा पहर बीत चुका था। चौथा पहर आरम्भ होते ही बाबा भारती ने अपनी कुटिया से बाहर निकल ठंडे जल से स्नान किया। उसके पश्चात् इस प्रकार, जैसे कोई स्वप्न में चल रहा हो, उनके पाँव अस्तबल की ओर बढ़े, परंतु फाटक पर पहुँचकर उनको अपनी भूल प्रतीत हुई, साथ ही घोर निराशा ने पाँवों को मन–मनभर का भारी बना दिया। वे वहीं रुक गए। घोड़े ने अपने स्वामी के पाँवों की चाप को पहचान लिया। वह ज़ोर से हिनहिनाया।

अब बाबा भारती आश्चर्य और प्रसन्नता से दौड़ते अंदर घुसे और अपने प्यारे घोड़े के गले से लिपटकर इस प्रकार रोने लगे मानो कोई पिता बहुत दिनों से बिछुड़े हुए पुत्र से मिल रहा हो। बार–बार उसके मुँह पर थपकियाँ देते।

फिर वे संतोष से बोले – ''अब कोई गरीबों की सहायता से मुँह न मोड़ेगा।''

शब्दार्थ – खरहरा – लकड़ी की कंधी, **अधीर** – व्याकुल, **अंकित** – निशान, **प्रयोजन** – उद्‌देश्य।

अभ्यास

पाठ से

1. सुल्तान कौन था?
2. खड्ग सिंह कौन था? लोग उससे क्यों डरते थे?
3. बाबा भारती को अपना घोड़ा देखकर किस प्रकार का आनन्द आता था?
4. बाबा भारती का सुल्तान के प्रति किस प्रकार का प्रेम था?
5. खड्ग सिंह सुल्तान को क्यों देखना चाहता था?

6. बाबा भारती ने खड़्ग सिंह से सुल्तान के किन गुणों का बखान किया?
7. 'बाबा, इसकी चाल न देखी, तो क्या देखा'? खड़्ग सिंह ने ऐसा क्यों कहा?
8. सुल्तान को प्राप्त करने के लिए डाकू खड़्ग सिंह ने क्या चाल चली?
9. बाबा भारती के किस कथन को सुनकर डाकू खड़्ग सिंह का हृदय–परिवर्तन हुआ?
10. ''अब कोई गरीबों की सहायता से मुँह न मोड़ेगा।'' बाबा भारती ने ऐसा कब और क्यों कहा?
11. **निम्नांकित कथन किसने, किससे, कब कहे ?**
    - **क. ''सुल्तान की चाह खींच लाई ।''**
    - **ख. ''उसकी चाल तुम्हारा मन मोह लेगी ।''**
    - **ग. ''बाबा, मैं दुखिया हूँ, मुझ पर दया कीजिए ।''**
    - **घ. ''इसके बिना मैं रह न सकूँगा ।''**

पाठ से आगे

4IYHSJ

1. बाबा भारती ने खड़्ग सिंह से घटना के बारे में किसी से न कहने को क्यों कहा होगा? विचार कर लिखिए।
2. बाबा भारती का सुल्तान के साथ पिता–पुत्र की तरह रिश्ता था। वैसे ही माँ–बेटे का भी रिश्ता होता है। अगर पुत्र माँ से अलग हो जाये, तो माँ की मनः स्थिति कैसी होती होगी। अपनी माँ से चर्चा कर लिखिए।
3. ''हार की जीत'' कहानी को पढ़ने के बाद, क्या आप किसी गरीब की सहायता करेंगे? कक्षा में चर्चा कर लिखिए।
4. इस कहानी में हार कर भी कौन जीता और जीतकर भी कौन हारा और क्यों कारण सहित लिखिए।

भाषा से

1. हार की जीत पाठ में 'अस्तबल' 'आस्तिक' आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है। घोड़ा बाँधने का स्थान 'अस्तबल' तथा जो ईश्वर पर विश्वास करता हो, 'आस्तिक' कहलाता है। ठीक इसी तरह अब आप निम्न वाक्यांशो के लिए एक–एक शब्द बनाइये –
   1. घोड़े पर सवारी करने वाला।
   2. प्रशंसा करने वाला।
   3. पहरा देने वाला।

4J8DU7

2. इन्हें भी समझिए–

(क) योजक चिह्न (–) का प्रयोग दो शब्दों को जोड़ने के लिए होता है। उदा. – भजन–पूजन (दोनों शब्द योजक चिह्न से मिलकर पूर्ण पद बनाते हैं।

(ख) विपरीतार्थ शब्दों के बीच जैसे– बुराई–भलाई, भले–बुरे, ऊँच–नीच।

ग. जब दो शब्दों में एक सार्थक और दूसरा निरर्थक हो, जैसे— रोटी—मोटी, अनाप—शनाप।

घ. दो क्रियाओं के बीच — जैसे—मिलना—जुलना, पढ़ना—लिखना।

ङ. एक ही संज्ञा दो बार प्रयोग हो— जैसे— द्वार—द्वार, नगर—नगर, बात—बात आदि।

ऐसे ही पाठ में आए योजक चिह्न लगे शब्दों को छाँटकर लिखिए।

3. 'अग्र का पश्च', 'आकाश का पाताल' विलोम है। जिसका अर्थ है विपरीत अर्थ वाला या उल्टे क्रम से उत्पन्न। किसी शब्द का विपरीत अर्थ वाला शब्द विलोम शब्द कहलाता है।

सुंदर, पसंद, मिथ्या, भला, विश्वास, सावधानी, रोना जैसे (पाठ में आए) शब्दों के विलोम शब्द लिखिये।

4. पाठ में प्रसन्नता शब्द आया है जो कि भाव वाचक संज्ञा है यह शब्द प्रसन्न विशेषण में 'ता' प्रत्यय लगाने से बना है अर्थात् खुश होने का भाव। इस प्रकार 'ता' प्रत्यय का प्रयोग करते हुए दस भाववाचक संज्ञा बनाइये।

5. **निम्नांकित वाक्यों को निर्देशानुसार बदलिए ।**

क. घोड़ा सुंदर था । (वर्तमान काल)

ख. खड्ग सिंह इस इलाके का कुख्यात डाकू था। (वर्तमान काल)

ग. वहाँ तुम्हारा कौन है ? (भूत काल)

घ. घोड़ा हिनहिना रहा होगा। (वर्तमान काल)

ङ. मैंने भी प्रशंसा सुनी है । (भूत काल)

6. **निम्नलिखित वाक्यों में उचित स्थान पर विराम चिह्न लगाइए ।**

क. कामायनी की कथा संक्षेप में लिखिए

ख. किशोर भारती का प्रकाशन हर महीने होता है

ग. आप कहाँ से आ रहे हैं

घ. आपकी शक्ल आपके बड़े भाई से मिलती जुलती है

ङ. जीवन में हारना जीतना तो लगा ही रहता है

7. **निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और रिक्त स्थानों की पूर्ति नीचे दिए गए शब्दों की सहायता से कीजिए–**

बाबा भारती एक छोटे–से मंदिर .... रहते थे । सुल्तान नामक घोड़े .... वे बहुत चाहते थे । उसी क्षेत्र में खड्गसिंह .... रहता था । वह घोड़ा देखने के लिए बाबा .... के पास पहुँचा । उसने बाबा भारती से .... –''मैं यह घोड़ा आपके पास नहीं .... दूँगा ।'' बाबा भारती इस धमकी से .... रहने लगे । छह महीने बीत गए .... खड्गसिंह नहीं आया । एक दिन .... घोड़े पर सवार .... जा रहे थे । रास्ते में एक .... के नीचे एक अपाहिज पड़ा था । .... बाबा से विनती की, ''मैं अपाहिज .... । मुझे रामवाला गाँव जाना है । कृपया .... घोड़े पर चढ़ा लें ।'' उन्होंने अपाहिज को घोड़े पर चढ़ा .... और स्वयं उसकी लगाम पकड़कर चलने .... । अचानक उन्हें

झटका लगा। सवार घोड़े .... भगाए लिए जा रहा था। वह .... था। उन्होंने उसे रोककर कहा, ''घोड़ा .... हो गया। लेकिन इस बात की .... किसी से नहीं करना।'' बाबा भारती .... मंदिर पर वापस आ गए। खड्गसिंह .... कथन पर विचार करता रहा। उसका .... परिवर्तन हो गया। रात्रि के अंधकार .... वह घोड़े को अस्तबल में लाकर बाँध ....। सुबह बाबा भारती स्नान करने ....। उनके कदम स्वतः अस्तबल की ओर ....। अस्तबल पर पहुँचकर उन्हें अपनी गलती ... हुई। घोड़े .... अपने स्वामी की पदचाप पहचान ली। .... हिनहिनाया। बाबा भारती दौड़कर अस्तबल में .... और जाकर घोड़े से लिपट गए। .... मुँह से निकल पड़ा, ''अब कोई ...की सहायता से मुँह नहीं मोड़ेगा।'' (चर्चा/बाबा जी/चले/उनके/महसूस/लेकिन/में/डाकू/होकर/पेड़/मुझे/गरीबों/हृदय/गया/वह/में/को/चिंतित/उसने/हूँ/तुम्हारा/खड्गसिंह/लिया/लगे/गए/कहा/रहने/ने/में/को/भारती/अपने/बढ़े।)

योग्यता विस्तार

1. मनुष्य और पशु के बीच प्रेम को पाठ में प्रमुखता से दिया गया है। शिक्षक की सहायता से ऐसे अन्य पाठ ढूँढकर पढ़िए जिसमें पशु प्रेम की कहानियाँ हों। जैसे – महादेवी वर्मा की कहानी गौरा, गिल्लू।
2. इस कहानी में बाबा भारती और खड्ग सिंह के बीच जो वार्तालाप हुआ, उसका कक्षा में अभिनय कीजिए।
3. गौतम बुद्ध के साथ बातचीत में अंगुलिमल का हृदय परिवर्तन हुआ था। यह कहानी खोजकर पढ़िए।
4. इस कहानी को संक्षेप में कक्षा में सुनाइए।

ikB & 20

हाना

4JR5XH

–लेखक मंडल

छत्तीसगढ़ लोक साहित्य के ढोली–ढाबा आय। साहित्य दू प्रकार के होथे–लिखे साहित्य अउ मुँहअँखरा साहित्य। मुँहअँखरा साहित्य ल लोक–साहित्य कहिथें। लोककथा, लोकगीत, लोकगाथा, जनौला, हाना ये जम्मो लोक–साहित्य आय, जेन ह लोक कंठ म मुँहअँखरा हवय।

हाना ल हिंदी म लोकोक्ति कहिथें। लोकोक्ति के मतलब हे लोक + उक्ति,माने लोक–मानस द्वारा कोनो घटना ल लेके कहे गै बात। इही लोकोक्ति ल छत्तीसगढ़ी म हाना कहिथें। हाना म लोक जीवन के अनुभव समाय रहिथे। हाना ह ज्ञान के भंडार आय। कोनो समस्या ल सुलझाय बर हाना ह बड़ काम के होथे। हमन देखथन के पढ़े – लिखे ले जादा गाँव के रहइया अप्पढ़ मनखे के गोठ–बात म खूबेच प्रभाव होथे, ओकर कारन आय हाना।

हाना ह सिखावन,अचार–बिचार,नीति–नियम के दरपन आय। एकर प्रयोग ले बोलइया के भाषा अउ भाव म चमत्कार के संगे–संग सुग्घर प्रभाव पैदा होथे अउ सुनइया ह घलो जल्दी प्रभावित होथे। कइसनो भी हाना होय,ओ ह कोनो–न–कोनो घटना ले जुड़े रहिथे। जइसे –

मही माँगे ल जाय,ठेकवा लुकाय।

सियान मन बताथें के एक झन माइलोगन ह परोस म मही माँगे ल जावय फेर का करय, बिचारी ह संकोच के मारे ठेकवा ल लुका लय। ये–ला घर के सियनहा ह देख डरिस अउ ओकर मुँह ले निकल परिस–मही माँगे ल जाय, ठेकवा लुकाय। अइसने एक ठन अउ हाना हे–

अध–जल गगरी, छलकत जाय ।

हमन देखथन के जेन गगरी ह आधा भरे रहिथे,ओ ला बोह के रेंगबे त ओ ह बहुतेच छलकथे। ये हमर रोज के अनुभव आय। अइसने देखे जाथे के जेखर ज्ञान ह कम रहिथे ओ ह अब्बड़ बोलथे। जीवन के कतेक सुग्घर अनुभव येमा समाय हे। हाना म ज्ञान के भंडार रहिथे। एला बोलइया अउ सुनइया ह समझ सकत हे।

हाना हमर छत्तीसगढ़ी भाषा के सिंगार आय। जेकर ले भाषा के सुघरइ,मिठास अउ प्रभाव बढ़थे। छत्तीसगढ़ी लोकसाहित्य म कतको हाना मुँहअँखरा बगरे हवय,जेन ल हमन बोल–चाल के भाषा म बउरथन।

छत्तीसगढ़ी हाना के गजब अकन विशेषता हे। जइसे नान्हेपन,लय,तुक के मिलान,सरलता, सहजता अउ मनोरंजन । जइसे –

धीर म खीर ।

साँच ल का आँच ।

उन के दून ।

ये हाना मन भले नान – नान दिखत हवँय, फेर, ईंकर प्रभाव लोक–जीवन म भारी देखउल देथे। कतकोन हाना तो कविता बरोबर लगथें। जइसे –

कलेवा में लाड़ू, नता में साढ़ू ।
जाँगर चले न जँगरोटा ।
खाय बर गहूँ के रोटा ।।

हाना ह बड़ सहज अउ सरल होथे। येला बोले – गोठियाय म कउनो अड़चन नइ होवय। सरलता ह एकर विशेषता ये।

खाय बर जरी, बताय बर बरी ।
मन म आन, मुँह म आन ।

छत्तीसगढ़ी म हाना ल कोनो–कोनो जघा भाँजरा कहे जाथे। हाना ल कहावत अउ लोकोक्ति घलो कहिथें। कुल मिलाके येला हाना कहव के भाँजरा कहव,येला कहावत कहव के लोकोक्ति,एकेच बात आय।

अर्थ के अधार म हाना ल खाल्हे लिखाय ढंग ले बाँटे जा सकत हे –

1. ठउर संबंधी हाना – हर गाँव,शहर,नगर ठउर के अपन विशेषता होथे। ओकर अलगे चिन्हारी होथे। उहाँ के रहन–सहन के अधार म ओ ठऊर के गुन–अवगुन होथे।उही गुन–अवगुन के अधार म हाना के चलन देखे ल मिलथे । जइसे –

छुईखदान के बस्ती,जय गोपाल के सस्ती ।

छुईखदान के राजा ह बैरागी रहिस अउ वो ह कृष्ण भगवान के भगत रहिस। उहाँ के रहइया मन आज ले आपस म 'जय गोपाल' कहिके जोहारथें। कहे के मतलब, जेन चीज जिंहा जादा होथे ओ ह सस्ती अउ प्रचलित हो जथे।

रात भर गाड़ी जोते,कुकदा के कुकदा ।

अररभाँठा कुकदा गाँव जिहाँ कोनो गाड़ी वाले ह रातकन गाड़ी फाँदिस। गाड़ी ह रात भर भाँठा म घूमत रहिगे। एकर अर्थ हे के बिना सोचे–समझे मिहनत करे ले फल नइ मिलय।

2. खेती संबंधी हाना – छत्तीसगढ़ म 80 प्रतिशत मनखे गाँव म रहिथें। इहाँ के प्रमुख काम खेती आय। छत्तीसगढ़ कृषि प्रधान क्षेत्र आय। एला 'धान के कटोरा' घलो कहे जाथे। छत्तीसगढ़ी हाना म खेती–किसानी के गोठ–बात ह घलो समाय हे। जइसे –

महतारी के परसे अउ मघा के बरसे ।

महतारी के भोजन परसे ले जइसे लइका मन अघाथें,वइसने मघा नक्षत्र के बरसा ले खेत–खार मन अघाथें।

कोरे गाँथे बेटी अउ नींदे–कोड़े खेती।

मतलब हे,जइसे मूड़ी कोरे बेटी ह सुग्घर दिखथे,वइसने नींदे–कोड़े खेती सुग्घर दिखथे अउ जादा उपज देथे।

3. पशु–पक्षी संबंधी हाना– पशु–पक्षी मन मनखे के संगवारी आय, तेकरे सेती ईंकर गुन अवगुन ह घलो हाना के विषय बन गे हे । जइसे –

दुधियारिन गाय के लात मीठ।

जेकर से हम–ला काम रहिथे ओकर गुस्सा अउ मार ह घलो सुहाथे। एक ठन हाना हे

सींका के टूटती अउ बिलई के झपटती।

मतलब हे संजोग से कोई काम बन जाना।

4. प्रकृति संबंधी हाना – लोक–जीवन प्रकृति ले जुड़े रहिथे अउ प्रकृति ह लोक ले। तेकरे सेती प्रकृति उपर घलो कोरी–कोरी हाना हे। जइसे –

संझा के पानी, बिहनिया के झगरा।

कोनो दिन जब संझा बेरा झड़ी शुरू हो जाथे त रात भर बंद नइ होवय, ठँउका वइसने जेन घर म बिहनिया बेरा झगरा शुरू हो जाथे त थमे ल नइ धरय ।

हपटे बन के पथरा, फोरे घर के सील।

ये हाना के मतलब हे के दूसर के गुस्सा ल दूसर उपर उतारना।

5. अंग संबंधी हाना – मनखे के अंग संबंधी हाना घलो लोक–जीवन म सुने ल मिलथे। जइसे–

मूड़ के राहत ले,माड़ी म पागा नइ बँधाय।

एकर मतलब ये हे के सियान के रहत ले लइका के सियानी नइ चलय।

मूड़ ले बड़े पागा।

एकर मतलब हे कोनो जिनिस के महात्तम ल जरूरत ले जादा बताना।

6. घर–परिवार संबंधी हाना – हाना के विषय विविध हे। जेन म घर–परिवार,नता–रिश्ता के गोठ घलो समाय रथे । जइसे –

हँड़िया के मुँह ल परई म तोपे,
मनखे के मुँह ल कामा ।

एकर सोज–सोज अर्थ हे,हर मनखे बोले बर सुतंत्र हे,निंदा करइया ल कोन रोक सकत हे।

चलनी म दूध दूहय,करम ल दोस देय।

एकर मतलब हे अंते–तंते के काम करना अउ अपन करम ल दोस देना।

7. नीति संबंधी हाना – जिनगी म नीति–नियम के बड़ महात्तम हे,ये नीति–नियम ह लोक–जीवन म देखे बर मिलथे। नीति संबंधी हाना ह जिनगी बर उपदेश के काम करथे। जइसे –

रिस खाय बुध, बुध खाय परान।

माने गुस्सा करे म बुद्धि सिरा जाथे अउ जब बुद्धि सिरा जाथे त मनखे परान ल घलो गँवा डारथे।

बोंय सोन जामय नहीं, मोती लुरे न डार,
गै समय बहुरय नहीं, खोजे मिले न उधार।

ये हाना म कतका सुग्घर नीति के गोठ लुकाय हे। सोन ल बो देबे त वो जामय नहीं,मोती ह कोनो डारा म फरय नहीं। माने, मनखे ल कुछू पाना हे त ओला मेहनत करना जरूरी हे। वइसने जेन समय ह नहक जाथे तेन ह लहुट के नइ आवय। न कोनो मेर खोजे म मिलय,न कहूँ उधार मिलय। कहे के मतलब हे के समय बड़ कीमती हे,हमला समय के बने उपयोग करना चाही। छत्तीसगढ़ी साहित्य म अतकेच नहीं,हाना के अउ कतकोन किसम हे। जइसे जात संबंधी हाना, समाज संबंधी हाना, धन–सिक्का संबंधी हाना, हाँसी–ठिठोली के हाना। एला हम ला अपन भाषा–व्यवहार म बऊरना चाही।

छत्तीसगढ़ी शब्द मन के हिन्दी अर्थ

हाना	=	लोकोक्ति	मुँहअँखरा	=	मौखिक
अप्पढ़	=	अनपढ़	ठेकवा	=	मिट्टी का बर्तन
माइलोगन	=	औरत	सुघ्घर	=	सुंदर
गजब अकन	=	बहुत सारा	कलेवा	=	व्यंजन
जरी	=	एक प्रकार की भाजी , जिसकी जड़ें भी खाई जाती है	आन	=	दूसरा
			ठउर	=	जगह
			मघा	=	एक नक्षत्र
कोरी	=	बीस की संख्या	संझा	=	शाम
माड़ी	=	घुटना	पागा	=	पगड़ी
सोझ	=	सीधा	अंते–अंते	=	इधर–उधर
रिस	=	गुस्सा	लहुटके	=	लौटकर
अतकेच	=	इतना ही	बऊरना	=	प्रयोग करना

अभ्यास

पाठ से

क – साहित्य के प्रकार के होथे ?

ख – हिन्दी म हाना ल का कहिथे ?

ग – हाना के प्रयोग ले भाषा म का–का प्रभाव पैदा होथे ?

घ – 'अधजल गगरी,छलकत जाय' के का अर्थ हे ?

ङ – छत्तीसगढ़ी म हाना ल अउ का नाव ले जाने जाथे ?

च – विषय, भाव अउ –अर्थ के अधार म हाना ल के भाग म बाँटे जा सकत हे?

पाठ से आगे

1. हाना के परयोग वाक्य में नई रहितीस त वाक्य में का कमी लगतीस बिचार कर लिखव।
2. ये पाठ से बाहिर कोनो जगह हाना सुने होहु तेला सकेल के (दस ठन) लिखव।
3. पाठ में दिहे छत्तीसगढ़ी हाना के हिन्दी लोकोक्ति अपन गुरुजी ला पूछ के लिखव।
4. खाल्हे लिखाय हाना के भाव ला लिखव –

   अ – दुधियारिन गाय के लात मीठ।

   ब – कोरे गाँथे बेटी अउ नींदे कोड़े खेती।

   स – रिस खाय बुध,बुध खाय परान।
5. 'जाँगर चले न जँगरोटा,खाय बर गहूँ के रोटा' हाना ल वाक्य में परयोग करहु तेला बिचार करके लिखव।

4K11Z5

भाषा से

1. क – ''दुहना'' क्रिया आय। इही ढंग के पाठ म आय तीन ठन क्रिया शब्द ल खोजव अउ अपन वाक्य म परयोग करव।

   ख – खाल्हे लिखाय शब्द मन म 'ना' प्रत्यय जोड़ के नवा शब्द बनावव अउ वाक्य म परयोग करव –

   लहुट, तँउर, बऊर, बहुर ।

2. खाल्हे लिखाय शब्द मन के दो–दो ठन हिन्दी पर्यायवाची शब्द लिखव –

   मनखे, अप्पढ़, हाना, गुस्सा।

3. खाल्हे लिखाय शब्द मन के उल्टा अर्थ वाला शब्द लिखव –

   सियान, संगवारी, नान–नान, बिहनिया।

   - हाना के हमर जिनगी म का महत्व हे ?
     ये विषय उपर दस वाक्य म अपन बिचार लिखव ।

4K9X1S

योग्यता विस्तार

- ये पाठ म हाना ल जिनगी बर उपयोगी बताय गेहे। एखर ले हमर तन–मन निरमल बने रहिथे अउ चाल–चलन में सुधार घलो आथे। सहीच म हाना ले जीवन ल सुग्घर बनाय जा सकत हे। अपन बातचीत म अपन क्षेत्र म प्रचलित हाना के प्रयोग करव ।

4KIT3F

- ये पाठ म आय जम्मो हाना ल याद करव।

टीप :– पाठ म बहुत अकन हिंदी के शब्द ल जइसने के तइसने ले ले गे हे, जइसे – प्रभाव, विशेषता, अनुभव, भाषा आदि। आने पाठ म घलो कतकों, हिंदी अउ आन भाषा के शब्द मिलही। जउन–जउन जघा मानक शब्द मिलही उहाँ ठहर के थोरकीन सोचहू। एकर छत्तीसगढ़ी म कइसन उच्चारण अउ लिपि बनही।

ikB 21

छत्तीसगढ़ का दर्शन

– लेखकगण

भारत का हृदय स्थल छत्तीसगढ़ अपनी प्राकृतिक संपदाओं और लोक-संस्कृति से समृद्ध है । 'धान का कटोरा' कहे जानेवाले इस अंचल की चेतना विकासोन्मुखी रही है । आर्य और अनार्य संस्कृतियों का संगम-स्थल होने के कारण इस क्षेत्र की ऐतिहासिक गरिमा में अभिवृद्धि होती रही । बहुमूल्य प्राकृतिक संपदाओं, खनिज पदार्थों और विशिष्ट लोक संस्कृतियों ने इस राज्य को एक विशेष स्थान दे दिया है । छत्तीसगढ़ की कला एवं सांस्कृतिक वैभव की एक संक्षिप्त झाँकी प्रस्तुत निबंध में पढ़िए ।

भारत के क्षितिज पर छत्तीसगढ़ 'धान का कटोरा', 'दक्षिण-कौशल', 'दण्डकारण्य' आदि विविध नामों से अपने ऐतिहासिक और सांस्कृतिक गौरव के साथ जगमगाता रहा है । इस वनाच्छादित क्षेत्र को महानदी, इंद्रावती, शिवनाथ, हसदो इत्यादि नदियाँ अपनी जलधारा से सिंचित करती हैं ।1 नवम्बर, 2000 को एक पूर्ण नए राज्य के रूप में अस्तित्व में आया छत्तीसगढ़ आज विकास की ओर अग्रसर है। 1,35,191 वर्ग किलोमीटर में फैले इस राज्य की सीमाएँ उड़ीसा,उत्तरप्रदेश, झारखंड, आंध्रप्रदेश, महाराष्ट्र तेलांगना और मध्यप्रदेश से मिलती हैं । सन् 2001 की जनगणना के अनुसार यहाँ की जनसंख्या 2,07,95,956 एवं साक्षरता का प्रतिशत 65.18 है ।

छत्तीसगढ़ की गौरवशाली और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत क्षेत्रीय राजवंशों की कला और संस्कृति से जुड़ी हुई है। कलचुरी कालीन भारत की प्राचीन सांस्कृतिक परम्परा का प्रभाव यहाँ के सांस्कृतिक व सामाजिक जनजीवन पर दिखाई पड़ता है ।

प्राचीन काल से ही छत्तीसगढ़ धार्मिक गतिविधियों का केन्द्र रहा है । अंबिकापुर का मैनपाट, जिसे छत्तीसगढ़ का पचमढ़ी कहा जाता है, बिलासपुर रतनपुर का महामाया देवी मंदिर, जाँजगीर शिवरीनारायण का लक्ष्मीनारायण मंदिर और राजनाँदगाँव डोंगरगढ़ का बम्लेश्वरी देवी का मंदिर प्राचीन काल से आस्था और संस्कृति के केन्द्र रहे हैं । यहाँ के लोगों की धर्म में अटूट आस्था है । यहाँ हिन्दू, मुस्लिम,सिख, ईसाई आदि सभी धर्मों के लोग निवास करते हैं । शिव, विष्णु, दुर्गा आदि देवी-देवताओं के मंदिर भी यहाँ विद्यमान हैं । वैष्णव, शैव, शक्ति तथा विविध पंथों के धर्मावलंबियों की यहाँ प्रमुखता है ।

कबीरपंथ को अपनाने वाले कबीरपंथी कहलाए । रायपुर जिले के दामाखेड़ा एवं कबीरधाम ग्राम में कबीरपंथियों की प्रसिद्ध गद्दी है। दामाखेड़ा कबीरपंथ अनुयायियों को विशेष प्रकार की शिक्षा संस्कार देने का केन्द्र है । मठ का प्रधान गुरु और आचार्य होता है ।मठ की व्यवस्था के लिए दीवान, कोठारी, भंडारी, पुजारी होते हैं। कबीरपंथी आंतरिक शुद्धता, पवित्रता और सदाचरण को महत्व देते हैं । इस पंथ में गुरु का स्थान विशेष रहता है ।

कबीरपंथ की तरह यहाँ एक और पंथ का विकास हुआ । इसे 'सतनाम पंथ' कहा जाता है । 'सतनामी' का अर्थ है सत्यनाम को माननेवाला और उसके अनुसार आचरण करनेवाला । 'सतनामपंथ' सत्य और पवित्रता को महत्व देता है । 'सतनामपंथ' के प्रवर्त्तक 'गुरु घासीदास जी' माने जाते हैं जिनकी जन्मभूमि एवं तपोभूमि गिरौधपुरी ग्राम है । इन्होंने भी कबीर की तरह मूर्तिपूजा, जाति प्रथा का विरोध किया । इस पंथ के प्रमुख सिद्धांतों में सतनाम पर विश्वास, मूर्तिपूजा का खंडन, जातिभेद का बहिष्कार, मांस-मदिरा का निषेध विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं ।

छत्तीसगढ़ लोककला और संस्कृति की दृष्टि से अत्यंत ही समृद्ध रहा है । यहाँ का लोकजीवन उसकी संस्कृति में ही थिरकता है । यहाँ की लोकसंस्कृति में संगीत के साथ-साथ लोकगीतों और लोकनृत्यों का भी काफी महत्व है । लोकगीतों की कुछ झलक निम्नलिखित पंक्तियों में परिलक्षित हो रही हैं-

ददा मोर कहिथे कुआँ म धसि जाहूँ ,
बबा कथे लेतेंव बैराग ।
काबर ददा तें कुआँ में धसि जाबे ,
काबर बबा लेबे राग ।
बालक सुअना कस तुंहर दुलौरिन ,
झटकुन लेहु बुलाय ।

आल्हा केवल उत्तरप्रदेश में ही नहीं गाया जाता छत्तीसगढ़ में भी आल्हा गायन का खूब प्रचलन है। चौमास में यहाँ-वहाँ शहरी और ग्रामीण लोग आल्हा गाते दिखाई-सुनाई पड़ेंगे । महिलाएँ सावन में पेड़ के नीचे जाकर झूला-झूलती हैं, आनंदित होती हैं, ददरिया और भोजली सुनाती हैं ।

राखी और तीजा के त्यौहार के समय बहनें अपने भाइयों से मिलने के लिए व्याकुल रहती हैं। भाई, बहन को संदेश भेजता है कि तुम संशय(शंका) मत करना । चिंता भी मत करना । मैं तीजा की रोटियाँ लेकर, तुझे लेने आऊँगा । निम्नलिखित पंक्तियों में ये भाव कितने मार्मिक शब्दों में व्यक्त हुए हैं -

संसो तैं झन करिबे, फिकर तैं झन करिबे,
तीजा के रोटी धरिके, तोला लेबर आहूँ ओ ।

उक्त गीतों के अतिरिक्त छत्तीसगढ़ में करमा, सुआ, पंथी, डंडा, पंडवानी, राऊत नाचा, ददरिया आदि गीत

नृत्य के साथ गाए जाते हैं । छत्तीसगढ़ में संस्कार गीत, अनुष्ठान गीत, ऋतु गीत तथा धार्मिक पर्वों पर गाए जानेवाले गीतों की भी बहुलता है । पंडवानी अर्थात् पांडवों की कथा यहाँ की अमूल्य धरोहर है । छत्तीसगढ़ में फागुन महीने में लोग नगाड़ा बजाकर होली के गीत गाते और एक–दूसरे को रंग–गुलाल लगाते हैं, वहीं दूसरी ओर गाँव की रास–मंडलियाँ राधा–कृष्ण और ग्वाल–बाल का रूप धारण करके माँदर के ताल के साथ नाचते–गाते थिरकते हैं । छत्तीसगढ़ के प्रमुख लोक–वाद्यों में माँदर, ढोलक, नगाड़ा, चिकारा, मोहरी, सींगबाजा प्रमुख हैं ।

छत्तीसगढ़ की भाषा छत्तीसगढ़ी है जो पूर्वी हिन्दी की उपभाषा है । यह सरस और प्रवाहमयी तो है ही, साथ ही ब्रजभाषा की तरह मधुर भी है । यहाँ की 85% जनता यही भाषा बोलती है । इसके अतिरिक्त हिन्दी और उड़िया भाषाएँ भी यहाँ प्रचलित हैं । विभिन्न बोलियों के अन्तर्गत लरिया, सादरी, कुडुक, उराँव, सरगुजिया, गौंडी, हल्बी आदि जनमानस पर अधिकार किए हुए हैं ।

छत्तीसगढ़ में साहित्य का भी काफी महत्वपूर्ण स्थान है । हिन्दी काव्य, निबंध, कहानी आदि विधाओं में छत्तीसगढ़ के साहित्यकारों का विशेष योगदान रहा है । लोचन प्रसाद पांडेय, मुकुटधर पांडेय, माधव राव सप्रे, गजानन माधव मुक्तिबोध, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, हरि ठाकुर, सुंदरलाल शर्मा, नारायण लाल परमार, जगन्नाथ प्रसाद 'भानु', द्वारिका प्रसाद तिवारी 'विप्र', श्रीकांत वर्मा, लाला जगदलपुरी, पं. रामदयाल तिवारी, बाबू प्यारे लाल गुप्ता, पं. केदारनाथ ठाकुर इत्यादि ऐसे नाम हैं जिनकी कृतियों से हिन्दी और छत्तीसगढ़ी साहित्य की श्री वृद्धि हुई है।

स्थापत्य कला की दृष्टि से भी छत्तीसगढ़ का अपना वैभवपूर्ण व गौरवपूर्ण इतिहास रहा है। छत्तीसगढ़ के प्राचीन मंदिर, दुर्ग, शिलालेख, राजमहल इत्यादि यहाँ की स्थापत्य कला के अनुपम उदाहरण हैं। यहाँ के प्राचीन मंदिरों का निर्माण गुप्तकाल और कलचुरीकाल में हुआ है।

प्राचीन मंदिरों में राजिम स्थित राजीवलोचन मंदिर अत्यंत प्रसिद्ध है। मुख्य मंदिर विस्तृत आकार के बीच में ऊँची कुर्सी पर खड़ा है और उसके चारों ओर चार छोटे मंदिर बनाए गए हैं। गर्भगृह में भगवान विष्णु की एक चतुर्भुज प्रतिमा है। उनके हाथों में शंख, चक्र, गदा और पद्म ये चार आयुध हैं। यही प्रतिमा राजीवलोचन के नाम से प्रसिद्ध है। सिरपुर में स्थित लक्ष्मण मंदिर स्थापत्य कला की दृष्टि से छत्तीसगढ़ की धरोहर है । इसका निर्माण पांडुवंश के राज्यकाल में हुआ । कहा जाता है कि राजा शिवगुप्त की राजमाता वासटा द्वारा अपने पति की स्मृति में यह मंदिर बनवाया गया था। गर्भगृह का प्रवेश द्वार पाषाण से तथा ऊपर का शिखर पूर्णरूपेण ईंटों से बना है।

बस्तर के बारसूर में शिव जी का एक मंदिर है। यह मंदिर बत्तीस खंभों पर स्थित है। इन खंभों पर सुंदर नक्काशी की गई है। खंभों पर नाग और विभिन्न देवी–देवताओं की प्रतिमाएँ उत्कीर्ण की गई हैं। बस्तर के कुटुमसर की गुफाएँ, चित्रकोट का जल–प्रपात और दंतेश्वरी देवी का मंदिर दर्शनीय हैं। कवर्धा से लगभग 16 किलोमीटर दूर जंगल में भोरमदेव का मंदिर है जो छत्तीसगढ़ का खजुराहो के नाम से विख्यात है। इस मंदिर की कला उत्कृष्ट है। मंदिर के बाहरी भाग में विभिन्न मूर्तियाँ निर्मित हैं, उनमें अंगों की भाव–भंगिमा इस प्रकार की है कि उन्हें देखकर लोग चकित और विस्मित रह जाते हैं। मुख्य द्वार के समक्ष शिवलिंग इस बात को प्रमाणित करता है कि नागवंशी शिव के उपासक थे।

छत्तीसगढ़ की लोक–संस्कृति में तीज और पर्वों की रंग–रँगीली धारा रची–बसी है । लोक–आस्थाओं और लोक–विश्वासों से जुड़े हुए इन त्यौहारों में सर्वाधिक लोकप्रिय त्यौहार हैं–तीजा, पोरा, हरेली, अक्ती इत्यादि। तीजा त्यौहार के सिलसिले में छत्तीसगढ़ के लोग अपनी बहिन व बेटियों को उनकी ससुराल से मायके लिवा लाते हैं। इस

त्यौहार में सुहागिन स्त्रियाँ ब्रह्ममुहूर्त में उठकर विधि-विधान से भगवान शिव और पार्वती की पूजा अपने पति की दीर्घायु के लिए करती हैं। इस दिन वे अन्न, फल, दूध और जल ग्रहण नहीं करतीं अर्थात् निर्जला व्रत रखती हैं । कुँवारी कन्याएँ भी श्रेष्ठ वर की कामना से यह व्रत रखती हैं । पोला त्यौहार के दिन खेती में काम आनेवाले बैलों की पूजा होती है । हरेली के दिन हल (नागर) की पूजा की जाती है । अक्ती के दिन मिट्टी के बने गुड्डे-गुड़ियों का विवाह किया जाता है । इस दिन को विवाह के लिए अत्यंत शुभ तिथि मानते हैं । विवाह, गौना जैसे मांगलिक कार्य आज के दिन से आरंभ हो जाते हैं ।

एक नवोदित राज्य होने के कारण छत्तीसगढ़ के विकास की अनंत संभावनाएँ हैं। छत्तीसगढ़ का प्राकृतिक वैभव एवं उसकी सांस्कृतिक धरोहर सचमुच ही अनूठी है। छत्तीसगढ़ की इस माटी का शृंगार हम सभी को मिलकर करना है। समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर किसी समृद्ध समाज की पहली पहचान है। छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक विरासत यह सिद्ध करती है कि हमारा राज्य सदियों से हर क्षेत्र में समृद्ध रहा है। हमारा दायित्व है कि हम अपनी इस अमूल्य धरोहर को अक्षुण्ण बनाए रखें। यह तभी संभव होगा जब समाज के लोग शिक्षित हों। हमें अपने राज्य की आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और प्राकृतिक संपदा पर गर्व है।

अभ्यास

पाठ से

1. छत्तीसगढ़ के और क्या-क्या नाम हैं ?
2. कबीरपंथी किन्हें कहते हैं ? इनके मठों का प्रमुख कौन होता है ?
3. सतनाम का अर्थ स्पष्ट करते हुए इसके प्रमुख सिद्धातों को लिखिए।
4. बारसूर के शिवमंदिर की विशेषताएँ लिखिए।
5. छत्तीसगढ़ के साहित्य में जिनका योगदान है, उन लेखकों, कवियों के नाम लिखिए ।
6. छत्तीसगढ़ को आर्य और अनार्य संस्कृतियों का संगम स्थल कहा गया है । क्यों ?
7. विभिन्न राज्यों की सीमा से लगने वाले छत्तीसगढ़ राज्य के जिलों के नाम लिखिए।

पाठ से आगे

1. 'छत्तीसगढ़ का लोक जीवन उसकी संस्कृति में ही थिरकता है।' इस कथन को अपने अनुभव के आधार पर स्पष्ट करें।
2. छत्तीसगढ़ में मनाये जाने वाले तीज त्योहारों के विषय में घर के बड़े बुजर्गो से पूछकर लिखिए एवं यह भी लिखिए कि उस अवसर पर क्या—क्या होता है।
3. छत्तीसगढ़ को 'धान का कटोरा' कहा जाता है ऐसा कहे जाने के पीछे क्या कारण है? विचार कर लिखिए।

4L2K6Q

भाषा से

1. दो या दो से अधिक पदों का मेल समास कहलाता है । ये मुख्यतः छह प्रकार के हैं- अव्ययी भाव समास, बहुब्रीहि समास, तत्पुरुष समास, कर्मधारय समास, द्वंद्व समास और द्विगु समास।

जैसे– रामभक्त	–	राम का भक्त (तत्पुरुष समास)
रातदिन	–	रात और दिन (द्वंद्व समास)
नवरात्रि	–	नव रात्रियों का समूह (द्विगु समास)
यथाशक्ति	–	शक्ति के अनुसार (अव्ययीभाव समास)
नीलकमल	–	नीला कमल (कर्मधारय समास)
लंबोदर	–	लंबा है उदर जिसका अर्थात् गणेश (बहुब्रीहि समास)

निम्नलिखित शब्दों का समास–विग्रह कर, समास का नाम लिखिए –

राजपुत्र, दाल–रोटी, पंचवटी, दशानन, भरपेट।

2. **निम्नलिखित शब्दों का** संधि–विच्छेद कीजिए –

देशाभिमान, प्रेमानुराग, रमेश, कक्षानुशासन, सूर्योदय, गिरीश, धर्मावलंबी।

3. निम्नलिखित वाक्यों में 'काल' स्पष्ट कीजिए –
   (i) भगवान विष्णु की एक चतुर्भुज प्रतिमा है ।
   (ii) प्राचीन मंदिरों का निर्माण कलचुरीकाल में हुआ था ।
   (iii) विकास की संभावनाएँ भविष्य में भी होंगी ।
   (iv) गर्भगृह के प्रवेश द्वार के सामने शिवलिंग है ।
   (v) छत्तीसगढ़ की प्राकृतिक समृद्धि दिखाई दे रही है ।
4. छत्तीसगढ़ के तीज–त्यौहारों का संक्षिप्त परिचय लिखिए।
5. (छत्तीसगढ़ में विकास की संभावनाएं) विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

योग्यता विस्तार

1. छत्तीसगढ़ी बोली के कहावतों का संकलन कीजिए एवं उनके अर्थ को शिक्षक के सहयोग से समझिए।
2. छत्तीसगढ़ में स्त्रियाँ (गाँव की) कौन–कौन–से आभूषण पहनती हैं। उनके चित्र एकत्र कीजिए एवं नाम भी लिखिए।
3. छत्तीसगढ़ में बोली जाने वाली बोलियों की क्षेत्र के आधार पर सूची तैयार कीजिए।

4XFTHA

4XPPNX